Biyani's Think Tank

Concept based notes

History Teaching

B. Ed.

Mr. Manish Saini
Ms.Raju Pansari

Deptt. of Education

Biyani Girls B.Ed. College, Jaipur

Preface

I am glad to present this book, especially designed to serve the needs of the students. The book has been written keeping in mind the general weakness in understanding the fundamental concepts of the topics. The book is self-explanatory and adopts the "Teach Yourself" style. It is based on question-answer pattern. The language of book is quite easy and understandable based on scientific approach.

Any further improvement in the contents of the book by making corrections, omission and inclusion is keen to be achieved based on suggestions from the readers for which the author shall be obliged.

I acknowledge special thanks to Mr. Rajeev Biyani, *Chairman* & Dr. Sanjay Biyani, *Director* (*Acad.*) Biyani Group of Colleges, who are the backbones and main concept provider and also have been constant source of motivation throughout this Endeavour. They played an active role in coordinating the various stages of this Endeavour and spearheaded the publishing work.

I look forward to receiving valuable suggestions from professors of various educational institutions, other faculty members and students for improvement of the quality of the book. The reader may feel free to send in their comments and suggestions to the under mentioned address.

Author

Syllabus

UNIT 1-Nature and scope of the subject

- Meaning nature and scope of history
- Importance of teaching history
- Aims and Objectives of teaching History at different levels. History in the context of National Integration of International brotherhood and global citizenship.
- Co-relation of History with other school subjects.

UNIT II-Curriculum and Planning

-Meaning and concept of curriculum
-Fundamental principles of formulating curriculum in History and critical appraisals of the existing syllabus.
-Lesson plan-Annual plan, Unitplan and Daily lesson plan of teaching History.
-Qualities and professional growth of History teacher, his role in future prospective.

UNIT III-Methods and Approaches

-Various methods of teaching History (Story Telling, Biographical, Dramatization time sense, source, project and supervised study method)

UNIT IV-Instructional Support System.

-Audio Visual aids in teaching History
-Text book,teacher, co-curricular activities.
-Community Resources:Computer, T.V.
-History room
-Planning of historical excursion.
-Co-curricular activities

UNIT V-Evaluation

Concept and purpose of evaluation
Objectives based evaluation
Tools and techniques of evaluation in history teaching

i. Various types of question
ii. Blue print
iii. Content analysis.

Unit-I

Nature and Scope of the Subject

Multiple Choice Questions

प्रश्न–1 निम्नलिखित परिभाषा किस इतिहास की है– ''इतिहास घटनाओं या विचारों की उन्नति का सुसम्बद्ध वितरण है।''

(अ) प्रो. घाटे की (ब) मेटलेण्ड की

(स) रेपसन की (द) हेनरी जॉनसन की (स)

प्रश्न–2 ''केवल एक इतिहास है– मानव का इतिहास।'' यह कथन किसका है?

(अ) जवाहरलाल नेहरू का (ब) डॉ. अरविन्द घोष का

(स) रविन्द्रनाथ टैगोर का (द) स्वामी विवेकानन्द का (स)

प्रश्न–3 ''उद्धेश्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है, जो विद्यालय द्वारा पद प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।'' यह कथन है–

(अ) के. पी. चौधरी का (ब) कार्टर बी. गुड का

(स) वी. डी. भाटिया का (द) डीवी का (ब)

प्रश्न–4 इतिहास में सृजनात्मक शिक्षण का उद्धेश्य है–

(अ) बोध (ब) ज्ञान

(स) संश्लेषण–विश्लेषण (द) प्रयोग (ब)

प्रश्न–5 राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास का पाठ्यक्रम प्राथमिक स्तर पर–

(अ) राष्ट्र भक्तों की कहानियॉ

(ब) विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति का ज्ञान

(स) भारत के विभिन्न क्षेत्रों की भाषा का ज्ञान

(द) विभिन्न जातियों एवं समुदायों का मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध (अ)

प्रश्न–6 पाठ्यक्रम में सम्मिलित होते है–

(अ) केवल सैद्धान्तिक विषय (ब) केवल व्यावहारिक कार्य

(स) अनुभवों की समग्रता (द) उपरोक्त में से कोई नहीं (स)

प्रश्न–7 इतिहास का सह–सम्बन्ध है–

(अ) नागरिक शास्त्र (ब) गणित

(स) समाज शास्त्र (द) उपरोक्त सभी से (द)

प्रश्न–8 ''इतिहास हमारे सम्पूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा लेखा–जोखा है।'' यह कथन है–

(अ) डॉ. राधाकृष्णन् का (ब) रेपसन का

(स) घाटे का (द) ह्यूजिंगा का (स)

लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्रश्न–1 संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए– इतिहास शिक्षण के उद्धेश्य?
Write short note& Aims of History Teaching.

उत्तर इतिहास शिक्षण के उद्धेश्यः – 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' ने अपने प्रतिवेदन के माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के निम्न उद्धेश्य निर्धारित किए थे–

1. लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास।
2. नेतृत्व का विकास।
3. व्यक्ति का विकास।
4. व्यावसायिक कुशलता का विकास।
5. चरित्र का विकास।
6. लोकतान्त्रिक विचारधारा का विकास।

इतिहास शिक्षण के उद्धेश्य देश, काल, वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग हो सकते हैं। प्राचीन इतिहास के उद्धेश्य राजाओं एवं शासकों को उनकी वीर–गाथा के द्वारा प्रसन्न रखता था। मध्ययुग में प्राचीन संस्कृति एवं परम्पराओं के लिए आदर भाव उद्धेश्य हो गया। वर्तमान युग में अतीत की सहायता से वर्तमान को दूरदर्शिता से समझना एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास इतिहास शिक्षण का उद्धेश्य समझे जाने लगा हैं। अतः इतिहास शिक्षण के उद्धेश्यों को हम निम्न दो भागों में विभक्त कर सकते हैं–

1. **सामान्य उद्धेश्य (General Objectives)**
2. **विशिष्ट उद्धेश्य (Specific Objectives)**

1. **इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्धेश्यः** – सामान्य उद्धेश्य को लक्ष्य भी कहते हैं। ये उद्धेश्य अप्राप्यनीय होते हैं, परन्तु दिखने में प्राप्यनीय लगते हें। सामान्य उद्धेश्यों को हम निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं–

   i. इतिहास के प्रति रूचि जागृत करना।
   ii. अतीत के सन्दर्भ में वर्तमान को स्पष्ट करना।
   iii. मानसिक शक्तियों का विकास करना।
   iv. राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना।
   v. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।

vi. सुनागरिकता का विकास करना।
vii. अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास करना।

इतिहास शिक्षण के विशिष्ट उद्धेश्य–

सामान्य उद्धेश्य सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रयुक्त होते हैं, विशिष्ट उद्धेश्य किसी विशिष्ट विषय व उप विषय के लिए निश्चित होते हैं। यह शिक्षा के उद्धेश्य न होकर विषय शिक्षण के उद्धेश्य होते हें। विशिष्ट उद्धेश्यों को हम निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं–

1. ऐतिहासिक विधि का ज्ञान देना।
2. कालक्रमानुसार मान उन्नति का अध्ययन।
3. समय ज्ञान की भावना का विकास करना।
4. सामाजिक विकास की गतिशीलता का ज्ञान कराना।
5. इतिहास के तार्क्रिक, निष्पक्ष तथा तुलनात्मक अध्ययन पर बल देना आदि।

सामान्य उद्धेश्यों और विशिष्ट उद्धेश्यों में अन्तर
(Difference between General Objectives and Specific Objectives)

क्रमांक	सामान्य उद्धेश्य (General Objectives)	विशिष्ट उद्धेश्य (Specific Objectives)
1.	इनका क्षेत्र व्यापक होता हैं।	इनका क्षेत्र परिसीमित होता हैं।
2.	इनमें आदर्शवादिता होती हैं।	इनमें व्यावहारिकता होती हैं।
3.	अन्य विषयों के शिक्षण से भी प्राप्य हैं।	ये किसी एक विषय व प्रकरण से प्राप्य होते हैं।
4.	ये व्यवहार परिवर्तन से सीधे सम्बन्धित नहीं होते।	ये व्यवहार परिवर्तन से सीधे सम्बन्घित हैं।
5.	इसकी प्राप्ति लम्बे समय में होती हैं।	इसकी प्राप्ति कम समय में (एक कालांश या इकाई की अवधि में) हो जाती हैं।
6.	सामान्य उद्धेश्य छात्र–अध्यापक क्रिया को निर्धारित नहीं करते।	ये उद्धेश्य छात्र–अध्यापक क्रिया को निर्धारित करते हैं।
7.	इन्हें सामान्य शब्दावली में व्यक्त किया जाता हैं।	इन्हें विशिष्ट (Specific) व्यवहार परिवर्तन की शब्दावली में व्यक्त किया जाता हैं।
8.	इनकी प्राप्ति में सह–पाठ्यक्रमीय प्रवृतियों का सहारा भी लेना पड़ता हैं।	इनकी प्राप्ति कक्षागत शिक्षण की स्थितियों से ही हो जाती हैं।

प्रश्न–2 इतिहास शिक्षक को इतिहास शिक्षण के उद्धेश्य जानना क्यों आवश्यक है?
Why should a teacher of history know the aims of teaching history?

उत्तर विद्यालयों में छात्र–छात्राओं के कई विषयों का अध्यापन कराया जाता है, ताकि बालक–बालिकाओं का सर्वांगीण विकास हो सके। इन विषयों के शिक्षण के दौरान अनेक प्रकार के सीखने के अनुभवों को भी स्थान प्रदान किया जाता हैं।

इन अनुभवों से बालक–बालिकाओं के ज्ञान की वृद्धि होती हैं, सोचने–समझने का ढ़ंग बदलता हैं, कार्य–शैली बदलती हैं और उनकी अभिरूचि तथा अभिवृत्ति का भी विकास होता हैं। यह सम्पूर्ण विकास 'व्यवहार परिवर्तन' कहलाता हैं। बालक–बालिकाओं के व्यवहार परिवर्तन में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों ही मानसिक पक्ष शामिल होते हैं। छात्र–छात्राओं का उक्त मानसिक पक्षों का विकास करना ही शिक्षण का मुख्य उद्धेश्य होता हैं। वर्तमान में पुस्तकीय ज्ञान पर अधिक बल दिया जा रहा हें, जबकि शिक्षक शिक्षण का उद्धेश्य व्यवहार में परिवर्तन लाना हैं। इतिहास शिक्षण के उद्धेश्यों को अतीत घटनाओं, राजा, महाराजाओं, युद्धों, सन्धियों की गाथा तक ही सीमित कर दिया हैं। परीक्षक भी प्रश्न–पत्र निर्माण करते समय यह ध्यान नहीं रखते कि किन–किन व्यवयहार परिवर्तनों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मूल्यांकन विधि को अपनाकर इन दोषों को दूर किया जा सकता हैं। विभिन्न प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका हैं कि शिक्षण व परीक्षण की क्रियाएॅ उद्धेश्य आधारित तथा एक–साथ सम्पन्न होनी चाहिए। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव बालक, समाज व राष्ट्र उत्थान पर पड़ता हैं। अतः इतिहास शिक्षक को व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल देना चाहिए। उपर्युक्त प्रकार से विधिवत् इतिहास शिक्षण के उद्धेश्यों को स्पष्ट रूप से समझना इतिहास सशिक्षक के लिए अत्यावश्यक हैं।

इतिहास की प्रकृति स्थिर न होकर निरन्तर गतिशील रही हैं। मानव सभ्यता के जन्म से ही मानव के जीवन मूल्यों में परिवर्तन होते रहे है। सभ्यता एवं संस्कृति व व्यवहार भी बदलते रहे हैं। इसी कारण इतिहास के उद्धेश्य भी बदलते रहे हैं, शिक्षण उद्धेश्यों का प्रतिपादन सामाजिक व राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आवश्यकताों की पूर्ति के लिए किया जाना चाहिए। अतः राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने के लिए इतिहास की भावना का विकास करने के लिए इतिहास शिक्षक को शिक्षण के प्राप्य उद्धेश्यों का ज्ञान होना परमावश्यवक हैं।

प्रश्न–3 माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के 'सामान्य उद्धेश्यों' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखियें?
Write a short note on 'General Aims' of teaching history at secondary stage.

उत्तर माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्धेश्य– माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के सामान्य उद्धेश्य निम्न प्रकार हैं–

1. **लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास**– माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण का प्रमुख उद्धेश्य छात्रों में लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास करना हैं। छात्रों में प्रजातान्त्रिक गुणों का होना आवश्यकता हैं। इनसे समाज, समुदाय राष्ट्र की उन्नति होती हैं। लोकतान्त्रिक मूल्यों को अपनाना एक श्रम साध्य तपस्या होती हैं। इस तपस्या को इतिहास के माध्यम से पूर्ण किया जा सकता हैं।
2. **व्यक्तित्व का विकास करना**– छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में अनेक गुणों, प्रेरणाओं, उपलब्धियों की आवश्यकता होती हैं। व्यक्तित्व विभिन्न गुणों का पुंज होता हैं। ये गुण उसके नैतिक बौद्धिक, मानसिक शारीरिक विकास से ही विकसित होते हैं। इन गुणों को इतिहास से पोषित किया जा सकता हें, ऐतिहासिक पुरूषों की जीवनियॉ सुनाकर, सन्तों की कहानियॉ सुनकर आदि।
3. **नेतृत्व के गुणों का विकास करना**– इतिहास शिक्षण के द्वारा छात्रों में नेतृत्व करने के गुणों को सिखाया जा सकता हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, हर्षवर्धन, राणा प्रताप, शिवाजी, सुभाषचन्द्र, गॉधीजी आदि अनेक ऐसे महान योद्धा और नेता हुए हैं, जिन्होनें देश को संगठित करने में महत्वपूर्ण कार्य किया हैं। इन सैनिको,

नेताओं, योद्धाओं से प्रेरणा प्राप्त कर छात्र स्वयं अपने अन्दर भी आवश्यकता होने पर इन गुणों का संचार कर देश–सेवा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

4. **व्यावसायिक कुशलताओं का विकास करना**– इतिहास विषय छात्रों में अनेक व्यावसायिक कुशलताएॅ एवं योग्यताएॅ विकसित कर सकता हैं। इतिहास विषय अतीत की घटनाओं का लिपिबद्ध अध्ययन हैं। इन घटनाओं से अवगत होकर कोई ऐतिहासिक पत्रिका का सम्पादन, पुरातत्व अभिलेखों सम्बन्धी लेख, पुरातत्व विभाग की जानकारी ऐसे विषय हो सकते हैं, जो विद्यार्थियों को अपनी व्यावसायिक योग्यता के विकास में सहायक बन जीवकोपार्जन हेतु लाभकारी बन सकते हैं।

5. **चारित्रिक विकास करना**– इतिहास शिक्षण का अन्य उद्धेश्य छात्रों में आदर्श चरित्र का निर्माण करना भी हैं। इतिहास विषय का अध्ययन करवाकर छात्रों में आदर्श नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता हैं, जो उनके चरित्र निर्माण में योग देते हैं। इतिहास समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यों एवं उपलब्धियों का अध्ययन हैं। अतः शिक्षक बुद्ध, राम, नानक, महावीर, दयानन्द, विवेकानन्द, गांधी, प्रताप, शिवाजी, कन्फ्युशिस , जीसस आदि महान् संतों, समाज सुधारकों, वीर पुरूषों, राष्ट्रीय नेताओं की जीवन गाथाओं का उपयोग कर सकता हैं। इससे छात्रों में सत्वादिता, ईमानदारी, न्यायप्रियता, त्याग की भावना विकसित होगी एंव आदर्श चरित्र का निर्माण हो सकेगा।

प्रश्न–4 "इतिहास राष्ट्र की स्मरण शक्ति हैं।" इस कथन के आधार पर माध्यमिक कक्षाओं में इतिहास शिक्षण के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

'History is memory of Nation." On the basis of the statement, explain in brief the importance of teaching history in secondary classes.

उत्तर **डॉ. एस. राधाकृष्णन्** ने इतिहास के बारे में कहा था कि **"इतिहास राष्ट्र की स्मरण शक्ति हैं।" (History is memory of the Nation)** किसी भी राष्ट्र के लिए अतीत की जानकारी उसके इतिहास से होती हैं अतः राष्ट्र के लिए स्मृतियों की आवश्यकता होती हैं। माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न स्तरों पर इतिहास शिक्षण के महत्व के समर्थन तक्र निम्न प्रकार हैं–

1. **अतीत से प्रेम उत्पन्न करने के लिए आवश्यकता**– छात्र–छात्राओं को माध्यमिक स्तर पर अतीत से अवगत कराया जाना चाहिए। उन्हें इस योग्य बनाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे वे अपने अतीत का वर्तमान से विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर लाभ प्राप्त कर सकें
2. **ज्ञान के व्यवहार अथवा सूचनात्मक दृष्टि से महत्व**– सामाजिक का पूरा व्यवहार, विचार, प्रगति, भाषा–शैली, साहित्य, सॉस्कृतिक एवं राजनैतिक, आर्थिक ज्ञान, व्यवहार तथा सूचनाओं का ज्ञान इतिहास के द्वारा होता हैं।
3. **नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए**– बालकों में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने व आदर्श समाज के लिए इतिहास का अति महत्व हैं, महापुरूषों महाराणा प्रताप, शिवाजी, अशोक, आज्ञाकारी पुत्र श्रवण कुमार आदि की इतिहास की जानकारी देकर स्थाई नैतिक मूल्यों को बालकों में स्थापित किया जा सकता हैं।
4. **सॉस्कृतिक तथा सामाजिक दृष्टि से महत्व**– प्राचीन संस्कृति, सामाजिक लोक–व्यवहार को इतिहास के द्वारा ही समझा जा सकता हैं, प्राचीन सॉस्कृतिक तथा सामाजिक समस्या का समाधान आधुनिक परिप्रेक्ष्य में खोजा जा सकता हैं।
5. **भारतीय जीवन के ढ़ंग से अवगत कराने के लिए आवश्यक**– भारतीय माध्यमिक विद्यालयों में इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक हैं, क्योंकि इसके अध्ययन से छात्र 'भारतीय जीवन के ढ़ंग (Indian way of

life) के विकास को समझने में समर्थ हो सकते हैं। जीवन के ढ़ंग को समझकर सामाजिक एकता को स्थापित किया जा सकता हैं।

प्रश्न–5 भावात्मक एकता का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
Clarify the meaning of emortional integration.

उत्तर **भावात्मक एकता का अर्थ**– महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार– ''भावात्मक एकता से आशय भाषा, विचार और भावना में एकता हैं।'' सामान्य शब्दों में ''देशवासियों का देश के विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं के हित में सोचना विचारना ही भावात्मक एकता हैं, सभी व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर दूसरे व्यक्तियों के हित में सोचें, उन्हें भी अपने समान समझे एवं उनके विचारों, भावों को भी अपने विचारों के समान महत्व देना ही भावात्मक एकता हैं।'' संक्षिप्त में ''विचारों और भावनाओं में एकता ही '' भावात्मक एकता हैं।

भावात्मक एकता का अर्थ निम्नलिखित परिभाषाओं के द्वारा अधिक स्पष्ट हो जाएगा–

डॉ. वशिष्ठ के अनुसार– ''व्यक्तियों के लक्ष्य एवं बुद्धि पर नियन्त्रण करके मनोबल विकसित करना भावात्मक एकता हैं।''

जवाहर लाल नेहरू– ''भावात्मक एकता से अभिप्रायः अपने मस्तिष्क एवं हृदय का समन्वय तथा पृथकत्व की भावनाओं के दमन से हैं।''

डॉ. सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में गठित भावात्मक एकता समिति के अनुसार– ''भावात्मक एकता भ्रातृत्व एवं राष्ट्रीयता की प्रबल भावना हैं, जो देश के निवासियों को विचार एवं कार्य के समस्त क्षेत्रों में प्रेरणा प्रदान करती हैं और उनकी अपनी सब विभिन्नताओं धार्मिक, वैयक्तिक, स्थानीय, भाषा, प्रान्त सम्बन्धित विस्मरण एवं बहिष्कार करने में मदद करती हैं।''

उपर्युक्त प्रकार से हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता की भावना से फलीभूत एवं विकसित होती हैं। इसी बात को हम पूर्ण स्पष्ट पण्डित जवाहर लाल नेहरू के निम्न विचार से कर सकते हैं–

''हमें अनुदार, संकीर्ण, साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयतावादी और जातिवादी नहीं बनना चाहिए। क्योंकि राजनैतिक एकीकरण एक सीमा तक हो चुका हैं किन्तु मै। जिस बात का जिक्र कर रहा हूँ, वह इससे गहरी हैं, अर्थात् भारतीयों का भावात्मक एकीकरण, ताकि हम सब एक होकर शक्तिशाली राष्ट्रीय इकाई बन सकें, साथ ही अपनी अनोखी अलबेली विविधता को भी बनाए रखें।''

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि कट्टरता, स्वार्थ की भावना, भाषा मोह, प्रान्तीयता की संकुचित विचारधारा से ऊपर उठकर भ्रातृत्व एवं राष्ट्रीयता की प्रबल भावना का विकास कर लेना ही भावात्मक एकता हैं।

प्रश्न–6 स्थानीय इतिहास से क्या तात्पर्य हैं? इतिहास शिक्षण में इसका क्या महत्व हैं? अपने राज्य के किसी जिले का उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।
What is meant by 'local history'? What is the importance in teaching history? Explain with reference to a particular district of your state mentioning clearly the use you make of it.

उत्तर **स्थानीय इतिहास का अर्थ (Meaning of Local History)**–जिस स्थान पर हम रहते हैं, उस स्थान विशेष का इतिहास ही स्थानीय इतिहास कहलाता हैं। स्थानीय इतिहास के अन्तर्गत उस स्थान की समस्त प्रकार की ऐतिहासिक जानकारी शामिल होती हैं। स्थानीय स्तर पर पाए गए स्मारक, अवशेष, अभिलेख, मन्दिर, गढ़, किले स्थानीय इतिहास के स्त्रोत होते हैं। स्थानीय इतिहास के आधार पर ही राष्ट्रीय इतिहास लिखा जाता हैं। स्थानीय इतिहास में प्रायः परम्पराओं, रीति–रिवाजों रहन–सहन, वेशभूषा, उद्योग–धन्धें, व्रत, त्यौहार, मेलो आदि का विशद वर्णन होता हैं, जो कि स्थान विशेष की समस्त प्रकार की जानकारी हमें देता हैं। अतः स्थानीय इतिहास राष्ट्रीय इतिहास का पूरक माना जाता हैं।

स्थानीय इतिहास एवं राष्ट्रीय इतिहास एक–दूसरे के पूरक है– स्थानीय एवं राष्ट्रीय इतिहास एक–दूसरे के पूरक हैं, एक के अभाव में दूसरा महत्वहीन हैं। छात्र सर्वप्रथम परिवार, समाज आसपास के वातावरण ही जानकारियॉ प्राप्त करता हैं। स्थानीय ऐतिहासिक, सामाजिक, अवशेष, स्मारक, चिन्ह्रों आदि से वह स्थानीय, ज्ञान प्राप्त करता हैं। स्थानीय महापुरूषों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता हैं। अपने क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करने के बाद बालक राष्ट्रीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त करता हैं। छोटी–छोटी स्थानीय ऐतिहासिक महत्व की घटनाऍ ही संगृहीत होकर राष्ट्रीय इतिहास का निर्माण करती हैं। उदाहरण के लिए– महाराणा प्रताप मेंवाड़ के शासक थे, मेवाड़ के छात्र स्थानीय स्तर पर महान देशभक्त महाराणा प्रताप के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार महाराणा प्रताप मेवाड़ (राजस्थान) प्रान्तीय स्तर से ऊपर राष्ट्रीय वीर महापुरूषों की श्रेणी में आ गए। अतः स्थानीय इतिहास एवं राष्ट्रीय इतिहास एक–दूसरे के पूरक हैं।

स्थानीय इतिहास शिक्षण का महत्व
(Importance of Teaching of Local Hitory)

1. **वर्तमान की सहायता से अतीत का ज्ञान**– बालक वर्तमान में रहकर अपने अतीत में क्या–क्या ऐतिहासिक घटनाऍ हुई इनकी जानकारी स्थानीय इतिहास से प्राप्त कर अपने स्थानीय ज्ञान को पुष्ट कर सकता हैं।
2. **राष्ट्रीय समस्या के समाधान में सहायक**– अनेक राष्ट्रीय समस्याऍ स्थानीय घटनाओं से जुड़ी हुई होती हैं। ऐसी राष्ट्रीय समस्याओं को स्थानीय इतिहास शिक्षण के आधार पर ही समझाा जा सकता हैं और उनका समाधान भी स्थानीय स्तर पर किया जा सकता हैं।
3. **देशभक्तों, महापुरूषों के कार्यों की जानकारी देने हेतु**– देश–भक्तों एवं महापुरूषों के प्रारम्भिक जीवन, बाल्यावस्था व जन्म स्थान आदि की पूर्ण जानकारी स्थानीय इतिहास से होती हैं। अगर हमें महाराणा प्रताप के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी हैं तो हमें 'मेवाड़ के इतिहास' एवं स्थानीय स्तर पर मेवाड़ की पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी होगी तभी हम राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय महापुरूष महाराणा प्रताप का इतिहास लिख सकते है, अतः स्थानीय इतिहास राष्ट्रीय इतिहास की आधाशीला एवं पूरक के रूप में माना जाता हैं।
4. **स्थानीय अवशेषों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए**– भारतीय इतिहास के अवशेष अलग–अलग स्थानों पर बिखरे हुए हैं। अतः स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अवशेष, शिलालेख, अभिलेख, धार्मिक–स्थल, स्मारक, किले, गढ़, खण्डहर आदि के द्वारा हमें स्थानीय इतिहास की पूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं अतः स्थानीय इतिहास की पूर्ण जानकारी छात्रों को देने के लिए पुरा अवशेष अत्यधिक उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए– जयपुर जिले के विराटनगर में अशोक के अभिलेख, शिलालेख हैं, जो उस समय की सामाजिक अवस्था व लिपि की जानकारी हमें देते हैं।

5. **राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा के लिए**– स्थानीय स्तर पर स्थित राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा करने के भाव को स्थापित करने के लिए छात्रों को स्थानीय इतिहास पढ़ाया जाना आवश्यक व जरूरी है, ताकि आने वाली पीढ़ी को स्थानीय स्तर की पूर्ण जानकारी मिल सके।
6. **राष्ट्रीय इतिहास को समझने हेतु**– स्थानीय इतिहास का महत्व अन्तर्निहित नहीं हैं। वरन् इसका मनोवैज्ञानिक महत्व भी हैं। बालक ज्ञात से अज्ञात की ओर आगे बढ़ता हैं, अतः स्थानीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर बालक शनैः शनैः राष्ट्रीय इतिहास के महत्व को भी समझ सकता हैं– कहा भी जाता हैं कि स्थानीय इतिहास राष्ट्रीय इतिहास का पूरक हैं। दोनों परस्पर संबंधित होते हैं तथा एक के अभाव में दूसरे को समझना बहुत कठिन हैं।

प्रश्न–7 इतिहास का अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध स्थापित करते समय किन–किन सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाना चाहिए? व्याख्या कीजिए।

What principles are kept in mind in correlation of history with other subjects? Explain.

उत्तर **<u>इतिहास का अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध स्थापित करते समय ध्यान रखने योग्य सिद्धान्त</u>**

इतिहास का अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध स्थापित करते समय अग्र सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए–

1. **<u>विषय की रोचकता का सिद्धान्त</u>**– सबसे पहले विषय की रोचकता के सिद्धान्त का ध्यान रखना चाहिए। इतिहास के शिक्षण में अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध से छात्रों रूचियों एवं स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास होता हैं। छात्रों में इस प्रकार की अन्तर्दृष्टि का विकास होता हैं कि एक विषय के तथ्यों को समझने के लिए दूसरे विषय की सहायता ली जा सकती हैं। इस प्रकार सभी विषय एक–दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं। इससे विषय की निरसता भी समाप्त हो जाती है और छात्रों को विषय में रूचि भी उत्पन्न होती हैं।
2. **<u>समय की बचत का सिद्धान्त</u>**– इतिहास शिक्षण में सह–सम्बन्ध के प्रयोग से शिक्षण में कम समय में अधिक पाठ्यवस्तु को व्यापक रूप में प्रस्तुत किया जा सकता हैं। विषय की सूक्ष्मताओं एवं गहनता को व्यापक रूप में पढ़ाया जा सकता हैं। इतिहास के शिक्षण में कालक्रम अनुभूति के लिए छात्रों को मापक का भी बोध होना आवश्यक हैं, ग्राफ के ज्ञान से उत्थान–पतन का कालक्रम के रूप में बोध हो सकता हैं। इतिहास शिक्षण के साफ मापक तथा ग्राफ के तथ्यों को भी समझाया जा सकता हैं। शिवाजी की विजय के कारणों को बतलाते समय दक्षिण भारत की प्राकृतिक दशा का ज्ञान दिया जा सकता हैं। इस प्रकार इससे समय की बचत होती है।
3. **<u>ज्ञान की व्यापकता का सिद्धान्त</u>**– इतिहास शिक्षण में अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध स्थापित करते हुए पढ़ाने से पाठ्यक्रम का बोध व्यापक रूप में दिया जाता हैं। शिक्षण में विभिन्न विधियों तथा विभिन्न विषयों की विषमता होते हुऐ ज्ञान की एकता अन्तर्निहित होती हैं। उसी प्रकार इतिहास की विषय–वस्तु में ज्ञान की व्यापकता निहित हैं।
4. **<u>ज्ञान की व्यवहारिकता का सिद्धान्त</u>**– इतिहास शिक्षण को केवल सूचना स्तर तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए अपितु छात्रों के व्यवहार परिवर्तन पर बल दिया जाए। अतः इतिहास की पाठ्य–वस्तु को जीवन की अन्य क्रियाओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे छात्रों को सीखने के लिए प्रेरणा भी मिल सके, क्योंकि सभी विषयों की शिक्षा का उद्धेश्य भावी जीवन की तैयारी है। अतः ज्ञान को व्यावहारिक स्तर देने के लिए अन्य विषयों से सम्बन्ध स्थापित करते हुए पढ़ाना चाहिए।

<u>निबन्धात्मक प्रश्न</u>–

प्रश्न–8 राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इतिहास शिक्षण का क्या महत्व है?
What is the importance of teaching history from national outlook?

उत्तर **राष्ट्रीय इतिहास का अर्थ**– राष्ट्रीय इतिहास का अर्थ प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की ऐतिहासिक घटनाओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत करना होता हैं। महत्वपूर्ण घटनाओं का विकास–क्रम, उनके कारण एवं परिणाम, समय ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय विकास तथा राष्ट्रीय सभ्यता एवं संस्कृति का परिचय मिलता हैं। राष्ट्रीय इतिहास के वास्तविक प्रस्तुतीकरण हेतु यह आवश्यक है कि वह राष्ट्रीय एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से लिखा जाए। राष्ट्रीय इतिहास राष्ट्र का दर्पण हैं।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता– राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय एकता आवश्यक हैं। आज देश में विघटनकारी शक्तियॉ निरन्तर बढ़ रही हैं। प्रान्त–भेद, भाषा–भेद, जाति–भेद, धर्म भेद की प्रवृत्तियॉ भयावह उग्र रूप धारण कर रही हैं। इन सभी अन्तरों को इतिहास शिक्षण के द्वारा ही समाप्त किया जा सकता हैं।

भारत के लिए राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना निम्न कारणों से आवश्यक हैं–

1. विविधता में अपनी एकता बनाए रखने के लिए।
2. राष्ट्रीयता की भावना बनाए रखने के लिए।
3. तीव्र गति से सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक उन्नति को प्राप्त करने के लिए।
4. विभिन्न समूहों की संस्कृति को राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में विकसित राष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए।
5. ब्राह्म आक्रमणों एवं आन्तरिक खतरों से पूर्व सुरक्षा प्राप्त करने के लिए।
6. विघटनकारी शक्तियों पर रोक लगाने के लिए।

<u>राष्ट्रीय एकता एवं देशप्रेम के लिए इतिहास का कार्यक्रम</u>–

1. **<u>प्राथमिक स्तर पर</u>**– इस स्तर पर छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करने के लिए इतिहास के पाठ्यक्रम में राष्ट्र भक्ति–गीत, लोकगीतों, कहानियों ऐतिहासिक घटनाओं को महत्व दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर के महापुरूषों की जीवनियॉ बनायी जानी चाहिए। छात्रों को स्थानीय ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन कराया जाना चाहिए और यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि राष्ट्रीय इतिहास के विकास में उस स्थान के लोगों का क्या योगदान रहा है?
2. **<u>माध्यमिक स्तर पर</u>**– माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय एकता के विकास हेतु छात्रों को देश के विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों एवं सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास पर बल दिया जाना चाहिए अनेकता में एकता की अवधारणा का विकास कर आपसी मैत्रीपूर्ण व्यवहार पर बल देना चाहिए।
3. **<u>विश्वविद्यालय स्तर पर</u>**– इस स्तर पर छात्रों को इस तथ्य से परिचित कराया जाना चाहिए कि जब–जब राष्ट्रीय हितों के सामने स्थानीय और क्षैत्रीय हितों को बढ़ावा दिया गया, राष्ट्रीय एकता को धक्का लगा हैं। अतः संकीर्ण दृष्टिकोण से ऊपर उठकर हमें राष्ट्रीय एकता एवं भाईचारे की भावना पर बल देना चाहिए।

<u>इतिहास शिक्षण के माध्यम से राष्ट्रीय एकता एवं देश प्रेम की भावना का विकास</u>–

1. **भौगोलिक एकता की भावना का विकास**– जिसकी उत्तर दिशा में गगनचुम्बी हिमालय पर्वत, दक्षिण में हिन्द महासागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर हैं, उस राष्ट्र का नाम **भारत** है। इसे कई नामों से जाना जाता है, जैसे– आयावर्त, हिन्दुस्तान, भारत, इंडिया आदि। जब भी किसी विदेशी ने आक्रमण किया तो सभी भौगोलिक स्थितियों में रहने वाले नागरिकों ने दुश्मन से लौहा लेकर अपनी राष्ट्रीय एकता को कायम रखा हैं। अतः इतिहास शिक्षण के द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास किया जा सकता हैं।
2. **सॉस्कृतिक एकता की भावना का विकास**– भारतीय मनिषियों व सूफियों ने सम्पूर्ण देश को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बॉधने हेतु अनेक कार्य किए शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार धामों की यात्रा कर भारतीय अपना जीवन सफल समझता हैं। अजमेर दरगाह पर सिर नवाकर अपने को धन्य मानता हैं। चर्च में प्रार्थना कर शान्ति प्राप्त करता हैं। हमें एक–दूसरे की भावनाओं के मध्य स्नेह का वातावरण बनाकर राष्ट्रीय एकता स्थापित करनी चाहिए।
3. **राजनीतिक एकता की भावना का विकास**– सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त आदि शासकों ने सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में लाने का प्रयास किया था। आधुनिक राजनीतिक नायकों को भी राजनीतिक दलबन्दियों व स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता को महत्व देना चाहिए ताकि राष्ट्र एकता के सूत्र में बॅधा रहे।
4. **राष्ट्रीयता की भावना का विकास**– इतिहास शिक्षण के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना का विकास सहज रूप में किया जा सकता हें। भारतीय महापुरूषों शिवाजी, राणा प्रताप झॉसी की रानी लक्ष्मीबाई, अवध की बेगमों के त्याग, बलिदान की गाथाऍ छात्रों को सुनाकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया जा सकता हैं। इसी प्रकार भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महात्मा गॉधी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य आदि के जीवन–चरित्र तथा बलिदान का शिक्षण कर इतिहास शिक्षण द्वारा राष्ट्रीय एकता स्थापित की जा सकती हैं।

उक्त प्रकार से राष्ट्रीय इतिहास द्वारा एकता एवं देश प्रेम की भावना स्थापित की जा सकती है।

प्रश्न–9 माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण का क्या महत्व है? इतिहास शिक्षण से आप देशप्रेम की भावना का समावेश कैसे कर सकते है? विस्तृत रूप में लिखिये।

What is the importance of history teaching at the secondary level? How can you in culcate the feelilng of patriotism by teaching history? Write in detail.

उत्तर **माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण का महत्व**– माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण का महत्व निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट है–

1. **सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व**– इतिहास में सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला जाता हैं। इन तथ्यों को पढ़कर छात्रों को देश की सॉस्कृतिक विरासत का ज्ञान होता है तथा वे अतीतकालीन सामयिक दशा से परिचित होता हैं। इस प्रकार उनमें सॉस्कृतिक और सामाजिक गुणों का विकास होता है। दूसरे, वर्तमान समाज का अध्ययन करने के लिए अतीतकालीन समाज का अध्ययन करना भी आवश्यक हैं। वर्तमान सामाजिक संस्थाऍ किस प्रकार विकसित हुई इसका उत्तर इतिहास देता हैं।
2. **ज्ञानात्मक एवं सूचनात्मक दृष्टि से महत्व**– इतिहास का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हैं। यदि इस विषय को ज्ञान का विशाल सागर कहा जाये तो अनुचित न होगा। किसी भी देश का इतिहास पढ़कर छात्र वहॉ के

राजनीतिक, सॉस्कृतिक तथा आर्थिक विकास की जानकारी प्राप्त करके अपने सामान्य ज्ञान का विकास करते हें। इतिहास छात्रों की विभिन्न जिज्ञासाओं को तृप्त करने में भी सहायक होता हैं।

3. **नैतिक दृष्टि से महत्व**– इतिहास के शिक्षण का नैतिक मूल्यों की दृष्टि विशेष महत्व हैं जो अन्य विद्यालय के विषयों से सम्भव नहीं हो सकता हैं। इतिहास बालकों तथा बालिकाओं के सम्मुख महान् पुरूषों के आदर्श प्रस्तुत करता हैं, जो उनके नैतिक जीवन के स्तर को उच्चतर बनाता हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि इतिहास के सभी पात्र वांछनीय हैं। राम तथा रावण, पृथ्वीराज तथा जयचन्द्र, शिवाजी तथा जयसिंह आदि का छात्र अध्ययन करते हैं। इनमें से किसका अनुकरण किया जाए और किसी भर्त्सना, यह तथ्य उनके आदर्शों से स्पष्ट हैं। इसी प्रकार महापुरूषों तथा उनकी गाथाओं के अध्ययन से छात्रों को 'सत्यमेव जयते' का पाठ सीखने को मिलता हैं इसलिए इतिहास के शिक्षण में महान् पुरूषों की कथाओं को आलोचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए और शिक्षण वैज्ञानिक ढ़ंग से किया जाए, जिससे नैतिक मूल्यों को सुगमता से प्राप्त किया जा सकता हैं।

4. **मानसिक शक्तियों के विकास में सहायक**– इतिहास का अध्ययन अन्य विषयों की भॉति मानसिक शक्तियों के समुचित विकास में सहायता प्रदान करता हैं। ऐतिहासिक घटनाओं के अध्ययन से कल्पना शक्ति का विकास होता हैं तथा स्मरण शक्ति विकसित होती है, इतिहास का अध्ययन जब क्रमबद्ध रूप से होता हैं तो वह वैज्ञानिक हो जाता हैं, जिससे छात्र की तक्र और चिन्तन शक्ति का विकास भी समुचित ढ़ंग से होता हैं।

5. **देश–प्रेम की भावना का जाग्रत होना**– जब छात्र अपने देश की गौरवपूर्ण घटनाओं व्यक्तियों के विषय में पढ़ते हैं तो उनके ह्रदय में अपने देश के प्रति तथा पूर्वजों के प्रति सम्मान की भावना जाग्रत हो जाती हें। इतिहास के अध्ययन से उन्हें ज्ञात होता हैं कि उनके पूर्वजों ने किस प्रकार मातृभूमि की सेवा की, तो वे भी वैसा ही करने के लिए प्रेरित हो जाते हैं।

6. **वर्तमान को समझने में सहायक**– इतिहास राष्ट्र की अतीतकालीन घटनाओं पर प्रकाश डालता हैं। बिना अतीत को ठीक प्रकार से समझे हम वर्तमान को नहीं समझ सकते। इस प्रकार इतिहास से वर्तमान को समझने में सहायक होता हैं।

7. **अनुशासनात्मक दृष्टि से महत्व**– इतिहास के शिक्षण से बालक की मानसिक क्षमताओं की स्मरण, तक्र, निर्णय, कल्पना तथा सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता हैं। घटनाओं एवं समस्याओं को वस्तुनिष्ठ रूप में विचार करने तथा सत्य की परख करने की प्रवृत्ति का विकास होता हैं। इस प्रकार के मानसिक प्रशिक्षण से बालकों में अनुशासन में रहने की अभिवृत्ति का विकास होता हैं। इतिहास में महान पुरूषों की जीवनियों के अध्ययन से उनकी अच्छी आदतों के अनुकरण की प्रेरणा मिलती हैं।

8. **विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास**– इतिहास–शिक्षण छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाता हैं। इस विषय का अध्ययन करके छात्रों को ज्ञात होता हैं कि विश्व के किसी भी भाग में घटित होने वाली कोई घटना प्रत्येक राष्ट्र को प्रभावित करती हैं। दूसरी ओर इतिहास यह भी बताता हैं कोई राष्ट्र, अन्य राष्ट्रों की सहायता के बिना प्रगति नहीं कर सकता। इस प्रकार इतिहास शिक्षण से विश्व–बन्धुत्व की भावना का भी विकास होता हैं।

इतिहास शिक्षण द्वारा देश प्रेम की भावना का समावेश

1. **भौगोलिक एकता की भावना का विकास**– जिसकी उत्तर दिशा में गगनचुम्बी हिमालय पर्वत, दक्षिण में हिन्द महासागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर हैं, उस राष्ट्र का नाम **भा र त** है। इसे कई नामों से जाना जाता है, जैसे– आयावर्त, हिन्दुस्तान, भारत, इंडिया आदि। जब भी किसी विदेशी ने

आक्रमण किया तो सभी भौगोलिक स्थितियों में रहने वाले नागरिकों ने दुश्मन से लौहा लेकर अपनी राष्ट्रीय एकता को कायम रखा हैं। अतः इतिहास शिक्षण के द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास किया जा सकता हैं।

2. **सॉस्कृतिक एकता की भावना का विकास**– भारतीय मनीषीयों व सूफियों ने सम्पूर्ण देश को सॉस्कृतिक एकता के सूत्र में बॉधने हेतु अनेक कार्य किए शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार धामों की यात्रा कर भारतीय अपना जीवन सफल समझता हैं। अजमेर दरगाह पर सिर नवाकर अपने को धन्य मानता हैं। चर्च में प्रार्थना कर शान्ति प्राप्त करता हैं। हमें एक–दूसरे की भावनाओं के मध्य स्नेह का वातावरण बनाकर राष्ट्रीय एकता स्थापित करनी चाहिए।

3. **राजनीतिक एकता की भावना का विकास**– सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त आदि शासकों ने सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में लाने का प्रयास किया था। आधुनिक राजनीतिक नायकों को भी राजनीतिक दलबन्दियों व स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता को महत्व देना चाहिए ताकि राष्ट्र एकता के सूत्र में बॅधा रहे।

4. **राष्ट्रीयता की भावना का विकास**– इतिहास शिक्षण के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना का विकास सहज रूप में किया जा सकता हें। भारतीय महापुरूषों शिवाजी, राणा प्रताप झॉसी की रानी लक्ष्मीबाई, अवध की बेगमों के त्याग, बलिदान की गाथाएॅ छात्रों को सुनाकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया जा सकता हैं। इसी प्रकार भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महात्मा गॉधी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य आदि के जीवन–चरित्र तथा बलिदान का शिक्षण कर इतिहास शिक्षण द्वारा राष्ट्रीय एकता स्थापित की जा सकती हैं।

उक्त प्रकार से राष्ट्रीय इतिहास द्वारा एकता एवं देश प्रेम की भावना स्थापित की जा सकती है।

प्रश्न–10 इतिहास–शिक्षक द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किस प्रकार किया जा सकता है? व्याख्या कीजिए।
How can the teaching of history promote international goodwill?

उत्तर अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का अर्थ
(Meaning of Internationalism Understanding)

अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना विश्व–मैत्री एवं विश्व–बन्धुत्व की भावनाओं पर आधारित हैं। यह 'वसुधैवकुटम्बकम्' की अवधारणा पर आधारित हैं। यह मानव कल्याण सेवा, प्रेम स्नेह, सहयोग, सहानुभूति, सदाचार, दया, परोपकार जैसे गुणों को फलीभूत करती हैं। मानव को मानव के प्रति प्रेम की ओर अग्रसित करती हैं

डॉक्टर वाल्टर ए.सी लेन्स ने कहा हैं कि– 'अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना इस ओर ध्यान दिए बिना कि व्यक्ति किस राष्ट्रीयता या संस्कृति के है, एक–दूसरे के प्रति सब जगह उनके व्यवहार का आलोचनात्मक एवं निष्पक्ष रूप से, निरीक्षण करने और आकलन करने की योग्यता हैं। ऐसा करने के लिए व्यक्ति को इस योग्य होना चाहिए कि सब राष्ट्रीयता, संस्कृतियों और प्रजातियों का इस संसार में रहने वाले लोगों की समान रूप से महत्वपूर्ण विभिन्नताओं के रूप में निरीक्षण कर सकें।''

ऑलीवर गोल्डस्मिथ के अनुसार– '' अन्तर्राष्ट्रीयता एक भावना है, जो व्यक्ति को स्पष्ट करती हैं कि व न केवल अपने राष्ट्र का ही एक सदस्य हैं, वरन् एक विश्व–नागरिक भी हैं। ''

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का महत्व
(Importance of Internationalism Understanding)

आधुनिक विज्ञान एवं अणुविक तीव्र विकास के कारण आज अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का महत्व बहुत अधिक हो गया हैं। जहॉ एक ओर विज्ञान के साधनों संसार को बहुत अधिक हो गया हैं। जहॉ एक ओर विज्ञान के साधनों ने संसार को सिकोड़कर रख दिया हैं, वही ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिस्पर्द्धा जैसे घाटक विचारों से युक्त अणु–परमाणु के विकास ने संसार के विनाश का मार्ग भी खोल दिया हैं। अतः आधुनिक समय में ''जीओ और जीने दो'' की भावना पर अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना आधारित हैं। सभी राष्ट्र अपना विकास करें एंव अन्य राष्ट्रों के विकास में सहयोग करें, अन्य राष्ट्र को भी अपना राष्ट्र समझे, शान्ति, सद्भावना, प्रेम, सहयोग सदाचार भ्रातृत्व की भावनाओं से युक्त व्यवहार करें। अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के द्वारा सुनहरे संसार को संजोया जा सकता हैं और प्रत्येक नागरिक व राष्ट्र अपना व विश्व का कल्याण कर सकता हैं। अतः आधुनिक समय में संकीर्ण दृष्टिकोणों को छोड़कर अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का महत्व अतिआवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के साधन
(Means for the Development of International Understanding)

आधुनिक समय में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए सिनेमा, फिल्म, टेलीविजन, रेड़ियों, मोबाइल, इन्टरनेट एवं शिक्षा आदि का महत्वपूर्ण स्थान हैं। उक्त सभी का उपयोग मानव कल्याण एवं सेवा के लिए किया जाए। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का सबसे प्रभावी साधन शिक्षा को माना जाता हैं, शिक्षा ही ऐसी नींव हैं, जो मानव को मानव से परिचित कराते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्नेह, प्रेम, सहयोग, सदाचार, भाईचारे, मानव कल्याणरूपी सुन्दर शान्त विश्व महल का निर्माण कर सकती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास हेतु विभिन्न स्तरों का पाठ्यक्रम
(Curriculum at Different Stages for the Development of Internationalism)

अन्तर्राष्ट्रीय विश्व शान्ति का संदेश देती हैं। यह मानव की आत्मा की आवाज हैं। सद् एवं संस्कारित मानव सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार मानते हैं। इतिहास शिक्षण द्वारा शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निम्नवत् अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत की जा सकती हैं।

1. **प्रारम्भिक स्तर (Primary Stage)**- प्रारम्भिक स्तर के छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करने के लिए इतिहास के पाठ्यक्रम में लोकगीतों तथा राष्ट्रभक्ति की कहानियों को स्थान देना चाहिए। कहानियॉ भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न व्यक्तियों की होनी चाहिए और उनका प्रतिपादन ऐतिहासिक कार्यक्रम के अनुसार ही किया जाना चाहिए। इस स्तर पर छात्रों को इतिहास के माध्यम से सामाजिक जीवन की स्थितियों का सरलतम ज्ञान कराया जाना चाहिए। उन्हें ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन कराया जाना चाहिए। और उनके सम्मुख यह भी स्पष्ट किया जाना चाहिए कि राष्ट्रीय इतिहास के विकास में उस स्थान के लोगों का क्या योगदान रहा हैं

   इतिहास का पाठ्यक्रम (History Curriculum)- प्रारम्भिक स्तर पर निम्नांकित तथ्यों से सम्बन्धित कहानियों का चयन किया जा सकता हैं–

   i. शिकारी मानव,
   ii. भेड़ों को पालने वाला मानव,
   iii. किसान के रूप में मानव,
   iv. मित्र के मनुष्य, जिन्होनें अनाज पैदा किया
   v. बेबीलोनिया का मनुष्य,
   vi. मोहन जोदड़ों की सभ्यता,

vii. भारतीय आर्य,
viii. फोनेसियन जाति,
ix. ग्रीस की सभ्यता,
x. रोम की सभ्यता आदि।

बन्धुत्व और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए विश्व में अनेकों संस्थाएं कार्य कर रही हैं। उनमें सबसे अधिक योगदान संयुक्त राष्ट्र–संघ का हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास का योगदान (Role of History in the Development of International Undertaking)

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास का शिक्षण अत्यन्त प्रभावी हैं। इतिहास शिक्षण के द्वारा छात्रों में उन अभिरूचियों एवं मनोवृत्तियों का विकास होता हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास में योगदान देती हैं। एच.ए. एलफिशर एवं अलमीरा का विचार हैं कि राष्ट्रीय इतिहास के शिक्षण के पूर्व छात्रों को गुफाओं के मनुष्य बेबीलोनियन, अरबवासियों और रोमवासियों, विभिन्न सभ्यताओं, विश्व के महान सन्तों आदि का ज्ञान कराया जाना चाहिए। छात्रों में सहयोग, सदाचारपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीयता का प्रारम्भ से ही विकास कहानियों के माध्यम से किया जाए।

इतिहास साक्षी हें कि शान्ति, सहयोग, प्रेम बन्धुत्व ही मानव कल्याण का आधार रहा हैं और विश्व शान्ति का प्रेरक भी रहा हैं। इतिहास शिक्षण के द्वारा अशोक महान जैसे प्रकरण के द्वारा छात्रों में मानवता के प्रति प्रेम, सहयोग की भावना पैदा की जा सकती हैं। युद्धों के प्रति घृणा पैदा की जा सकती हैं। चहुँ ओर विकास एवं उन्नति की बयार को बहाया जा सकता हें। इतिहास के माध्यम से मानवता के लिए त्याग जैसी भावनाओं का विकास कर अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का आधार छात्रों में रखा जाता हें, अतः इतिहास ही एक ऐसा विषय हैं जिसके शिक्षण द्वारा अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास किया जा सकता हैं।

2. **माध्यमिक स्तर (Secondary Stage)**- माध्यमिक स्तर के छात्रों में राष्ट्रीय एकता के विकास हेतु छात्रों को देश के विभिन्न छात्रों में राष्ट्रीय एकता के विकास हेतु छात्रों को देश के विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों एवं सामाजिक परिस्थितियों का अवरोध कराना चाहिए। भारत में सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पर बल दिया जाना चाहिए। छात्रों को भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं एवं अन्य संस्कृतियों को उसकी देन आदि के सम्बन्ध में भी बतलाया जाना चाहिए। छात्रों को विभिन्न उदाहरणों, घटनाओं एव तथ्यों के माध्यम से यह बतला देना चाहिए कि भारतीय संस्कृति के विकास में विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों का योगदान रहा हैं, अर्थात् भारतीय संस्कृति विभिन्न जातियों और समुदाय के लोगों के परस्पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का ही परिणाम हैं। इससे छात्रों में परस्पर मतभेद भुलाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा और राष्ट्रीय एकता दृढ़ होगी। इस स्तर के पाठ्यक्रम में विविधता होनी चाहिए।

इतिहास का पाठ्यक्रम माध्यमिक स्तर पर (Curriculum of History at Secondary Stage)

1. विभिन्न राष्ट्रों की सॅस्कृतियों का ज्ञान,
2. विभिन्न राष्ट्रों ने मानव जाति के कल्याण हेतु जो योगदान किया है, उससे परिचित कराना,
3. विभिन्न देशों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों से परिचित कराना,
4. अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का परिचय।

3. **विश्वविद्यालय स्तर पर इतिहास का पाठ्यक्रम (Curriculum of History at University Stage)**- इस स्तर पर इतिहास के पाठ्यक्रम को अधिक व्यापक तथ लचीला बनाना चाहिए। इस स्तर पर विश्व की आधुनिक घटनाओं को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। इस स्तर के पाठ्यक्रमों में निम्नांकित प्रकरणों को समायोजित करना चाहिए–
   1. वे आन्दोलन, जिन्होनें विश्व–बन्धुत्व को बढ़ाने में सहयोग दिया।
   2. विश्व की विभिन्न सॅस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
   3. विश्व के धर्मों, साहित्यों एवं कलाओं का तुलनात्मक अध्ययन।
   4. विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों में इतिहास के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को जन्म देना अत्यावश्यक हैं। इस स्तर पर छात्रों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक विश्वासों का भली–भॉती ज्ञान कराया जाना चाहिए। देश की विविधता में एकता किस प्रकार स्थापित की गई, इसका भी ज्ञान छात्रों को कराया जाना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)- विभिन्न स्तरों के छात्रों को इतिहास की पाठ्वस्तु के अतिरिक्त अन्य शैक्षणिक माध्यमों से भी अन्तर्राष्ट्रीयता का ज्ञान दिया जा सकता हें। इसी कारण इतिहास–शिक्षण एक महत्वपूर्ण उद्धेश्य अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास को भी माना गया। इसका प्रसार अन्य विषयों से भी सम्भव हैं। यथा– कला तथा साहित्य में वर्णित विश्व–मैत्री के सन्देश, विज्ञान का मानव जाति के कल्याण के लिए उपयोग, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में सहायक हो सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल–कूद, संगीत, कलात्मक कार्यक्रमों, छात्रों, शिक्षकों का आयोजन भी सहायक हो सकता हैं। छात्रों, शिक्षकों एवं कलात्मक क्लबों का एक देश से दूसरे देश में जाना और वहॉ की परिस्थितियों का अध्ययन करना भी इस सम्बन्ध में पर्याप्त रूप से सहायक सिद्ध हो सकता हैं।

भारत में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास
(Indian Constitution and Internationalism)

भारत प्राचीन काल से अन्तर्राष्ट्रीयता व विश्व–बन्धुत्व का सन्देश विश्व को देता रहा हें। आजादी के बाद भी भारत धर्मनिरपेक्ष–राष्ट्र हैं, यह उदाहरण भारत की विश्व भ्रातृत्व की भावना को प्रदर्शित करता हैं। इसी कारण भारत को विश्व–गुरू के नाम से पुकारा जाता हैं। यहॉ का इतिहास मानवता, त्याग, स्नेह, अतिथि देवोभव से ओतप्रोत हैं।

भारतीय संविधान और अन्तर्राष्ट्रीयता
(Indian Constitution and Internationalism)

भारतीय संवीधान की धारा–51 में यह उल्लेख किया गया हैं कि–

1. अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा के लिए प्रयास करना।
2. अन्तर्राष्ट्रीय विधि कानूनों का आदर करना और विभिन्न राष्ट्रों में की गई परस्पर सन्धियों को मानने में नैतिक उत्तरदायित्व समझना।
3. विभिन्न राष्ट्रों में न्यायपूर्ण तथा सम्मानपूर्वक सम्बन्ध स्थापित कराने के लिए प्रयास करना।
4. अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को पंच–निर्माण एवं निर्णय से सुलझाना। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देना आदि।

इतिहास शिक्षण अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना बढ़ाने में सहायक
(History Teaching to Promote International Goodwill)

विभिन्न भारतीय शिक्षा आयोगों ने ''इतिहास शिक्षण अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना बढ़ाने में सहायक हैं'' के बारे में निम्न विचार प्रकट किए हैं–

1. **डी.एस. कोठारी शिक्षा आयोग ने** अपने प्रतिवेदन में लिखा हैं– माध्यमिक स्तर पर यथा सम्भव विश्व इतिहास के सन्दर्भ में भारत का इतिहास पढ़ाया जाना चाहिए। उचित स्थानों पर विश्व संस्कृतियों और सामाजिक विकास की विशेषताओं से सम्बन्धित कुछ पाठों में निम्नांकित विषय सम्मिलित किए जाने चाहिए–

   i. भारत में साम्राज्यवाद का उन्मूलन।
   ii. 19वीं सदी में राष्ट्रीयता का विकास।
   iii. समाजवाद एवं मजदूर संघों का विकास।
   iv. फ्रांस की राज्य–क्रान्ति।
   v. यूरोप में पुनर्जागरण की विशेषताएँ।
   vi. अमेरिका का स्वतन्त्रता आन्दोलन।
   vii. विश्व सॅंस्कृति–प्राचीन यूनान, रोम, अरब और चीनी सभ्यता।
   viii. रूस की क्रान्ति।
   ix. इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति।

   आयोग ने अपने प्रतिवेदन में आगे लिखा हैं कि– ''एक ही विश्व के लिए आवश्यक उस अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में कोई विरोध नहीं हैं, जिसकी तरफ हम गतिशील हैं। भारतीय सॅंस्कृति की यह गौरवपूर्ण परम्परा हैं कि वह अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना दिखाए, मानव सभ्यता में विभिन्न देशों तथा जातियों द्वारा दिए गए योगदान का बिना किसी पूर्वाग्रह के पूर्ण मन से मूल्यांकन करें।''

2. **माध्यमिक शिक्षा आयोग** ने इतिहास शिक्षण की महत्ता पर अपने प्रतिवेदन में लिखा हैं– ''आज विश्व में मेरा देश सर्वोत्कृष्ट हैं, भलें ही वह गलत मार्ग पर ही क्यों न हों ''की मनोवृत्ति सर्वाधिक हानिकारक हैं। समस्त विश्व अब इतना अन्तः सम्बन्धित हैं कि कोई भी राष्ट्र एकाकी नहीं रह सकता तथा विश्व नागरिकता की भावना का विकास राष्ट्रीय नागरिकता की भॉति ही महत्वपूर्ण हो गया हैं। वस्तुतः केवल राष्ट्रीय भावना का देश–प्रेम ही पर्याप्त नहीं हैं। इसे इस भावना से पुष्ट किया जाना अपेक्षित हैं कि हम सब एक विश्व के सदस्य हैं।
   उक्त उदाहरणों से माध्यमिक स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने के लिए विश्व इतिहास शिक्षण के निम्न लक्ष्य स्पष्ट होते हैं–

   1. ''मानव सभ्यता के विकास में किसी एक जाति अथवा राष्ट्र का योगदान नहीं है'' विश्व इतिहास शिक्षण से स्पष्ट किया जा सकता हैं।
   2. आधुनिक सभ्यता का विकास अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना से ही हो सकता है।
   3. सभ्यता, संस्कृति तथा मानवता को विनाश से बचाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की महत्ती आवश्यकता हैं, यह तथ्य विश्व इतिहास शिक्षण से विद्यार्थियों को समझाया जा सकता हैं।

4. वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व अन्तर्राष्ट्रीय आयात–निर्यात के माध्यम से अपने नागरिकों की आवश्यकता की पूर्ति कर रहा है। इस प्रकार एक राष्ट्रका नागरिक दूसरे राष्ट्र पर निर्भर हैं, अतः मनुष्य विश्व समाज का ही एक अभिन्न अॅग हैं, यह भावना इतिहास शिक्षण द्वारा ही विकसित की जा सकती हैं।
5. विश्व इतिहास शिक्षण उग्र राष्ट्रीयता की भावना के स्थान पर विश्व राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने में सहायक हैं।
6. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना बढ़ाने में विश्व इतिहास शिक्षण अति महत्वपूर्ण हैं।
7. छात्रों में विश्व इतिहास शिक्षण कर ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना जागृत की जा सकती हैं।

उपर्युक्त प्रकार से यह सत्य हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास बहुत महत्वपूर्ण करता हैं। इसी कारण इतिहास–शिक्षण का महत्वपूर्ण उद्धेश्य अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास को माना गया हैं। इतिहास शिक्षण अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास करने में सहायक हैं, के मत की पुष्टि करते हुए श्री सी.पी. हिल का कथन हैं कि ''इतिहास के अध्यापन से छात्र को सत्य की खोज करने के लिए तत्पर किया जा सकता हैं एवं विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं प्रभावों और उनकी सामाजिक, सॉस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न करके अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सकता हैं।'' अतः इतिहास शिक्षण ''अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का आधार हैं।'' इतिहास शिक्षण ''अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास छात्रों में किया जा सकता हैं।

राष्ट्रीय इतिहास का अर्थ– राष्ट्रीय इतिहास का अर्थ प्राचीन काल से आधुनिक काल तक की ऐतिहासिक घटनाओं का लेखा–जोखा प्रस्तुत करना होता हैं। महत्वपूर्ण घटनाओं का विकास–क्रम उनके कारण एवं परिणाम, समय ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय विकास तथा राष्ट्रीय सभ्यता एवं सॅस्कृति का परिचय मिलता हैं। राष्ट्रीय इतिहास के वास्तविक प्रस्तुतीकरण हेतु यह आवश्यक हैं कि वह राष्ट्रीय एवं वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से लिखा जाए। राष्ट्रीय इतिहास राष्ट्र का दर्पण हैं।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता– राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय एकता आवश्यक हैं। आज देश में विघटनकारी शक्तियॉ निरन्तर बढ़ रही हैं। प्रान्त–भेद, भाषा–भेद, जाति–भेद, धर्म–भेद की प्रवृत्तियॉ भयावह उग्र रूप धारण कर रही हैं। इन सभी अन्तरों को इतिहास शिक्षण के द्वारा ही समाप्त किया जा सकता हैं।

भारत के लिए राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना निम्न कारणों से आवश्यक हैं–

1. विविधता में अपनी एकता बनाए रखने के लिए।
2. राष्ट्रीयता की भावना बनाए रखने के लिए।
3. तीव्र गति से सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक उन्नति को प्राप्त करने के लिए।
4. विभिन्न समूहों की संस्कृति को राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में विकसित राष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए।
5. बाह्य आक्रमणों एवं आन्तरिक खतरों से पूर्ण सुरक्षा प्राप्त करने के लिए।
6. विघटनकारी शक्तियों पर रोक लगाने के लिए।

राष्ट्रीय एकता एवं देश प्रेम के लिए इतिहास का कार्यक्रम– राष्ट्रीय एकता की स्थापना हेतु इतिहास के विभिन्न स्तरों पर शिक्षण कार्यों को निम्नवत् महत्व दिया जाना चाहिए–

1. **प्राथमिक स्तर पर**– इस स्तर पर छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करने के लिए इतिहास के पाठ्यक्रम में राष्ट्र–भक्ति गीत, लोकगीतों, कहानियों, ऐतिहासिक घटनाओं को महत्व दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर के महापुरूषों की जीवनियॉ बनायी जानी चाहिए। छात्रों को स्थानीय ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन कराया जाना चाहिए और यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि राष्ट्रीय इतिहास के विकास में उस स्थान के लोगों का क्या योगदान रहा हैं?
2. **माध्यमिक स्तर पर**– माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय एकता के विकास हेतु छात्रों को देश के विभिन्न क्षेत्रों, सॅस्कृतियों एवं सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। सामाजिक सॉस्कृतिक इतिहास पर बल दिया जाना चाहिए। अनेकता में एकता की अवधारणा का विकास कर आपसी मैत्रीपूर्ण व्यवहार पर बल देना चाहिए।
3. **विश्वविद्यालय स्तर पर**– इस स्तर पर छात्रों को इस तथ्य से परिचित कराया जाना चाहिए कि जब–जब राष्ट्रीय हितों के सामने स्थानीय और क्षेत्रीय हितों को बढ़ावा दिया गया, राष्ट्रीय एकता को धक्का लगा हैं। अतः संकीर्ण दृष्टिकोण से ऊपर उठकर हमें राष्ट्रीय एकता एवं भाईचारे की भावना पर बल देना चाहिए।

प्रश्न–11 इतिहास का विद्यालय के अन्य विषयों से क्या सह–सम्बन्ध हैं?
What is the Co-relation of history with other school subject?

उत्तर सह–सम्बन्ध का अर्थ
(Meaning of Co-relation)

सह–सम्बन्ध अंग्रेजी भाषा के Co-relation शब्द का हिन्दी पर्याय हैं। हिन्दी भाषा में सह–सम्बन्ध के पर्यायवाची अन्य शब्द 'समन्वय' तथा 'समवाय' हैं, जिनका प्रचलन शिक्षा जगत में समान रूप से होता हैं साधारणतः विभिन्न विषयों को एक–दूसरे से सम्बन्धित करके पढ़ाने को सह–सम्बन्ध कहते हें। दूसरे शब्दों में, दो या दो अधिक विषयों के ज्ञान को परस्पर सम्बन्धित कर पढ़ाना सह–सम्बन्ध हैं। इस प्रकार शिक्षक को किसी विषय को पढ़ाते समय उसका सहज एंव स्वाभाविक सह–सम्बन्ध अन्य विषय के साथ जोड़कर पढ़ाना चाहिए, ताकि एक विषय दूसरे विषय के ज्ञान को प्राप्त करने में सहायक हो सके। उदाहरण के लिए– जैसे इतिहास शिक्षण में अशोक के शासनकाल की विशेषताओं को बताते समय उस समय की सामाजिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, वैज्ञानिक प्रगति, भौगोलिक स्थिति आदि पर भी प्रकाश डाले तो इतिहास विषय का सह–सम्बन्ध समाज–शास्त्र, राजनीति–शास्त्र, विज्ञान, भूगोल से स्थापित हो जाएगा तथा इतिहास के साथ–साथ अन्य विषयों का ज्ञान भी छात्र प्राप्त कर लेंगे और ज्ञानपार्जन रूचिकर हो जाएगा।

सह–सम्बन्ध की परिभाषाएँ–

1. **हरबर्ट के अनुसार**– ''पाठ्यक्रम के विषयों को इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए कि जिससे एक विषय के शिक्षण दूसरे विषय के ज्ञान में सहायता मिल सके।''
2. **प्रा. वी.डी. घाटे के अनुसार**– ''विभिन्न विषयों को पृथक एवं संकुचित क्षेत्रों में रखकर नहीं बल्कि उन्हें अन्य विषयों से सम्बन्धित करके पढ़ाया जाना चाहिए।''

3. **डमविल के अनुसार**– ''एक विषय को दूसरे विषय के अधीन करने के सिद्धानत को साधरणतया सह–सम्बन्ध के नाम से उल्लेख किया जाता हैं।''
4. **दीक्षित एवं बघेला के अनुसार**–''वस्तुतः प्राकृतिक रूप से सह–सम्बन्धित विषयों के अध्ययन–अध्यापन के समय उनके परस्पर सहज सम्बन्ध की प्रक्रिया को ही सह–सम्बन्ध कहा जाता हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि विभिन्न विषयों को पारस्परिक रूप (आंशिक) से सम्बन्धित करके पढ़ाना ही सह–सम्बन्ध अथवा समन्वय अथवा समवाया कहलाता हैं।

इतिहास शिक्षण में सह–सम्बन्ध की आवश्यकता– इतिहास का सम्बन्ध समाज से होने के कारण इतिहास को सामाजिक विषय के रूप में स्वीकार किया जाता हैं। इतिहास की विषय–वस्तु में समाज से जुड़े प्रत्येक पहलू आते हैं, जैसे– आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, भौगोलिक, धार्मिक, सॉस्कृतिक, कलात्मक, वैज्ञानिक परिस्थितियों का अध्ययन इतिहास के अन्तर्गत किया जाता हैं। अतः इतिहास शिक्षण में अध्यापन के दौरान अन्य विषयों की जानकारी सह–सम्बन्ध स्थापित करते हुए देना अति आवश्यक हें। सह–सम्बन्ध स्थापित करते हुए शिक्षण करने में गुणात्मक वृद्धि होती हैं। साथ ही शिक्षण भी रूचिकर होती हैं। अतः इतिहास शिक्षण में सह–सम्बन्ध की अति आवश्यकता होती हैं।

इतिहास शिक्षण में सह–सम्बन्ध की उपयोगिता/महत्व/लाभ

(Utility and Imporance of Co-relation in Teaching of History)

1. सह–सम्बन्ध शिक्षण को सरल, स्वाभाविक एवं वातावरण के अनुकूल बनाता हैं। कृत्रिमता को दूर कर प्राकृतिक वातावरण प्रदान करता हें।
2. ज्ञान असीमित हैं। विषय के अनुरूप ज्ञान को पृथक–पृथक किया गया हैं। जब सम्पूर्ण विषयों से प्राप्त ज्ञान का एकीकरण, सह–सम्बन्ध द्वारा करके ज्ञान प्रदान किया जाता हैं तो पूर्णता आ जाती हैं।
3. इतिहास की विषय–वस्तु को समझने के लिए भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, समाज शास्त्र, सॉस्कृतिक इतिहास में आपसी सह–सम्बन्ध स्थापित कर ज्ञान प्राप्ति सरल व सरस होती हैं।
4. सह–सम्बन्ध विषय की जटिलता को दूर करता हैं।
5. सह–सम्बन्ध द्वारा छात्रों में मानसिक योग्यताएँ विकसित होती हैं।
6. सह–सम्बन्ध स्थापित करके विषय–वस्तु प्रभावी व रोचक बन जाती है और छात्रों पर इसका स्थाई प्रभाव पड़ता हैं।
7. इससे अधिगम स्थानान्तरण की योग्यताओं का विकास होता हैं।
8. इसमें समय व श्रम की बचत के साथ सार्थक ज्ञान–अर्जन करने की योग्यता का विकास होता हैं।
9. सह–सम्बन्ध के द्वारा शिक्षक व छात्र दोनों ही सक्रिय रहते हैं, नीरस वातावरण से मुक्ति मिलती हैं।
10. सह–सम्बन्ध विषयों के आपसी सहयोग से छात्रों में सहयोग की भावना व परस्पर निर्भरता की भावना का विकास करता हैं।

इतिहास व अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध

''इतिहास एक विषय ही नहीं, अपितु सभी विषयों का निवास गृह हैं।'' इतिहास का सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से सभी विषयों से हैं, अतः इतिहास को सभी विषयों का निवास–गृह माना जाता हैं। कुछ इतिहासकार इतिहास को सभी विषयों की आत्मा भी कहते हैं। इतिहास के अन्य विषयों से सह–सम्बन्ध को हम निम्नवत् स्पष्ट कर सकते हैं–

1. नागरिक–शास्त्र/राजनीति विज्ञान
2. समाज–शास्त्र
3. भूगोल
4. साहित्य
5. अर्थशास्त्र
6. सामान्य विज्ञान
7. गणित
8. हस्तकार्य

1. **इतिहास का नागरिक शास्त्र अथवा राजनीति विज्ञान से सह–सम्बन्ध (Co-relation of History with Civics) –** इतिहास एवं नागरिक शास्त्र का सम्बन्ध प्राचीन काल से रहा हैं। राजनैतिक कर्त्तव्यों, शासन की जानकारी इतिहास के माध्यम से ही दी जाती थी। वास्तव में इतिहास से ही नागरिक शास्त्र व राजनीति विज्ञान की उत्पत्ति हुई हैं। इतिहास को मानव सभ्यता का आधार माना जाता हें। इतिहास के द्वारा ही हमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उन्नति का विवरण होता हें। इतिहास भूतकाल के द्वारा वर्तमान को स्पष्ट करता हैं तथा भविष्य का पथ–प्रदर्शन करता हैं। नागरिक शास्त्र के द्वारा राजनैतिक तथा सामाजिक समस्याओं का विवेचन किया जाता हें, जिसके लिए इतिहास का आश्रय लेना पड़ता हैं। अतीत की देन ही वर्तमान हैं। अतः विस्तृत इतिहास से ही राजनीति शास्त्र एवं नागरिक शास्त्र का जन्म हुआ हैं।

   नागरिक शास्त्र मानव के कार्यों का एक नवागरिक के रूप में अध्ययन करता हैं, जबकि इतिहास मानव के कार्यों के सामाजिक विकास का विवरण प्रस्तुत करता हैं। नागरिक शास्त्र के सिद्धान्तों का इतिहास के क्रमिक विकास के आधार के रूप निर्माण होता हैं। अतः नागरिक शास्त्र एवं इतिहास का आपस में पूर्ण सह–सम्बन्ध हैं। फ्रीमैन के अनुसार– ''इतिहास भूतकाल की राजनीति हैं।''

   नागरिक शास्त्र से समवाय करते समय यह सावधनी रखने की आवश्यकता हैं कि समवाय उतना ही किया जाए, जितना कि आवश्यक हैं।

2. **इतिहास का समाज शास्त्र से सह–सम्बन्ध (Correlation of History with Sociology)–** इतिहास राजनीतिक कार्यों का विश्वलेषण हैं। इतिहास न केवल अतीत की घटनाओं का वर्णन करता हें वरन् समाज की धारा का भी चित्रण करता हें। वह अद्वितीय घटनाओं का विश्लेषण और उनकी व्याख्या केवल इसी उद्धेश्य से करता हैं, जिससे कि सामाजिक जीवन की धारा को समझने में सहायता मिल सके।

वर्तमान युग के इतिहासकार समाज का समग्र रूप से अध्ययन करते हें। इससे आधुनिक समाज के व्यवहार को समझने में विशेष सहायता मिलती हैं।

इतिहास भी एक सामाजिक विज्ञान हैं। इसलिए कि इतिहास की भी जननी समाज शास्त्र हें। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो सम्बन्ध माता–पुत्र का होता है, वही समाज शास्त्र का इतिहास से हैं। इस प्रकार समाज की आर्थिक व धार्मिक स्थिति, शारीरिक व मानसिक शक्ति तथा खान–पान आदि सभी इतिहास को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार इतिहास व समाज शास्त्र एक–दूसरे को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करते हैं।

3. **इतिहास का भूगोल के साथ सह–सम्बन्ध (Correlation of History with Geography)–**

इतिहास और भूगोल दोनों विषयों का अध्यापन इस प्रकार करना चाहिए कि न तो भौगोलिक घटकों को ही इतना अधिक महत्व दिया जावे कि मानवीय तत्व की चिन्ता न की जाये और न मानवीय तत्व को इतना अधिक महत्व दिया कि भौगोलिक तत्व पचड़े में पड़ जायें। मनुष्य ने वातावरण को बदला हैं और वातावरण द्वारा वह बदल भी गया हैं। उदाहरण के लिए– रूसी लोग अपने देश के भौगोलिक वातावरण को बदल रहे हैं और अपने को वातावरण के अनुकूल भी बना रहे हैं। अपने भौगोलिक वातावरण को बदलने में रूसी इतिहास का सृजन कर रहे है और वातावरण द्वारा प्रभावित होने में भौगोलिक तत्व की महत्त स्वीकार हैं। यही स्थिति स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में हो रही हैं। विशाल मरूस्थल में जलधारा प्रवाहित करके उसे हरा–भरा बनाया जा रहा हैं, आदि। इतिहास के शिक्षक को मानव जीवन पर भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव का ज्ञान होना चाहिए। अतः वह भूगोल का शिक्षण मानचित्र के बिना कभी न करे। अध्यापन काल में ऐसे चित्रों का प्रयोग करें ताकि ऐतिहासिक घटनाओं की भौगोलिक पृष्ठभूमि स्पष्टत दिखाई देती रहे। इतिहास और भूगोल का इतना अधिक सह–सम्बन्ध स्थापित करता चले कि छात्रों को ऐतिहासिक तथ्य बौधगम्य और सरल होते चले।

4. **इतिहास का साहित्य के साथ सह–सम्बन्ध (Correlation of History with Literature)–**

इतिहास और साहित्य का सह–सम्बन्ध अति घनिष्ठ हैं। इतिहास का आरम्भ ही साहित्य के रूप में हुआ था। इतिहास के शिक्षण के साथ–साथ कवियों, नाटककारों, लेखकों, उपन्यासकारों की साहित्यिक रचनाओं का उल्लेख भी किया जाये क्योंकि इन रचनाओं में स्थानीय एवं राष्ट्रीय इतिहास से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियॉ उपलब्ध हो सकती हैं।

5. **इतिहास का अर्थशास्त्र से सह–सम्बन्ध (Correlation of History with Economics)–**

इतिहास और अर्थशास्त्र का चोली–दामन जैसा गहरा सम्बन्ध हैं। समाज की आर्थिक स्थिति ही ऐतिहासिक घटनाओं का निर्माण करती हैं। अनेक युद्ध इसलिए जीते गए क्योंकि विजेता अधिक साधन सम्पन्न था। तथा अनेक युद्ध केवल इसलिए हुए कि आक्रमणकारी समृद्ध देश से लूटकर अपार धन–सम्पदा अपने साथ ले जायें। समाज की आर्थिक स्थिति के कारण ही प्राचीन किले कला तथा साहित्य की प्रगति अतीत में देखी जाती हैं इतिहास आर्थिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग हैं। इतिहास का घटनाक्रम अर्थशास्त्र से प्रभावित होता हें। इतिहास एवं अर्थशास्त्र का पारस्परिक सम्बन्ध हैं। यह दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं।

6. **इतिहास का विज्ञान के साथ सह–सम्बन्ध (Correlation of History with Science)–**

भारत एवं संसार के महान् वैज्ञानिकों के ऐतिहासिक अध्ययन से या शोधों से छात्रों को नवीन तथा वैज्ञानिक ढ़ंग से ज्ञान प्राप्त होता हैं। जो मानव के विकास के लिए अति आवश्यक हैं। इतिहास अतीत को वर्तमान में प्रस्तुत करता हैं, इतिहास व्यक्ति की सफलता तथा असफलता का खजाना हैं। इतिहास की विषय–वस्तु विज्ञान से सम्बन्धित हैं। प्राचीन उड़न–खटोलो से प्रेरित होकर जहाजों का निर्माण किया गया। अतः इतिहास शिक्षण विज्ञान से ज्ञान की व्यापकता की दृष्टि से सह–सम्बन्ध रखता हैं।

7. **इतिहास का गणित के साथ सह–सम्बन्ध (Correlation of History with Mathematics)–** इतिहास के बिना गणित अधूरी हैं–सीले/इतिहास और गणित दोनों विषयों का घनिष्ठता का सम्बन्ध हैं। इतिहास का अध्ययन करते समय गणित समय का प्रयोग भी महत्वपूर्ण हैं। गणित के आधार पर ही ऐतिहासिक कालक्रम का लेखा रखा जाता हैं। ऐतिहासिक मानचित्र, रेखाचित्र ग्राफ आदि गणित के अभाव में नहीं पढ़ाए जा सकते हें। इतिहास शिक्षण के दौरान पायथागोरस, न्यूट, रामानुज, आर्यभट्ट का इतिहास बताकर छात्रों की इतिहास में रूचि उत्पन्न की जा सकती हैं।

8. **इतिहास का हस्तकार्य से सह–सम्बन्ध (Correlation of History with Hand Work)–** इतिहास शिक्षण में हस्तकार्य का बहुत महत्व हैं। शिक्षक की सहायक सामग्री चित्र, मॉडल, रेखाचित्र, मानचित्र, कालक्रम, वंशावली आदि के चार्ट आदि हस्तकार्य करके ही निर्मित किए जाते हैं। छात्र भी 'करके सीखने' में रूचि रखते हैं। इतिहास के प्रकरण किले, गढ़, स्मारक आदि के मॉडल जब छात्र बनाते हैं तो उनमें हस्तकला कार्य एवं हाथ के नियन्त्रण की योग्यताएं समाहित हो जाती हैं। बालक में व्यावसायिक योग्यताओं का विकास भी होता हैं, अधिगम (सीखने) की क्रियाएँ भी अधिक तीव्र हो जाती हैं। हस्तकार्य स्वक्रिया के सिद्धानत पर आधारित होने के कारण छात्र स्वयं करके सीखता हैं। अतः इतिहास का हस्त कार्य से घनिष्ट सह–सम्बन्ध हैं।

निष्कर्ष. निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि इतिहास एक विषय ही नहीं हैं, बल्कि सभी विषयों का निवास–गृह हैं। इतिहास का सह–सम्बन्ध (समवाय) प्रत्येक विषय के लिए उपयोगी हैं।

प्रश्न–1 इतिहास से आप क्या समझते है?
What do you understand by history?

उत्तर 'History' शब्द की उत्पति लेटिन तथा ग्रीक शब्द 'Historia' से मानी जाती है जिसका अर्थ है जानना (Knowledge)। हिन्दी भाषा में इतिहास शब्द को (इति + ह + आस) समझते है तो ज्ञात होता है कि 'कभी ऐसा ही हुआ' अर्थात् सहस्त्रों वर्ष पूर्व मानव की सृष्टि इस पृथ्वी पर हुई थी तब से लेकर आज तक की घटनाएं इतिहास के केन्द्र में समाहित हें। इतिहास सामाजिक जीवन का एक आवश्यक अंग है समाज की रचना में इतिहास का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इतिहास का अर्थ क्या घटित हुआ है? कैसे और क्यों घटित हुआ? अर्थात् व्यापक अर्थ में इतिहास अतीत की घटनाओं का महत्त्वपूर्ण लेखा–जोखा है यह मानव की कहानी का सार्थक ब्यौरा है, जिसमें मानव के जीवन में क्या घटित हुआ है और क्यों घटित हुआ है, का उल्लेख हैं। इतिहास का मतलब है सार्वजनिक घटनाओं का एक क्रमबद्ध लेखा जिसमें तीन विशेषताएं स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैः–

- **i.** इसमें सार्वजनिक घटनाओं का लेखा रहता हैं।
- **ii.** यह घटनाएं निरन्तर होती रहती हैं।
- **iii.** इन घटनाओं का वर्णन इस प्रकार से किया जाता है कि सम्पूर्ण घटनाक्रम का चित्र स्पष्ट हो जाता है।

आधुनिक इतिहासशास्त्री इतिहास को मानव–जीवन के उद्विकास की कहानी मानते है। विकास की यह कहानी अति प्राचीन काल से चली आ रही है, जिसके द्वारा मानव सभ्यता के क्रमबद्ध विकास का दिग्दर्शन होता हैं।

प्रश्न–2 इतिहास शिक्षण की महत्वपूर्ण परिभाषा बताइये।
Define the definition of teaching of history.

उत्तर इतिहास केवल अतीत की घटनाओं का अध्ययन नहीं है वरन् वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में भविष्य की मानव आवश्यकताओं से भी सम्बन्धित है, इतिहास एक ओर वर्तमान को अतीत से जोड़ता हैं, तो दूसरी ओर उसे भावी निर्माण के उपादान के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है यह मानव जाति की भावनाओं तथा कृत्यों का क्रमागत एवं वैज्ञानिक अध्ययन हैं।

- **i.** नेपोलियन के अनुसार– ''इतिहास क्या है? बल्कि काल्पनिक कथाएॅ ही है।''
- **ii.** ''भूतकालीन घटनाओं का उल्लेख ही इतिहास हैं।'' – हैनरी जॉनसन
- **iii.** ''इतिहास घटनाओं या विचारों की उन्नति का सुसम्बद्ध विवरण है।'' – रिपसन
- **iv.** ''इतिहास गतिशील मानव व्यवहार की खोज है।'' – टायाबी
- **v.** ''इतिहास हमारे सम्पूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा लेखा–जोखा है। – प्रो. धाटे
  '(History is scientific study and a record of our complete past)'.
  \- Prof. Ghate
- **vi.** मानव ने जो कुछ किया और कहा है, यहॉ तक कि जो उसने सोचा है, वह इतिहास है।
  – मेटलैण्ड
- **vii.** ''इतिहास वह बौद्धिक स्वरूप है, जिसमें सभ्यता अपने अतीत की चिंता करती है।
  – जॉन हूजिंगा

viii. ''इतिहास राष्ट्र की स्मृति है।'' – डॉ. राधाकृष्णन

ix. ''इतिहास, इतिहासकर तथा उसके तथ्यों के बीच अन्तःक्रिया की अविछिन्न प्रक्रिया तथा वर्तमान और अतीत के बीच अनवरत परिवाद है।''

x. ''इतिहास का अर्थ है– अतीत की घटनाएं जिन्हें कहानियों के रूप में व्यवस्थित किया गया है और जिनका उद्धेश्य है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शिक्षा देना।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि इतिहास मानव द्वारा अतीत में किये गये कार्यों विचारों तथा कथनों का वैज्ञानिक सत्यान्वेषण हैं।

प्रश्न–3 इतिहास शिक्षण के क्षेत्र को स्पष्ट कीजिए।
Explain the scope of history.

उत्तर उद्‌गम अवस्था में इतिहास का क्षेत्र अत्यन्त ही संकुचित था, अपनी प्रारम्भिक अवस्था में इतिहास केवल वीर गाथाओं तक सीमित था। किन्तु समय की धारा के साथ–साथ इतिहास का क्षेत्र व्यापक होता चला गया। इतिहास का क्षेत्र निर्धारित करना यद्यपि किसी भी लेखक या इतिहासकार के लिए जटिल कार्य है लेकिन फिर भी निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता हैं।

1. **प्राचीनकाल**ः – इसमें प्राचीन घटनाओं का वर्णन मिलता हैं, इसमें आदि मानव के विकास जिसका कोई विश्वसनीय इतिहास नहीं है। फिर भी इतिहासकारों ने अपनी खोज एवं कल्पना शक्ति को साकार करते हुए प्राचीन इतिहास को महत्वपूर्ण बनाया हैं।
2. **मध्यकालीन इतिहास**ः – इस काल में विभिन्न देशों का परस्पर सम्पक्र एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान इतिहास को रोचक बनाता हैं। जैसा कि शब्दकोश में लिखा हैं। ''मध्यकालीन इतिहास सामान्य इतिहास का वह भाग है, जो प्राचीन और आधुनिक इतिहास के मध्य आता हैं।
3. **आधुनिक इतिहास**ः – इसके अन्तर्गत आधुनिक काल की ऐतिहासिक घटनाओं, तथ्यों एवं विवरणों का उल्लेख मिलता हैं। शिक्षा शब्दकोश में आधुनिक इतिहास के संदर्भ में लिखा हैं– ''आधुनिक इतिहास वर्तमान शताब्दियों का इतिहास हैं। सामान्यतया पुनर्जागरण काल से प्रारम्भ और वर्तमान तक विस्तृत माना जाता हैं।
4. **आर्थिक इतिहास**ः – समाज के विकास के साथ ही आर्थिक विकास का अभ्युदय हुआ। समाज ने अपनी आजीविका के साधनों को किस प्रकार उपलब्ध किया, इसका ज्ञान इतिहास प्रदान करता हैं।
5. **सामाजिक इतिहास**ः – इसके अन्तर्गत मानव समूहों के वितरण एवं उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता हैं।
   इनके अतिरिक्त इतिहास का क्षेत्र
6. **सवैंधानिक इतिहास**
7. **राजनीतिक इतिहास**
8. **सांस्कृतिक इतिहास**
9. **धार्मिक इतिहास**
10. **विश्व इतिहास** आदि क्षेत्रों तक इतिहास शिक्षण का अध्ययन किया जा सकता हैं।

प्रश्न–4 पाठ्‌यक्रम में इतिहास–शिक्षण की क्या आवश्यकता है?
What is the need of curriculum in Teaching of History?

उत्तर इतिहास एक सामाजिक विषय है। बालकों के उचित समाजीकरण की दृष्टि से, बालकों के समायोजन की दृष्टि से, राष्ट्रीयता की भावना के विकास की दृष्टि से, सांस्कृतिक हस्तान्तरण एवं संरक्षण की दृष्टि से इतिहास के शिक्षण की आवश्यकता है इस आवश्यकता को हम निम्न बिन्दुओं में व्यक्त कर सकते हैं–

1. **परम्पराओं, रीति–रिवाजों और मान्यताओं के परिचय हेतुः** – समाज एवं राष्ट्र की परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं मान्यताओं का इतिहास द्वारा सिर्फ परिचय ही प्राप्त नहीं होता अपितु इनकी व्याख्या भी की जाती है। बालक इन सभी द्वारा लाभान्वित होकर इनके व्याख्यात्मक परिचय द्वारा संरक्षण करते हैं। अतः इतिहास का अध्ययन इस दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक हैं।
2. **सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व धार्मिक प्रगति के ज्ञान हेतुः** – इतिहास के द्वारा हम मानव के द्वारा की गई सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक एवं धार्मिक प्रगति का परिचय प्राप्त करते हैं। इस परिचय के द्वारा हम सम्बन्धित विचार के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों को भी देखते हैं। इस प्रगति के ज्ञान द्वारा हम अपने अतीत को देखकर सुख–दुःख की अनुभूति भी करते है तथा इसी अनुभूति के आधार पर अग्रिम–जीवन के लिए तत्परतापूर्ण निर्णय लेते हैं।
3. **संस्कृति के ज्ञान एवं हस्तान्तरण हेतुः** – इतिहास का शिक्षण सामाजिक, आर्थिक घटनाओं की व्याख्या करने मात्र के लिए नहीं होता अपितु इतिहास के शिक्षण के द्वारा हम अपनी संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर उसे संरक्षित करते हैं। अतः संस्कृति के ज्ञान, संरक्षण एंव हस्तान्तरण की दृष्टि से भी इतिहास का अध्ययन आवश्यक हैं।
4. **अतीत के प्रति अनुराग उत्पन्न करने हेतुः** –इतिहास के शिक्षण के द्वारा हम अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त करते है। ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त अतीत के गौरवशाली क्षणों के प्रति अनुराग करने लगते हैं। यह अनुराग राष्ट्रीय एंव अन्तर्राष्ट्रीय दोनों दृष्ट्रियो से अत्यावश्यक हैं।

प्रश्न–5 पाठ्यक्रम में इतिहास–शिक्षण की क्या आवश्यकता है?
What is the need of curriculum in Teaching of History?

उत्तर इतिहास एक महत्वपूर्ण विषय हैं, पाठ्यक्रम में यह बालक से किसी न किसी रूप में जुड़ा रहता है। शिक्षा–विषयक विभिन्न आयोगों एवं समितियों के सुझावों में इतिहास का स्थान महत्वपूर्ण एवं आवश्यक विषय के रूप में रहा हैं। इतिहास के महत्व को हम निम्नलिखित बिन्दुओं के रूप में देख सकते है।

1. **मानव की विकास प्रक्रिया से परिचित करानाः** – इतिहास के द्वारा हम बालकों को मानव की विकास की प्रक्रिया से अवगत कराते है, मानव ने किस प्रकार किन–किन रूपों में विकास किया हैं। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक रूपों में विकास का क्रम क्या रहा है? प्रसिद्ध इतिहासकार बर्स्टन ने इतिहास के महत्व से सम्बन्धित अपने कथन में कहा हे कि– "एक और तो इसका प्रयोजन विद्यार्थियों को विकास प्रक्रिया के व्यापक प्रसार से परिचित करना होना चाहिए तथा दूसरी ओर जीवन के एक खण्ड का विस्तृत सहायता प्रदान करना।
2. **आदर्शों एवं विचारों का ज्ञानः** – इतिहास के माध्यम से हम सूचनाओं के द्वारा छात्र में आदर्श की भवना विकसित करते है वह जान पाता है कि किस प्रकार अच्छे नागरिकों वाले देश का विकास व उन्नति शीघ्र होती है। नागरिकों के इन कार्यों से छात्र परिचित हो जाते है जिनसे कि राष्ट्र उन्नति में बाधा उत्पन्न होती हैं।
3. **राष्ट्रीयता की भावना का विकासः** – विद्यार्थी अतीत की बातों का ही वर्तमान से मूल्यांकन करते है और अतीत हमें इतिहास से पता चलता हे। बालक जब अपने देश का गौरवपूर्ण इतिहास पढ़ते है तो स्वाभाविक रूप से उनके मन अपने देश व पूर्वजों के प्रति श्रद्धा व सम्मान की भावना आ जाती हैं।
4. **अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकासः** – इतिहास से राष्ट्रीयता की भावना के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास भी होता है। सभी राष्ट्रों का विकास सहयोग से ही हो सकता हैं।

5. **अभिवृति निर्माण हेतुः** – इतिहास के अध्ययन द्वारा हम सम्बन्धित वस्तु एवं विचार के प्रति सकारात्मक, नकारात्मक या तटस्थ भाव अपनाते है। यह अभिवृति राष्ट्रीय–एकता, भावात्मक–एकता की दृष्टि से भी आवश्यक हैं। इस प्रकार इतिहास का शिक्षण अभिवृति निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक हैं।
6. **राष्ट्रीय दृष्टिकोण सेः** – प्रान्तीयता एवं क्षेत्रवाद के कारण अलगाव एवं अतिवादिता ने राष्ट्र को अनेक समस्याएँ दी है। इन समस्याओं के कारण राष्ट्रीय एकता के बीज बोना आवश्यक हैं। यह कार्य इतिहास के माध्यम से किया जा सकता हैं। चूंकि इतिहास तथ्यों एवं घटनाओं की यथातथ्य जानकारी एवं वर्णन करता हैं।
7. **अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना हेतुः** – इतिहास के द्वारा हम राष्ट्रीयता की विचारधारा का प्रसारण ही नहीं करते अपितु अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का प्रसारण भी करते है। यह प्रसारण विश्व के इतिहास, विभिन्न देशों के इतिहास के ज्ञान के द्वारा किया जाता हैं।
8. **व्यावहारिकता के अभिज्ञान हेतुः** – इतिहास हमे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक विचारधाराओं का परिचय करवाकर हमें व्यावहारिक कुशलता प्रदान करता हैं। अनेक इतिहासकारों की दृष्टि से होता हैं। इतिहास के अध्ययन द्वारा विचारों की सम्प्राप्ति के साथ–साथ चिन्तन मनन द्वारा व्यावहारिक समझ प्राप्त होती हैं।
9. **मूल्यों के विकास के लिएः** – बालक का समाजीकरण करना समाज का उत्तरदायित्व की पूर्ति समाज विद्यालय को सोंपता हैं तथा विद्यालय इस कार्य को विभिन्न विषयों के शिक्षण द्वारा सम्पादित करता हैं।

प्रश्न–6 इतिहास–शिक्षण के उद्धेश्य एवं लक्ष्य क्या हैं?
Define the aims and objective of Teaching of History.

उत्तर 1947 में जब भारत स्वतन्त्र हुआ तब भारतीय शिक्षा को उन्नत बनाने में अनेक आयोग गठित हुए, उनकी सिफारिशों के अनुसार देश की शिक्षा–व्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन किये गये परिवर्तन की इस लम्बी कड़ी में इतिहास विषय के उद्धेश्य निर्धारित किये गये जिन्हें निम्न बिन्दुओं के आधार पर जाना जा सकता हैं–

1. **ऐतिहासिक ज्ञान में अभिवृद्धि करनाः** – इतिहास के अध्ययन से सम्बन्धित परिभाषिक शब्दों, तथ्यों, घटनाओं, प्रतीकों–विचारों, समस्याओं, व्यक्तियों, तिथि क्रम एवं सामाजिकरण आदि का ज्ञान कराना इतिहास शिक्षण का उद्धेश्य रहा हैं।
2. **इतिहास के प्रति रूचि उत्पन्न करनाः** – इतिहास शिक्षण द्वारा छात्रों में इतिहास के प्रतिरूचि उत्पन्न करना मुख्य उद्धेश्य हैं। आज के विज्ञान युग में अन्य विषयों की तुलना में विज्ञान का महत्व अधिक हैं। इतिहास शिक्षण के प्रति रूचि उत्पन्न अतीत कालीन मानव एवं उसके क्रियाकलापों का अध्ययन करने से होती है।
3. **मानसिक शक्तियों का विकास करनाः** – इतिहास छात्रों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता हैं। छात्रों में मानसिक शक्तियों का विकास करना इतिहास विषय से ही सम्भव हैं। इतिहास के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों को तक्र, स्मरण एवं निर्णय करने में सहायक होता है, जिससे वह किसी भी घटना को सत्य के आधार पर देखते हैं और निर्णय करते हैं।
4. **अवकाश के सदुपयोग हेतु प्रशिक्षित करनाः** – अवकाश के क्षणों में छात्रों को ऐतिहासिक पर्यटनों के लिए प्रेरित किया जा सकता हैं, जिससे वे ऐतिहासिक तथ्यों, स्थलों एवं घटनाओं का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकते है साथ ही छात्रों में समाचारों की कटिंग करके एलबम बनाने, मॉडल, समय रेखा, समय–चार्ट बनाने, विविध प्रकार के चित्र, मानचित्र एवं सिक्के आदि का संकलन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकता हैं।
5. **राजनैतिक महत्वः** – इतिहास का नैतिक महत्व में महत्वपूर्ण योगदान है, छात्रो में धैर्य, सहानुभूति तथा कर्त्तव्यपरायणता की भावनाओं का विकास किया जा सकता हैं। छात्र सम्पूर्ण घटनाओं का अध्ययन कर छात्र यह परिणाम निकालते हैं कि अन्त में सदैव सत्य की जीत होती है। ऐसे निष्कर्ष छात्रों में नैतिकता का विकास करते हैं।

6. **अनुशासनात्मक महत्व**: – इतिहास–शिक्षण से शुद्ध चिन्तन का विकास होता है और शुद्ध चिन्तन छात्रों के मस्तिष्तक को अनुशासित करता है। इस प्रकार इतिहास शिक्षण का अपना अनुशासनात्मक महत्व भी हैं।
7. **सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व**: – इतिहास में सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला जाता हैं। इन तथ्यों को पढ़कर छात्रों को देश की सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान होता है तथा वे अतीतकालीन सामयिक दशा से परिचित होते हैं।
8. **ज्ञानात्मक महत्व**: – इस विषय को ज्ञान का विशाल सागर कहा जाये तो अनुचित न होगा। किसी भी देश का इतिहास पढ़कर छात्र वहाँ के राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास की जानकारी प्राप्त करके अपने सामान्य ज्ञान का विकास करते है। इतिहास छात्रों की विभिन्न जिज्ञासाओं को तृप्त करने में भी सहायक होता हैं।
9. **विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास**: – इतिहास–शिक्षण छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक भी बनाता हैं। इस विषय का अध्ययन करके छात्रों को ज्ञात होता है कि विश्व के किसी भी भाग में घटित होने वाली कोई भी घटना प्रत्येक राष्ट्र को प्रभावित करती हैं।
10. **देश भक्ति की भावना का विकास करना**: – इतिहास शिक्षण का एक अन्य उद्धेश्य छात्रों में देश भक्ति की भावना का विकास करना हैं। इतिहास विषय का पाठ्यक्रम विभिन्न ऐतिहासिक पुरूषों की जीवनियों से युक्त है, इन जीवनियों से छात्र प्राचीनकाल के राजाओं मध्यकालीन समय के राजपूत शासकों, आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता सुभाष चन्द बोस, भगत सिंह, तिलक, पटेल, गांधी आदि से देश प्रेम, बलिदान एवं शौर्य की भावना विकसित कर सकते हैं।

प्रश्न–7 इतिहास–शिक्षण क्या महत्व हैं?
Describe the importance of History teaching?

उत्तर इतिहास के महत्व को विभिन्न परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित प्रकार से निरूपित किया जा सकता है–

1. **जीवन में सहायक**: – इतिहास सामाजिक वातावरण पर प्रकाश डालता हैं। इतिहास के अध्ययन से ही हम वर्तमान को समझ सकते है भविष्य के बारे में निर्णय कर सकते है सामाजिक समस्याओं को हल कर सकते हैं। इस प्रकार इतिहास का शिक्षण मानव जीवन के लिए लाभप्रद सिद्ध होता हैं।
2. **ज्ञान वृद्धि का साधन**: – इतिहास के अध्ययन द्वारा छात्र विभिन्न राष्ट्रों, समाजों, संस्कृतियों, परम्पराओं तथा संस्थाओं का ज्ञान प्राप्त करता हैं। इससे छात्र के ज्ञान में वृद्धि होती हैं।
3. **मानसिक परिपक्वता**: – ऐतिहासिक तथ्यों को याद करने से छात्र की स्मरण शक्ति का विकास होता हैं, विभिन्न संस्कृतियों तथा सभ्यताओं के अध्ययन में कल्पना, शक्ति का विकास होता हैं। छात्र इतिहास के अन्दर विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक विवाद–ग्रस्त विषयों का अध्ययन करता है, जिससे वह प्रतिदिन जीवन में आने वाली समस्याओं को सुलझाना सीख जाता हैं। जिससे छात्र में मानिसिक विकास होता हैं।
4. **खुशहाल जीवन**: – इतिहास का अध्ययन छात्र को इस योग्य बनाता हैं कि वह अपनी समसामयिक समस्याओं को भली प्रकार समझ सके।
5. **व्यापक दृष्टिकोण का विकास**: –इतिहास शिक्षण के द्वारा छात्र में भावात्मक और राष्ट्रीय एकता का विकास किया जा सकता है वर्तमान परिस्थिति की यह मॉग है कि छात्रों में व्यापक दृष्टिकोण का विकास किया जाये। इस सन्दर्भ में विभिन्न जातियों के लोगों ने राष्ट्रीय संस्कृति और सभ्यता के विकास में योगदान दिया हैं।

6. **व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता**: – इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात् अध्यापक कार्य सुगमतापूर्वक संचालित किया जा सकता हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी नौकरी में प्रशासकीय कार्यों के लिए पत्रकारिता एवं विदेश विभाग में कार्य करने के लिए इतिहास का ज्ञान होना आवश्यक हैं।

प्रश्न–8 उद्धेश्य एवं प्राप्य उद्धेश्यों में अन्तर बताइये।
Explain the differences between aims and objectives.

उत्तर किसी भी कार्य की सफलता के लिए एक निश्चित उद्धेश्य अर्थात् लक्ष्य का होना आवश्यक हैं, क्योंकि लक्ष्य विहिन क्रिया पूर्ण रूप से व्यर्थ होती है, इसी प्रकार उद्धेश्य रहित शिक्षण भी महत्वहीन हो जाता है।

"प्राप्य उद्धेश्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है, जो विद्यालय द्वारा पथ प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।" — कार्टर वी.गुड

क्रमांक	उद्धेश्य	प्राप्य उद्धेश्य
1.	लक्ष्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है।	प्राप्य उद्धेश्य की प्राप्ति का दायित्व शिक्षा एवं विषय वस्तु पर आधारित होता है।
2.	लक्ष्य निश्चित होता हैं	प्राप्य उद्धेश्य विशिष्ट होता है।
3.	लक्ष्य एक सामान्य कथन होता हैं।	प्राप्य उद्धेश्य एक निश्चित कथन होता हैं।
4.	सापकता के कारण उद्धेश्य एक आदर्श–कथन होता हैं।	प्राप्य उद्धेश्य का सम्बन्ध केवल कक्षा की परिस्थितियों से होता हैं।
5.	उद्धेश्य सीखने वालों को स्पष्ट एवं निश्चित निर्देश प्रदान नहीं करता।	प्राप्य उद्धेश्य छात्रों को एक पूर्व निर्धारित निर्देश देता हैं।
6.	लक्ष्य दीर्घ अवधि तक चलते हैं।	प्राप्य उद्धेश्य अल्पकालिक होते हैं।
7.	लक्ष्य आदर्शवादिता से परिपूर्ण होते हैं, जिनकी पूर्ण रूप से प्राप्ति असम्भव होती हैं।	प्राप्य उद्धेश्य व्यावहारिक होते है तथा इनकी प्राप्ति भी सरल होती हैं।
8.	लक्ष्य गहन व्यापक तथा विस्तृत होते है।	प्राप्य उद्धेश्य संक्षिप्त, संकुचित एवं सूक्ष्म होते हैं।

प्रश्न–9 शैक्षिक उद्धेश्य एवं शिक्षण उद्धेश्य में क्या अन्तर हैं?
Differentiate between Education Objectives and Teaching Aims?

उत्तर शैक्षिक उद्धेश्य ही शिक्षार्थियों में शिक्षण उद्धेश्य की पूर्ति करते हैं। यदि शिक्षक व्यापक उद्धेश्यों के साथ अपनी पाठ योजना तैयार नहीं करेगा तो कक्षागत व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन नही ला पायेगा। शैक्षिक उद्धेश्य एवं शिक्षण उद्धेश्य में अन्तर निम्न तालिका से समझाा जा सकता हैं।

क्रमांक	शैक्षिक उद्धेश्य	शिक्षण उद्धेश्य

1.	इनका सम्बन्ध शिक्षा क्रम के समस्त विषयों से होता हैं। अतः ये अपनी प्रकृति में व्यापक होते है।	इनका सम्बन्ध केवल एक ही विषय पर होता हैं। अतः इनका क्षेत्र सीमित होता हैं।
2.	ये सामान्य होते हें, अर्थात् चरित्र का निर्माण देश प्रेम की भावना का विकास, नैतिकता का विकास करना आदि।	ये विशिष्ट होते है, अर्थात् किसी विषय विशेष में व्यवहारगत परिवर्तन लाते हैं।
3.	इनमें शिक्षण उद्धेश्य निहित होते हैं।	इनकी सहायता से शैक्षिक उद्धेश्यों की प्राप्ति की जाती हैं
4.	ये लम्बे समय के बाद ही प्राप्त होते हैं।	ये अल्प समय में या एक कालांश में भी प्राप्त किये जा सकते हैं।
5.	इनकी पृष्ठभूमि अतीत से जुड़ी रहती हैं, जो देश, समाज, समुदाय	इनकी पृष्ठभूमि तत्कालीन आवश्यकताओ से जुड़ी होती है इसमें कक्षागत व्यवहार विषयवस्तु महत्वपूर्ण होती हैं।
6.	इनको परिभाषित करना जटिल हैं क्योंकि ये अनेक मूल्यों से सामंजस्य रखते हैं।	इनको परिभाषित करना सरल हैं क्योंकि ये लक्ष्य प्रेरित होते हैं।
7.	इनको व्यावहारिक बनाने के लिए शिक्षण उद्धेश्य का निर्माण किया जाता हैं।	इनको व्यावहारिक बनाने के लिए बातों में अपेक्षित परिवर्तन लाया जाता हैं।

प्रश्न–10 इतिहासकारों ने इतिहास को किन स्तरों में विभाजित किया है? इन स्तरों को विस्तार से समझाइये।

How many levels are described by historian in History Teaching? Define each level in details.

उत्तर इतिहास की विषय–वस्तु अविभाज्य हैं, इसे खण्डित करना सरल नहीं हैं, पर इतनी व्यापक विषय–वस्तु को कब कैसे पढ़ाया जाये? इस प्रश्न के उत्तर में सम्भवतः इतिहासकारों ने इतिहास विषय को विभिन्न स्तरों पर विभाजित करने की प्रेरणा दी हैं। सुविधा एवं सरलता के लिए इतिहास के निम्न स्तर दिखाई देते हैं, जिससे विषय–वस्तु में अखण्डता भी बनी रहती हैं और अध्ययन कार्य भी सरलतापूर्वक संचालित हो जाता हैं इतिहास के स्तर निम्न हैं–

1. **स्थानीय इतिहासः** – इतिहास शिक्षण में स्थानीय इतिहास के अध्ययन का विशेष महत्व हैं। यह इतिहास अध्ययन की प्रथम इकाई हैं। विकास की दृष्टि से देखा जाये तो ज्ञात होता हैं कि स्थानीय इतिहास प्रथम चरण में छात्रों को पढ़ाया जाना चाहिए क्योंकि स्थानीय इतिहास की पृष्ठभूमि में ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास को समझा जा सकता हैं। इस प्रकार स्थानीय इतिहास बालक के पास–पड़ोस का ऐतिहासिक ज्ञान हैं जिसे गृह इतिहास भी कहा जाता हैं। प्रो. घाटे ने स्थानीय इतिहास के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा हैं– ''स्थानीय इतिहास का अभिप्रायः आवश्यक रूप से उस नगर अथवा ग्राम के इतिहास से नहीं है, जिसमें बालक रहता हैं। इसमें उस आस–पड़ोस का इतिहास भी सम्मिलित हैं, जिससे बालक परिचित हैं अथवा परिचित कराया जा सकता हैं।''

स्थाानीय इतिहास का अध्ययन इतिहास शिक्षण के लिये विशेष उपयोगी हैं। इससे उन विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं और आन्दोलनों को रोचक एवं प्रभावपूर्ण ढ़ंग से स्पष्ट किया जा सकता हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय इतिहास को प्रभावित किया हैं।

स्थानीय इतिहास के अध्ययन के उद्धेश्य–

1. बालकों को उनके आस–पड़ोस का ज्ञान कराना।
2. बालकों की निरीक्षण शक्ति का विकास करना।
3. बालकों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में योग देना।
4. बालकों को प्रत्यक्ष निरीक्षण द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी कराना।
5. छात्रों को स्थानीय स्थान के अध्ययन से विश्व अध्ययन की जानकारी के लिए प्रेरित करना।
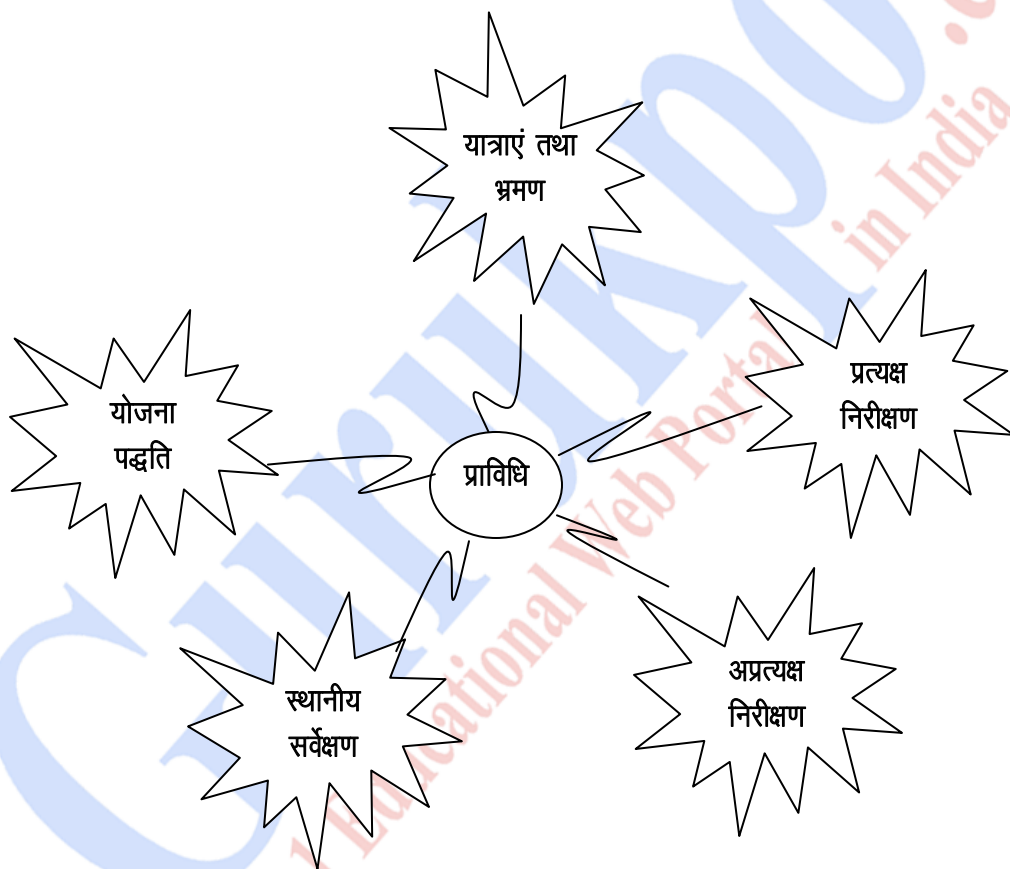
प्रत्यक्ष निरीक्षण– स्थानीय इतिहास के अध्ययन में ऐतिहासिक तथ्यों एवं घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन करना अति आवश्यक हैं। प्रत्यक्ष विधि से विद्यार्थी समस्त तथ्यों का अनुभव करते हुए सीखते हैं। योकम सिम्पसन ने कहा कि 'निरीक्षण ज्ञानेन्द्रिय सम्बन्धी सीखने की विधि हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने चारों ओर के विश्व का ज्ञान प्राप्त करता हैं।

अप्रत्यक्ष निरीक्षण: – इस विधि में शिक्षक छात्रों के समक्ष अनेक सहायक सामग्री यथा– मानचित्र, रेखाचित्र ऑकड़ें आदि के प्रतिरूप प्रस्तुत करता हैं। तकनीकी विकास ने टेप, फिल्म, स्ट्रिप्स, स्लाइडों ने भी इस विधि को व्यापक बनाया हैं। यह विधि कक्षा–कक्ष में ऐतिहासिक वातावरण निर्मित करती हैं।

स्थानीय सर्वेक्षणः – स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण स्थानीय इतिहास की जानकारी प्राप्त करने का उपयोगी साधन हैं। इस विधि में छात्र स्थानीय प्राचीन इमारतों, मन्दिर, मस्ज़िदों, राजमार्गों, नगर, कस्बा, कारखाने आदि का सर्वेक्षण कर सकता हैं।

योजना पद्धतिः – स्थानीय ऐतिहासिक वस्तुओं के रख–रखाव के लिए यह पद्धति सार्थक हैं। छात्रों को ऐतिहासिक वस्तुओं के रख–रखाव की जानकारी इतिहास कक्ष का निर्माण आदि के द्वारा हम पद्धति का क्रियान्वयन कर सकते हैं।

Unit-II

Curriculum and Planning

- Meaning and Concept of curriculum
- Fundamental principles of formulating curriculum in History and critical appraisals of the existing syllabus.
- Lesson Plan- Annual Plan, Unit Plan and Daily lesson plan of teaching History.
- Qualilties and Professional growth of History teacher, his role in future prospective.

प्रश्न–1 प्रयोजना विधि के प्रवर्तक है–

(अ) डीवी (ब) मॉरीसन

(स) किल पैट्रिक (द) मॉरीसन (स)

प्रश्न–2 इकाई विधि के प्रवर्तक है–

अ) डीवी (ब) मॉरीसन

(स) किल पैट्रिक (द) मॉरीसन (ब)

प्रश्न–3 ''प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन का एक छोटा सा अंश है, जिसको विद्यालय में प्रतिपादित किया जाता है''। यह कथन है।

अ) किल पैट्रिक का (ब) स्टीवेन्सन का

(स) बैलार्ड का (द) रास का (स)

प्रश्न–4 निरीक्षण अध्ययन विधि से तात्पर्य है?

अ) पर्यवेक्षक से (ब) पढ़ाने से

(स) समझाने से (द) कठिनाईयॉ दूर करने से (अ)

प्रश्न–5 जीवन गाथा विधि किस विषय के उपर्युक्त है–

अ) इतिहास (ब) विज्ञान

(स) गणित (द) भौतिक विज्ञान (अ)

प्रश्न–6 वर्तमान में हमारी शिक्षा किस शिक्षक उद्धेश्यों पर आधारित है?

अ) ब्लूम (ब) हार्बर्ट

(स) गिलफोर्ड (द) किल पैट्रिक (ब)

प्रश्न–7 प्रस्तावना प्रश्न सम्बन्धित होते है?

अ) पूर्व ज्ञान से (ब) समझ से
(स) मानसिक अध्ययन से (द) इनमें से कोई नहीं (अ)

प्रश्न–8 अभिप्रेरण प्रश्न आधारित होते है?
अ) नवीन ज्ञान पर (ब) पूर्व ज्ञान पर
(स) अनुभवों के ज्ञान पर (द) दूसरों के स्थान पर (स)

प्रश्न–9 विचारात्मक प्रश्न पूछे जाते है?
अ) प्रस्तावना में (ब) प्रस्तुतीकरण में
(स) बोध जॉच में (द) पुनरावृत्ति में (स)

प्रश्न–1 शिक्षाक्रम एवं पाठ्यचर्या में अन्तर बताइये?
What is the difference between Curriculum and Syllabus?

उत्तर शिक्षाक्रम का क्षेत्र अति व्यापक हें, शिक्षाक्रम के अन्तर्गत काल, विद्यालय, पुस्तकालतय, प्रयोगशाला, वक्रशॉप, खेल का मैदान, सॉस्कृतिक कार्यक्रम, भ्रमण आदि सभी आते हें। जो बालक को आलराण्ड डवलमेण्ट करते हैं। पाठ्यचर्या मुद्रित सन्दर्शिका हैं, जो यह बताती हैं कि छात्र को क्या सीखना हैं? इसके अन्तर्गत छात्र को विषय की जानकारी पाठ्य पुस्तक के आधार पर दी जाती हैं।

शिक्षाक्रम एवं पाठ्यचर्या में अन्तर–

क्रमांक	शिक्षाक्रम/पाठ्यक्रम (Curriculum)	पाठ्यचर्या (Syllabus)
1.	शिक्षाक्रम का क्षेत्र अति व्यापक है।	शिक्षाक्रम का ही एक अंग हैं।
2.	शिक्षाक्रम में विद्यालय के अन्दर तथा बाहर होने वाली सभी क्रियाओं गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता हें।	पाठ्य पुस्तक को ही सम्मिलित किया जाता हैं।
3.	पाठ्यक्रम राष्ट्रीय एवं सॉस्कृतिक मूल्यों का विकास करता हैं।	इसके द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों का विकास नहीं होता।
4.	पाठ्यक्रम बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के चहुॅमुखी विकास से सम्बन्धित हें।	पाठ्यचर्या छात्र के विषय के ज्ञान के विकास पर बल देता हैं।
5.	पाठ्यक्रम में शैक्षिक/सह–शैक्षिक/भौतिक क्षेत्र समाहित हैं।	पाठ्चर्या केवल शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति करता हैं।
6.	शिक्षाक्रम का दृष्टिकोण बाल केन्द्रित हैं।	पाठ्यचर्या का दृष्टिकोण शिक्षक केन्द्रित हैं।
7.	पाठ्यक्रम बालक के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखता हैं।	पाठ्यचर्या उच्च शिक्षा का लक्ष्य रखता हैं।

8.	पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं।	यह अमनोवैज्ञानिक हैं।
9.	रूचिकर एवं अधिगम आधारित हैं।	अरूचिकर, बोझिल एवं बौद्धिक विकास पर आधारित हैं।

प्रश्न–2 इतिहास के पाठ्यक्रम के उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
Explain the Aims of Curriculum.

उत्तर इतिहास के पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को सामाजिक, ऐतिहासिक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण युक्त शिक्षा प्रदान करना है।

इतिहास पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्न हैं–

1. छात्रों का सर्वांगीण विकास।
2. छात्रों की रूचियों, योग्यताओं, अभिवृत्तियों व क्षमताओं का विकास।
3. धर्मनिरपेक्षता एवं प्रजातन्त्र की भावना का विकास।
4. जीवन क्रियाओं तथा विषयों की दूरी कम करना।
5. व्यक्तिगत योग्यताओं का विकास।
6. छात्रों को सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों से अवगत कराना।
7. पाठ्यक्रम से छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास।
8. छात्रों को लोकतन्त्र के अच्छे नागरिक बनाने में सहायता देना।

प्रश्न–3 दैनिक पाठ योजना क्या हैं? हम इसे क्यों और कैसे बनाते है?
What is Daily Lesson Plan? Why we make it and how?

उत्तर सफल शिक्षण के लिये पाठ योजना का होना आवश्यक हैं। वैज्ञानिक रूप से की गई क्रमबद्ध तैयारी को ही पाठ योजना कहते हैं। अध्यापक को जो विषय पढ़ाना हैं, उसको अच्छी तरह तैयार करके तीन–चार हिस्सों में बॉटकर अच्छी प्रकार से समझाना, पाठ योजना बनाकर पढ़ाना कहलाता हैं। पाठ योजना को कार्य की योजना भी कहा जाता हैं।

पाठ योजना की परिभाषाऍं–

डेविस महोदय के अनुसार– '' कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए, क्योंकि शिक्षक की प्रगति के लिये कोई बात इतनी बाधक नहीं हैं, जितनी कि शिक्षण की अपूर्ण तैयारी।''

शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोष के अनुसार– ''पाठ योजना किसी पाठ के महत्वपूर्ण बिन्दुंओं से सम्बतन्धित एक ऐसी रूपरेखा हैं, जिसमें उनको उसी क्रम में व्यवस्थित किया जाता हें, जिस क्रम में अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के सामने उन्हें रखा जाता हैं।''

पाठ योजना बनाने के उद्देश्य–

1. शिक्षण कार्य को व्यवस्थित एवं सुसंगठित करना।
2. समय नष्ट होने से बचाना।
3. विचार रहित शिक्षण के दोषों को दूर करना।
4. पाठ का उद्देश्य निश्चित करना।

5. नये पाठ का पूर्व पाठ से सम्बन्ध स्थापित करना।
6. उत्तम शिक्षण विधि चुनने में सहायता करना।
7. शिक्षण की सफलता का मूल्यांकन करना।
8. उपयुक्त सहायक सामग्री का आयोजन करना।
9. शिक्षक को क्रमबद्ध एवं नियमबद्ध कार्य करने की प्रेरणा देना।
10. बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर शिक्षण कार्य करना।

पाठ योजना का स्वरूप–

1. **परिचर्यात्मक सूचना–**
   - i. दिनांक
   - ii. कालांश
   - iii. कक्षा व वर्ग
   - iv. विषय
   - v. प्रकरण
2. **उद्देश्य–**
   - i. ज्ञान
   - ii. अवबोध
   - iii. ज्ञानोपयोग
   - iv. कौशल
   - v. अभिरूचि
   - vi. अभिवृत्ति
3. सहायक सामग्री
4. पूर्व ज्ञान
5. प्रस्तावना
6. पाठ का विकास

शिक्षण बिन्दु	अध्ययन–अध्यापन संस्थितियां		
	छात्राध्यापक क्रियाएँ	शिक्षार्थी क्रियाएँ	श्यामपट्ट सार

7. पुनरावृत्ति प्रश्न
8. मूल्यांकन प्रश्न
9. गृह कार्य

प्रश्न–4 इकाई योजना से आप क्या समझते हैं? व्याख्या कीजिए।

What do you understand by Unit Plan? Explain it.

उत्तर यह योजना 'गेस्टाल्ट मनोविज्ञान' पर आधारित हैं। अध्यापक को शिक्षण–प्रशिक्षण प्रक्रिया में प्रत्येक प्रकरण क्रमबद्ध योजना में प्रस्तुत करते हुए दैनिक पाठ योजनाओं में इकाई योजना का प्रयोग कर अपने शिक्षण कार्य को स्वाभाविक एवं प्रतिभाशाली बनाना चाहिए।

इकाई योजना की परिभाषाएँ– विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने 'इकाई योजना' को सोद्धेश्य क्रियाओं का संगठन माना हैं, जो किसी न किसी समस्या से सम्बन्धित होती हैं। पहले विषय वस्तु को समग्र रूप में प्रस्तुत करती हैं और बाद में अनुभवों, क्रियाओं और व्यवहारों से सम्बन्ध स्थापित करती हैं। इस प्रकार 'इकाई पाठ योजना' शिक्षण प्रक्रिया को स्पष्ट, प्रभावशाली एवं उपयोगी बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

रिस्क के अनुसार– ''इकाई किसी योजनात्मक समस्या से सम्बन्धित अधिगम की सम्पूर्णता का प्रतीक हैं।''

मॉरिसन के अनुसार– इकाई वातावरण, संगठित विज्ञान, कला का आचरण का एक व्यापक एवं महत्वपूर्ण अंग होती है, जिसे सीखने के फलस्वरूप व्यक्तित्व में सामंजस्य आ जाता हैं।''

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद– ''इकाई एक निर्देशात्मक युक्ति हैं, जो छात्रों को समवाय रूप में ज्ञान प्रदान करती हैं।''

जेम्स एल.ली. के अनुसार– ''इकाई किसी प्रकरण या समस्या के विभिन्न अर्न्तसम्बन्धित रूपों को जानने के लिये विषय सूची प्रक्रिया का सामान्य ढॉचा हैं।''

उपर्युक्त परिभाषाएँ पूर्ण रूप से मान्य नहीं हैं, क्योंकि अभी तक कोई ऐसी परिभाषा नहीं आई, जो सभी शिक्षाविदों को मान्य हो।

प्रश्न–5 इकाई योजना के शिक्षण सोपान कौन–कौन से हैं? स्पष्ट कीजिए।
Describe the step of Unit Plan? Give clarification about them.

उत्तर कुछ विद्वानों ने इकाई योजना को शिक्षण विधि के रूप में प्रयुक्त करने का प्रयास किया। इसमें मॉरिसन का नाम उल्लेखनीय हैं। मॉरिसन ने इसको कक्षा शिक्षण के लिये उपयोगी बनाने के लिये पांच पदों का प्रतिपादन किया। रिस्क ने इस विधि के लिए तीन पदों का प्रतिपादन किया हैं। इन दोनों विद्वानों के द्वारा निर्धारित शिक्षण पदों को पृथक–पृथक विवेचन नीचे किया जा रहा हैं–

रिस्क– ने लिखा हैं– ''इकाई विधि में इकाई का विकास करने के लिये प्रमुख मनोवैज्ञानिक पदों का अनुसरण किया जाता हैं।'' रिस्क ने इकाई शिक्षण के लिये निम्नलिखित तीन पद बताये हैं–

1. इकाई की प्रस्तावना एवं युक्तियॉ
2. इकाई का विकास
3. इकाई की पूर्ति

मॉरिसन द्वारा प्रतिपादित शिक्षण पद– मॉरिसन ने इकाई शिक्षण के लिये निम्नलिखित पॉच पद प्रतिपादित किये हैं–

1. **अनुसंधान**– इस पद पर शिक्ष कइस बात का पता लगाता हैं कि नवीन इकाई के सम्बन्ध में छात्रों को कितना पूर्व ज्ञान है। शिक्षक छात्रों के पूर्व ज्ञान की खोज निम्नलिखित युक्तियों एवं रीतियों कर सकता हैं–
   अ. लिखित परीक्षा द्वारा

ब. मौखिक प्रश्नों द्वारा

स. विचार–विमर्श द्वारा

2. **प्रस्तुतीकरण**– इस पद पर शिक्षक इकाई की विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष बातचीत या व्याख्यान के द्वारा प्रस्तुत करता हैं। इसके बाद वह प्रश्नों द्वारा यह जानने का प्रयास करता हैं कि छात्र इकाई की विषय वस्तु को समझ गये हैं या नहीं। यदि छात्र नहीं समझ पाये हैं तो शिक्षक उनको पुनः प्रस्तुत करेगा।
3. **क्रियान्वित करना**– इस पद पर छात्रों को इकाई की विषय वस्तु को आत्मसात करने का अवसर प्रदान किया जाता हैं। इस सोपान पर छात्र निम्नलिखित माध्यम से विषय–वस्तु को आत्मसात कर सकते हैं–

   अ. अध्ययन करके

   ब. लिखकर

   स. एक–दूसरे से बातचीत करके तथा

   द. शिक्षक से परामर्श करके
4. **संगठन**– इस पद पर छात्र इकाई की विषय–वस्तु को व्यवस्थित रूप में लिखकर ज्ञान को संगठित करते हैं।
5. **कथन (वाचन)**– अब छात्र सभी या महत्वपूर्ण अंशों का मौलिक व क्रमबद्ध वर्णन करने की स्थिति में होते हैं। यह चरण बोलने का प्रशिक्षण देने के लिये महत्वपूर्ण होता हैं।

प्रश्न–6 अच्छी पाठ योजना की विशेषताऍं लिखिए।

Write down the characteristics of Good Lesson Plan.

उत्तर पाठ योजना बनाने के बहुत से लाभ हैं। परन्तु यह लाभ तभी प्राप्त होते हैं, जब उसे उचित ढ़ंग से बनाया जाए। एक उत्तम पाठ योजना में निम्नलिखित विशेषताऍं होती हैं–

1. **लिखित पाठ योजना**– पाठ योजना लिखित रूप से तैयार की जानी चाहिये। लिखित योजना में निश्चयता आती हैं। इसके आधार पर दूसरे पाठ की योजना बनाना सम्भव होता हैं।
2. **भली–भॉंती सोची समझी योजना हो**– यदि पाठ योजना को सोच समझकर बनाया जाये तो अधिक उपयुक्त होता हें, क्योंकि इससे उद्देश्यों को प्राप्त करने में सुविधा होती हैं।
3. **विषय–वस्तु का पूर्ण ज्ञान**– अध्यापक को जिस विषय–वस्तु की योजना बनानी हैं, उसे उसका पूरी तरह ज्ञान होना चाहिये।
4. **पाठ के उद्देश्य निश्चित तथा स्पष्ट**– पाठ योजना के विशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिये तभी पाठ को अच्छे ढ़ंग से चलाना सम्भव हो सकेगा।
5. **पाठ योजना के क्रियान्वयन में विचलन नहीं**– अच्छी पाठ योजना की यह प्रमुख विशेष्ता हैं कि पूर्ण नियोजित पाठ योजना लागू करते समय वास्तविक पाठ योजना से विचलित नहीं होती हैं।
6. **पाठ योजना का विकास बच्चों की सहायता**– हर उत्तम पाठ योजना बच्चों के पूर्व ज्ञान के आधार पर निर्मित होती है। इसलिये इसमें किसी भी पद का विकास बच्चों के सहयोग से होता हैं।
7. **विधियों, साधनों और युक्तियों के बारे में स्पष्टता**– पाठ योजना में यह स्पष्ट होना चाहिये कि विधियों, साधनों और युक्तियों का प्रयोग करना हैं। अध्यापक को पहले से ही स्पष्ट हो कि वह कौन–कौनसे साधनों का उपयोग करेगा और कौन–कौनसे उपकरणों का उसने उपयोग करना हैं।
8. **बच्चों की रूचि निरन्तर बनाये रखना**– एक सर्वोत्तम पाठ योजना बच्चों की रूचि को पूरी शिक्षण प्रक्रिया के दौरान बनाये रखती हैं।
9. **छात्रों को व्यक्तिगत सहायता**– पाठ योजना में छात्रों की व्यक्तिगत सहायता का भी प्रावधान होना चाहिये।
10. **समय**– पाठ योजना में यह भी स्पष्ट होना चाहिये कि पाठ कितने समय में पूर्ण होगा।

11. **लचीलापन**– एक उत्तम पाठ योजना में शिक्षक और शिक्षार्थियों के कार्य निश्चित होने के बावजूद यह इतनी लचीली होनी चाहिये कि अध्यापक को अपनी परिस्थिति विशेष में इधर–उधर होने की गुंजाइश रहे।

प्रश्न–7 इतिहास के पाठ्यक्रम में से कोई एक प्रकरण चुनिए और पढ़ाने से पहले प्रकरण की प्रस्तावना के लिये उपयुक्त प्रश्न लिखिए।

Choose one topic in History curriculum and write down the introductory questions before the lesson.

उत्तर **प्रकरण विश्व की प्रमुख सभ्यताएँ**

प्रस्तावना प्रश्न–

क्रमांक	छात्राध्यापिका क्रियाएँ	विद्यार्थी क्रियाएँ
प्र. 1	भारत की प्रमुख सहायक नदियॉ कौन–कौनसी हैं?	भारत की प्रमुख सहायक नदियॉ– गंगा, यमुना, सिन्धु तथा सरस्वती आदि नदियॉ हैं।
प्र. 2	इन नदियों की घाटियों के किनारे विकसित होने वाली सभ्यताओं को क्या कहते हैं?	इन नदियों की घाटियों के किनारे विकसित होने वाली सभ्यताओं को नदी घाटी सभ्यताएँ कहते हैं।
प्र. 3	इन नदी घाटी सभ्यताओं के किनारों पर किसके अवशेष मिले हैं?	इन नदी घाटी सभ्यताओं के किनारों पर मानव समूहों के अवशेष मिले हैं।
प्र. 4	इन नदियों के किनारे घूमकर मानव समूहों में किस भावना का जन्म हुआ?	इन नदियों के किनारे घूमकर मानव समूहों में बस्ती बनाकर रहने की भावना का जन्म हुआ।
प्र. 5	बस्ती बनाकर रहने के कारण मानव समूहों ने किसका विकास किया?	अस्पष्ट उत्तर (समस्यात्मक प्रश्न)

प्रश्न–8 इतिहास शिक्षक के केवल गुण लिखिए।

Define the quality of good teacher of history teaching.

उत्तर **इतिहास शिक्षक के गुण**– इतिहास शिक्षक के गुणों को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता हैं–

H = Historical Ability = एतिहासिक योग्यता।

I = Intelligent = बुद्धिमान।

S = Sincere = सत्यनिष्ठ।

T	=	Time Sense	=	समय का पाबन्द।
O	=	Organiser	=	संगठनकर्ता।
R	=	Resourcefull	=	साधन सम्पन्न।
Y	=	Young	=	जवान (जवानों जैसा जोश)।
T	=	Tactful	=	चतुर (नीति निपुण)।
E	=	Enthusiasm	=	उत्साही।
A	=	Adaptability	=	अनुकूलनशीलता।
C	=	Confident	=	आत्मविश्वासी।
H	=	Helpful	=	सहयोगी।
E	=	Efficient	=	योग्य।
R	=	Resourceful	=	साधन सम्पन्न।

शिक्षक के गुणों के सम्बन्ध में न्यूयॉक्र के शिक्षा विभाग ने निम्नलिखित गुण बताएँ हैं–

T	=	Throughoutfulness	=	विवेक।
G	=	Gregariousness	=	सामूहिकता।
R	=	Reliabililty	=	विश्वसनीयता।
O	=	Open Mindedness	=	नए विचार ग्राहाता।
A	=	Ability of Leadeship	=	नेतृत्व की क्षमता।
O	=	Originality	=	मौलिकता।
I	=	Integrity	=	निष्कपटता।
D	=	Discernment	=	दूरदर्शिता।
T	=	Tact	=	चातुर्य।
T	=	Tidiness	=	स्वच्छता।
A	=	Abililty to do creditable College work	=	कॉलेज कार्यक्रमों को उत्तम ढ़ंग से करने की क्षमता
E	=	Enthusiasm	=	उत्साही।
A	=	Adaptability	=	अनुकूलनशीलता।
C	=	Co-operateness	=	सहकारिता।
H	=	Health	=	स्वास्थ्य
E	=	Effectiveness	=	कुशलता।
R	=	Resourcefulness	=	साधन सम्पन्नता।
S	=	Sense of Humour	=	विनोद प्रियता
O	=	Objectivity	=	वस्तुनिष्ठता।
F	=	Fluency	=	वाक्पटुता।

प्रश्न–9 आप इतिहास के शिक्षक के दृष्टिकोण एवं प्रशिक्षण में सुधार के लिए क्या सुझाव देंगे?
What suggestions you desire for the outlook of teacher and improvement in teaching of history?

उत्तर **आप इतिहास के शिक्षक के दृष्टिकोण एवं प्रशिक्षण में सुधार के लिए सुझाव–** इतिहास के शिक्षक के दृष्टिकोण एवं

प्रशिक्षण में सुधार के लिये निम्न सुझाव उपयुक्त रहेंगे–

1. **गुणात्मक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम**– राज्य में स्थित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में पूर्ण रूप से नवीन सृजित गुणात्मक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।
2. **ऐतिहासक दृष्टिकोण युक्त प्रशिक्षण**– प्रशिक्षण कार्यक्रम मूलरूप से ऐतिहासिक परिवेशयुक्त दिया जाना चाहिए।
3. **राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना युक्त प्रशिक्षण**– राष्ट्रीय एकता के प्रमुख तत्वों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में महत्व दिया जाना चाहिए।
4. **इतिहास शिक्षण व प्रशिक्षण कार्यक्रम में ऐतिहासिक भ्रमण को शामिल किया जाना चाहिए।**
5. **राष्ट्रीय विकास हेतु प्रशिक्षण**– राष्ट्रीय विकास के लिए सरकार के द्वारा किये गये प्रयासों को प्रशिक्षण का अंग मानकर उन्हें अपनाया जाए, चाहे वह पल्स पोलियो अभियान हो, प्रौढ़ शिक्षा, श्रमदान, जल संरक्षण, विद्यालय प्रवेशोत्सव आदि सभी कार्यों को इनमें शामिल कर प्रशिक्षण दिया जाए।
6. **नवाचार युक्त प्रशिक्षण**– प्रशिक्षण में आधुनिक नवाचारों शिक्षण विधियों, यन्त्रों आदि को उपयोग में लेकर सुधार किये जा सकते हैं।

प्रश्न–10भारत में 1957 की क्रान्ति प्रकरण पर श्याम–पट्ट सारांश लिखिये।

Write down the black board summery on 1857 revolution in India.

उत्तर श्याम–पट्ट सारांश
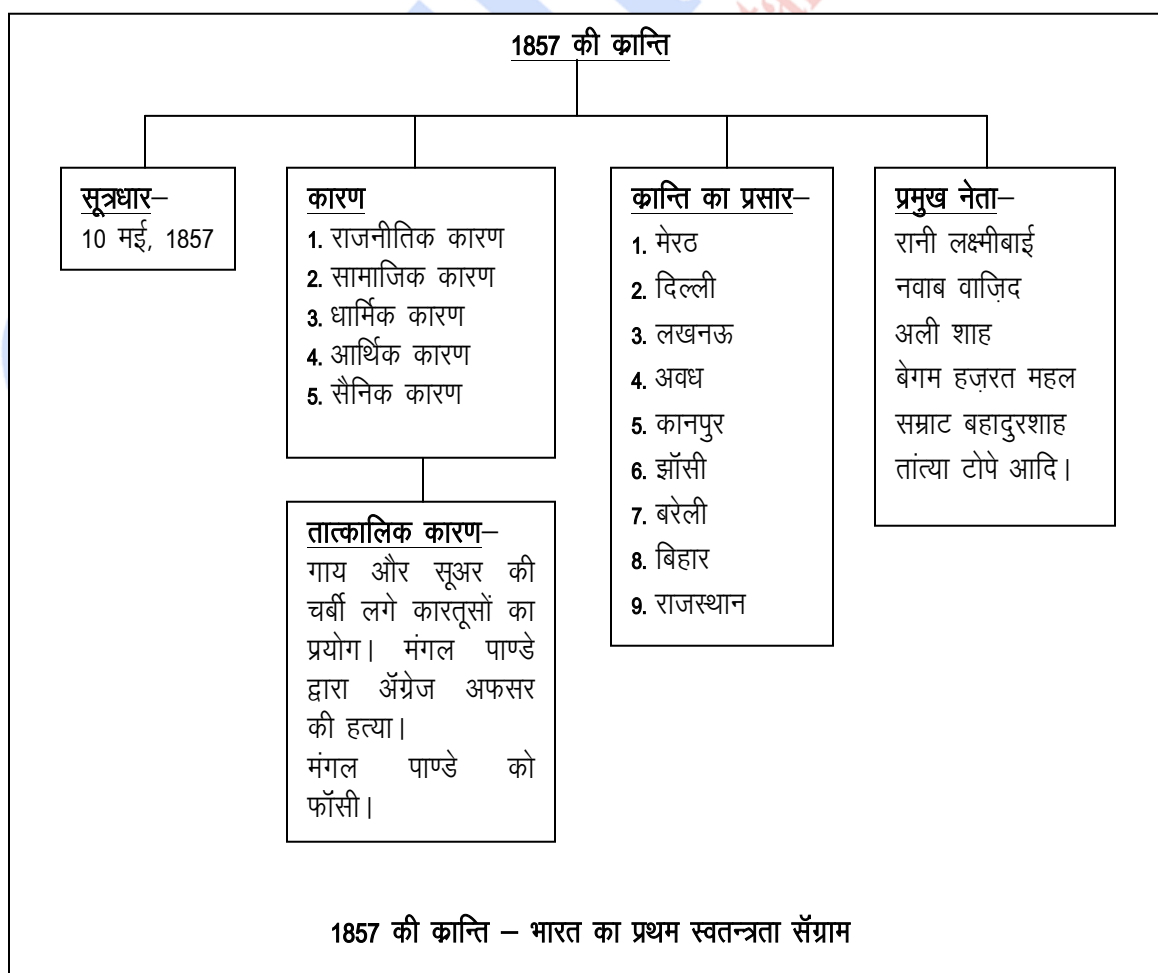
प्रश्न–1 पाठ्यक्रम का अर्थ स्पष्ट कीजिये। पाठ्यक्रम के उद्देश्य स्पष्ट कीजिये। पाठ्यक्रम तथा शिक्षाक्रम में अन्तर स्पष्ट कीजिये।

Define meaning of curriculum? Explain the objectives of curriculum. Differentiate between Curriculum and Syllabus.

उत्तर **पाठ्यक्रम का अर्थ**– शिक्षा की आधुनिक धारणा के अनुसार विद्यालय के अन्दर या बाहर शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये नियोजित रूप से जो भी किया जाता है, वह सभी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आता हैं। विद्यालय का सम्पूर्ण कार्य, क्रिया पाठ्यक्रम हैं।

'करीकुलम' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **'क्यूरर'** से हुई हैं, जिसका अर्थ हैं– **दौड़ना**। अतः **करीकुलम शब्द** का अर्थ **वह मार्ग जिस पर छात्र दौड़कर अपने लक्ष्य पर पहुँचता हैं।** दूसरे शब्दों में **शिक्षाक्रम दौड़ का मैदान हैं, जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये दौड़ता हैं।**

पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ–

पाठयक्रम के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों द्वारा दी गई परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

1. **माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार**– ''पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक पाठ्य विषयों से नहीं हैं, जो विद्यालय में परम्परागत ढ़ंग से पढ़ाए जाते हैं, वरन् इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता निहित हैं, जिसको छात्र विद्यालय, कक्षा–कक्ष, पुस्तकालय, वर्कशॉप, प्रयोगशाला और खेल के मैदान तथा शिक्षकों एवं शिष्यों के ॲक गणित अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता हैं। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है, जो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता हैं और उसके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता हैं।''
2. **मुनरों के अनुसार**– ''पाठ्यक्रम में समस्त अनुभव निहित हैं, जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उपयोग में लाया जाता हैं।''
   इन सभी परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि विद्यालय के अन्दर या बाहर शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये नियोजित रूप से जो भी किया जाता हैं, वह सभी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आता हैं। वास्तव में यह एक ऐसा साधन हैं, जिसके द्वारा बालक स्वयं को अपने वातावरण में व्यवस्थित करना सीखते हैं।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य– पाठ्यक्रम का निर्माण समाज, राष्ट्र तथा व्यक्ति की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही किया जाता हैं। साथ ही शिक्षा के उद्देश्यानुसार पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता हैं। समाज तथा राष्ट्र द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये तथा व्यक्ति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये उद्देश्यानुरूप पाठ्यक्रम का अध्ययन करता हैं। पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय इसके उद्देश्यों का निर्धारण कर लिया जाता हैं। पाठ्यक्रम के निर्धारित उद्देश्यों का सोदाहरण विवेचन निम्न प्रकार किया जा सकता हैं–

1. **पाठ्यक्रम में रूचि विकसित करना**– पाठ्यक्रम का निर्माण बालक की उस विषय में रूचि विकसित करने के उद्देश्य से किया जाता हैं। पाठ्यक्रम में उन प्रकरणों का चयन किया जाता हैं जो बालक के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध होते हैं, जिससे बालक उस पाठ्य वस्तु को रूचि के साथ सीखता हैं।

2. **मानसिक शक्तियों का विकास करना–** बालक के द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक व्यवहार उसकी मानसिक स्थिति पर आधारित होता हैं। बालक मानसिक शक्ति के अनुसार कार्यों का सम्पादन करता हैं। इसलिए पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय बालक के चिन्तन, तक्र, मनन, स्मरण आदि पक्षों को ध्यान में रखा जाता हैं।
3. **सामाजिक गुणों का विकास करना–** बालक में सामाजिक गुणों का विकास करने के लिये सामाजिक पक्षों, धार्मिक पक्षों से सम्बन्धित पात्रों को सम्मिलित किया जाता हैं।
4. **सम्मान की भावना का विकास करना–** समाज, राष्ट्र, अपने से बड़ों के प्रति सम्मान की भावना का विकास करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम में महापुरूषों की जीवनियों को सम्मिलित किया जाता हैं।
5. **नैतिक गुणों का विकास करना।**
6. **व्यक्ति को क्रियाशील बनाना।**
7. **जीवकोपार्जन के लिये आधार प्रदान करना।**
8. **कार्यकुशलता का विकास करना।**
9. **उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।**
10. **नेतृत्व की भावना का विकास करना।**

शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पाठ्यक्रम का निर्माण उपर्युक्त प्रमुख उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जाता हैं। पाठ्यक्रम शिक्षण तथा अधिगम के उद्देश्य निर्धारण में भी योग देता हैं।

पाठ्यक्रम तथा शिक्षाक्रम में अन्तर–

शिक्षाक्रम का क्षेत्र अति व्यापक हैं, शिक्षाक्रम के अन्तर्गत छात्र विद्यालय, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वक्रशॉप, खेल का मैदान, सॉस्कृतिक–कार्यक्रम, भ्रमण आदि सभी आते हैं। जो बालक का आलराउण्ड डवलपमेंट करते हैं। पाठ्यचर्या मुद्रित सन्दर्शिका हैं, जो यह बताती हैं कि छात्र को क्या सीखना हैं? इसके अन्तर्गत छात्रों को विषय की जानकारी पाठ्य पुस्तक के आधार पर दी जाती हैं।

क्रमांक	शिक्षाक्रम/पाठ्यक्रम (Curriculum)	पाठ्यचर्या (Syllabus)
1.	शिक्षाक्रम का क्षेत्र अति व्यापक हें।	शिक्षाक्रम का ही एक अंग हैं।
2.	शिक्षाक्रम में विद्यालय के अन्दर तथा बाहर होने वाली सभी क्रियाओं, गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता हैं।	पाठ्य पुस्तक की पाठ्य वस्तु को ही सम्मिलित किया जाता हैं।
3.	पाठ्यक्रम राष्ट्रीय एवं सॉस्कृतिक मूल्यों का विकास करता हैं।	इसके द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों का विकास नहीं होता।
4.	पाठ्यक्रम बालक के सम्पूर्ण–व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास से सम्बन्धित हें।	पाठ्यचर्या छात्र के विषय के ज्ञान के विकास पर बल देता हैं।
5.	पाठ्यक्रम में शैक्षिक/सह–शैक्षिक/भौतिक क्षेत्र समाहित हैं।	पाठ्यचर्या केवल शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति करता हैं।

6.	पाठ्यक्रम अधिगम एवं अनुभव पर आधारित हैं।	पाठ्यचर्या पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित हैं।
7.	पाठ्यक्रम को क्रिया व अनुभव के रूप में समझा जा सकता हैं।	पाठ्यचर्या को अर्जित ज्ञान व संग्रहित तथ्य के रूप में समझाा जा सकता हैं।
8.	पाठ्यक्रम शिक्षा दर्शन पर आधारित हैं।	इसका कोई निश्चित दार्शनिक आधार नहीं हैं।
9.	शिक्षाक्रम का दृष्टिकोण बाल केन्द्रित हैं।	पाठ्यचर्या का दृष्टिकोण शिक्षक केन्द्रित हैं।
10.	पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं।	यह अमनोवैज्ञानिक हैं।
11.	रूचिकर एवं अधिगम आधारित हैं।	अरूचिकर, बोझिल एवं बौद्धिक विकास पर आधारित हैं।
12.	पाठ्यक्रम बालक के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखता हैं।	पाठ्यचर्या उच्च शिक्षा (कक्षा उत्तीर्ण) का लक्ष्य रखता हैं।
13.	यह अधिगमानुभवों पर आधारित हैं।	यह पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित हैं।

प्रश्न–2 दैनिक पाठ योजना किस प्रकार अध्यापक को कक्षा–कक्ष शिक्षण में सहायता करती हैं? वर्णन कीजिये।
How does Daily Lesson Plan teacher in class teaching? Explain the reason.

उत्तर **दैनिक पाठ योजना की आवश्यकता/महत्व/लाभ–** दैनिक पाठ योजना के माध्यम से शिक्षण कार्य करना एक मनोवैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध ढ़ंग हैं। इस परम्परा का शुभारम्भ हरबर्ट ने किया था। इतिहास का शिक्षण पाठ योजना बनाकर किया जाता हें तो शिक्षण कार्य प्रभावी एवं अधिगम आधारित होता हें। छात्र रूचि लेकर अध्ययन करते हें एवं अधिगम बालक के ह्रदय में स्थायी रूप से समाहित हो जाता है। अतः पाठ योजना बनाकर शिक्षा दान करना उपयोगी और मनोवैज्ञानिक हैं। दैनिक पाठ योजना की आवश्यकता, महत्व एवं लाभों को निम्नवत् अधिक स्पष्ट किया जा सकता हैं–

1. **उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये–** शिक्षक के द्वारा पाठ योजना बनाने के कुछ निश्चित उद्देश्य और लक्ष्य होते हैं, उन उद्देश्यों की पूर्ति पाठ योजना में क्रमबद्ध रूप से पूर्ण होती हैं। अतः इतिहास शिक्षण एवं प्रकरण को पूर्ण स्पष्ट करने के लिए एवं निर्धारित लक्ष्य तथा उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये दैनिक पाठ योजना का निर्माण परम आवश्यक हैं।
2. **विषय सामग्री के निर्धारण हेतु–** पाठ योजना का निर्माण शिक्षक एक निश्चित कालांश के लिये करता हैं! वह उस कालांश में कितनी विषय सामग्री कक्षा शिक्षण के दौरान पूर्ण कर सकता हैं, इसके लिए भी पाठ योजना का निर्माण आवश्यक हैं।
3. **शिक्षण विधियों के चयन हेतु–** छात्रों के स्तर, योग्यता, क्षमताओं को मद्धेनज़र रखते हुये किस विषय वस्तु प्रकरण को कौनसी, प्रभावी शिक्षण विधि द्वारा पढ़ाया जा सकता हैं। इसका निर्धारण भी आवश्यक होता हैं। अतः शिक्षण विधि के चयन का निर्धारण करने के लिये भी पाठ योजना का निर्माण आवश्यक हैं।

4. **मनोवैज्ञानिक शिक्षण**– शिक्षक में मनोवैज्ञानिक चिन्तन का विकास कर नवीन ज्ञान तथा अधिगम आधारित शिक्षण प्रक्रिया के निर्माण के लिये भी पाठ योजना आवश्यक हैं।
5. **सहायक सामग्री पूर्व तैयारी हेतु**– पाठ योजना बनाते समय शिक्ष कइस बात को भी तय कर लेता हैं कि प्रकरण को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने के लिये कौन–कौनसी सहायक सामग्री का निर्माण करना पड़ेगा। जिससे प्रकरण पूर्ण स्पष्ट, रोचक, सुगम्य बन सके एवं समय भी व्यर्थ न जाए।
6. **आत्मविश्वास**– शिक्षण कार्य में आत्मविश्वास का अति महत्व हैं। शिक्षक कक्षा में जाने से पूर्व ही पाठ योजना का निर्माण सकरता हैं, एवं पाठ योजना के निर्माण में अपनी पूरी मेहनत, लगन, योग्यता लगाकर पाठ योजना तैयार करता हैं। परिणामस्वरूप शिक्षक में विषय प्रकरण के प्रति पूर्ण आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाता हैं। शिक्षण कार्य अनुशासित एवं सुचारू रूप से चलता रहता हैं।
7. **समय एवं शक्ति की बचत**– पाठ योजना निर्माण के द्वारा छात्रों एवं शिक्षक के समय व शक्ति की बचत होती हैं। शिक्षक बिना समय नष्ट किये, करता चलता हैं। एवं व्यर्थ छात्रों की शक्ति को नष्ट नहीं होती हैं। वे प्रकरण के लिये उपयुक्त ज्ञान का ही अध्ययन करते हैं।
8. **पाठ्यक्रम को निर्धारित समय में समाप्त करने में सहायक**– प्रत्येक विषय के लिये वर्ष में निश्चित कालांश निर्धारित होते हैं। अतः उस विषय को समय पर पूर्ण करने के लिये पाठ योजना आवश्यक होती हैं। पाठ योजना बनाकर शिक्षण कार्य करने से एक ही प्रकरण को बार–बार पढ़ाने की भूल से बचा जाता हैं। अतः उपरोक्त प्रकार से दैनिक पाठ योजना की इतिहास शिक्षण में पूर्ण आवश्यकता हैं।

प्रश्न–3 किसी एक प्रकरण पर कक्षा–9 के लिए 40 मिनट के समयान्तर की पाठ योजना तैयार कीजिए।
Prepare a lesson plan on a topic of your choice for class-IX for a period of fourty minutes.

उत्तर <u>पाठ योजना (Lesson Plan)</u>

विद्यालय का नाम – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर
कक्षा एवं वर्ग – 9 अ **दिनांक – ....**
विषय – इतिहास **कालांश – प्रथम**
प्रकरण – 1857 की क्रान्ति के कारण **अवधि – 40 मिनट**

क्रमांक	उद्देश्य	अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
1.	ज्ञानात्मक	i. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के आर्थिक सैनिक व तात्कालिक कारणों से सम्बन्धित तथ्यों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे। ii. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के आर्थिक, सैनिक व तात्कालिक कारणों से सम्बन्धित तथ्यों का प्रत्याभिज्ञान कर सकेंगें।
2.	अवबोधात्मक	i. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के आर्थिक सैनिक व तात्कालिक कारणों की व्याख्या कर सकेंगे। ii. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के आर्थिक सैनिक व तात्कालिक कारणों में तुलना कर सकेंगे।

3.	ज्ञानोपयोग	i. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के तात्कालिक कारण का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाल सकेंगे। ii. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के सैनिक कारणों का अध्ययन कर के निर्णय ले सकेंगे।
4.	कौशलात्मक	i. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के आर्थिक कारणों का अध्ययन करके इसके प्रकारों की सारणी बनाने में कुशलता अर्जित कर सकेंगे। ii. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के आर्थिक कारणों के प्रकारों की सारणी से सूचनाएँ संकलित कर सकेंगे।
5.	अभिरूचित	i. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के सैनिक कारणों का अध्ययन करके उचित आचरण कर सकेंगे। ii. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के आर्थिक कारणों से सम्बन्धित मूल्यों एवं भावनाओं को समझने में रूचि ले सकेंगें।
6.	अभिवृत्ति	i. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के सैनिक कारणों का अध्ययन करके सद्वृत्तियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे। ii. विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के तात्कालिक कारणों का अध्ययन करके विभिन्न तथ्यों के प्रति सामान्य दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।

शिक्षण सहायक सामग्री– 1. आर्थिक कारणों के प्रकार से सम्बन्धित सारणी, 2. कक्षोपयोगी सामग्री।

शिक्षण विधि – व्याख्यान विधि

शिक्षण प्रविधि – कथन एवं प्रश्न प्रविधि

पूर्वज्ञान – विद्यार्थी 1857 की क्रान्ति के राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक कारणों के विषय में सामान्य जानकारी रखते है।

प्रस्तावना प्रश्न–

छात्राध्यापिका क्रियाएँ	विद्यार्थी क्रियाएँ
प्रश्न–1हिन्दू व मुस्लिम धर्म की खुलेआम आलोचना करने वाले कौन थें?	**उत्तर–**हिन्दू व मुस्लिम धर्म की खुलेआम आलोचना करने वाले ईसाई मिशनरी थे।
प्रश्न–2ईसाई मिशनरियों ने अंग्रेजों का प्रोत्साहन पाकर भारत में किस धर्म का प्रचार किया?	**उत्तर–**ईसाई मिशनरियों ने अंग्रेजों का प्रोत्साहन पाकर भारत में ईसाई धर्म का प्रचार किया।
प्रश्न–3ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू व मुस्लिम धर्म की आलोचना करने से लोगों के मन में किस असन्तोष ने घर कर लिया?	**उत्तर–**ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू व मुस्लिम धर्म की आलोचना करने से लोगों के मन में धार्मिक असन्तोष उत्पन्न हो गया।
प्रश्न–4 धार्मिक कारणों से असन्तुष्ट लोगों ने कौनसी	**उत्तर–**धार्मिक कारणों से असन्तुष्ट लोगों ने 1857 की

क्रान्ति में सहयोग दिया?	क्रान्ति में सहयोग दिया।
प्रश्न–51857 की क्रान्ति के अन्य कारणों को स्पष्ट कीजिए।	**उत्तर–**अस्पष्ट उत्तर। समस्यात्मक प्रश्न?

उद्देश्य कथन– आज हम 1857 की क्रान्ति के सन्दर्भ में अध्ययन करेंगे।

उद्देश्यमय व्यवहारगत परिवर्तन/शिक्षण बिन्दु	अध्ययन–अध्यापन क्रिया	श्यामपट्ट क्रिया
	विकासात्मक प्रश्न– **1.** भारतीयों को अपने कच्चे माल की एवज में क्या मिलता था? **उत्तर–**निर्मित माल। **2.** इंग्लेण्ड के निर्मित माल को सस्ती दरों में भारत मे बेचे जाने से यहॉ के व्यापार पर इसका क्या पड़ा? **उत्तर–**उद्योग व व्यापार नष्ट हुये। **3.** भारतीय उद्योग व व्यापार के नष्ट हो जाने से लोगों के मन में किस असन्तोष ने जन्म लिया? **उत्तर–**आर्थिक असन्तोष। **4.** 1857 की क्रान्ति में आर्थिक असन्तोष के कारणों की व्याख्या कीजिए। **उत्तर–**अस्पष्ट।	
1. आर्थिक कारण–	**छात्राध्यापिका कथन–** ब्रिटिश शासन का मुख्य आधार भारत का आर्थिक शोषण करना था। भारतीय सूती कपड़े पर 19वीं सदी के आरम्भ से इंग्लेण्ड में 71 प्र.श. तथा मलमल पर 70 प्र.श. कर लिया जाता था। जिससे भारत का वस्त्र उद्योग नष्ट हो गया। अंग्रेजों ने किसानों से कर वसूलने के लिए स्थायी बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी, महालवाड़ी आदि भू–राजस्व व प्रणालियॉ अपनाई और उनकी उपज का 50 प्र.श. कर के रूप में लिया जाता था। भारत का विपुल धन वेतनों, उपहारों, भ्रष्ट तरीकों से प्राप्त	

	धन करों आदि के रूप में इंग्लेण्ड भेजा जाता था। जिससे भारतीय कृषि उद्योग व व्यापार चौपट हो गये। तथा देश में गरीबी, बेरोजगारी बढ़ती गई। **बोध प्रश्न–** **1.** ब्रिटिश शासन का मुख्य आधार क्या था? **2.** भारतीय उद्योग व व्यापार के चौपट होने के कारणों को स्पष्ट कीजिए। **3.** अंग्रेजों ने किसानों से कर वसूलने हेतु कौनसी प्रणाली अपनाई? **विकासात्मक प्रश्न–** **1.** भारत में भू राजस्व प्रणालियॉ किसके द्वारा लागू की गई? **उत्तर–**अंग्रेजों के द्वारा। **2.** अंग्रेजों द्वारा भारतीय माल पर अत्यधिक कर लगाने से किन्हें नुकसान उठाना पड़ा? **उत्तर–**भारतीय व्यापारियों को **3.** भारतीय व्यापारियों ने अपने उद्योग–धन्धों को बचाने के लिये कौनसा स्वाधीनता संग्राम शुरू किया? **उत्तर–**1857 का स्वाधीनता संग्राम? **4.** 1857 के स्वाधीनता संग्राम के सैनिक कारणों को स्पष्ट कीजिए। **उत्तर–**अस्पष्ट	 **उत्तर–** भारत का आर्थिक शोषण करना। **उत्तर–** भारत का धन इंग्लेण्ड जाना। **उत्तर–** स्थायी बन्दोबस्त महालवाड़ी, रैयतवाड़ी
2. सैनिक कारण–	**छात्राध्यापिका कथन–** अंग्रेजों का भारतीय सैनिकों के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं था। उन्हें अंग्रेजों के मुकाबले कम वेतन दिया जाता था। उच्च पदो के योग्य उन्हें नहीं समझाा जाता था। इसके अलावा निम्न जातियों को बंगाल की सेना में भर्ती करने से बंगाल की सेना मे भी असन्तोष व्याप्त हो गया। 1856 में अवध का राज्य अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लेने से 60 हजार सैनिक बेरोजगार हो गये। इसके अलावा उन्हें	**सैनिक कारण–**

	बिना भत्ते के दूर–दूर स्थानों पर युद्ध के लिये भेज दिया जाता था। 1856 में कैनिंग की सरकार के साम्राज्य सेवा भर्ती अधिनियम के तहत् सैनिकों को विदेशों में युद्ध के लिये भेजा जा सकता था। इन्हीं सभी कारणों से सैनिकों में असन्तोष बढ़ता गया और जिसकी परिणीति 1857 की क्रान्ति के रूप में हुई। **बोध प्रश्न–** **1.** किन्हें उच्च पदो के योग्य नहीं समझा जाता था? **2.** सामान्य सेवा अधिनियम कब पारित किया गया? **3.** बंगाल की सेना में असन्तोष का कारण बताइये। **विकासात्मक प्रश्न–** **1.** अंग्रेजों द्वारा कौनसी सामाजिक कुरीतियों को अवैध घोषित किया गया? **उत्तर**–बाल–विवाह, सतीप्रथा व कन्या वध **2.** अंग्रेजों द्वारा बाल–विवाह को अवैध घोषित किये जाने से रूढ़िवादी भारतीयों के मन में किस प्रकार का असन्तोष उत्पन्न हो गया? **उत्तर**–सामाजिक असन्तोष **3.** सामाजिक असन्तोष के कारण भारतीयों ने कौनसी क्रान्ति का सूत्रपात किया? **उत्तर**–1857 की क्रान्ति का सूत्रपात **4.** 1857 की क्रान्ति के तात्कालिक कारणों की व्याख्या कीजिए। **उत्तर**–अस्पष्ट।	**उत्तर**–भारतीय सैनिकों उच्च पदो के योग्य नहीं समझा जाता था। **उत्तर**–1856 में। **उत्तर**–निम्न जातियों को भर्ती किया जाना।
3. तात्कालिक कारण	**छात्राध्यापिका कथन–** 1856 में भारतीय सैनिकों को एनफील्ड नवाम राइफलें दी गई, जिन्हें मुँह से खोलना पड़ता था। इन राइफलों के कारतूसों के सम्बन्ध में यह अफवाह फैला दी गई कि इनमें गाय व सूअर की चर्बी लगी हुई है। जिससे हिन्दू व	**तात्कालिक कारण–** गाय व सूअरों की चर्बी लगे एनफील्ड राइफलों के प्रयोग करने से भारतीय सेना ने इनकार कर दिया क्योंकि इन्हें प्रयोग में लाने से पहले मुँह से खोलना पड़ता था।

	मूसलमानों ने इसके प्रयोग करने से इन्कार कर दिया। 29 मार्च, 1957 को बैरकपुर की अंग्रेजी सैना के 34वीं रेजीमेन्ट के भारतीय सैनिक मंगल पाण्डे ने एक अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। जिसके तहत् 8 अप्रेल, 1857 को उसे फॉसी की सजा दी गई। इसके बाद 9 मई, 1957 को मैरठ के सेनिकों द्वारा चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से इन्कार करने के कारण से उन्हें 10 वर्ष के कारवास की सजा दी गई। जिससे अन्य सैनिकों ने 10 मई, 1857 को विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। उन्होनें अनेक अंग्रेज अधिकारियों और सैनिकों को मारकर अपने साथियों को कैद से छुड़वा लिया। **बोध प्रश्न–** 1. 1856 में भारतीय सैनिकों कौनसी राइफलें दी गई? 2. भारतीय सैनिकों ने एनफील्ड राइफलों के प्रयोग से क्यों इन्कार कर दिया? 3. मंगल पाण्डेय को फॉसी की सजा क्यों दी गई?	**उत्तर**–एनफील्ड **उत्तर**–गाय व सूअर की चर्बी के कारण। **उत्तर**–अंग्रेज अधिकारी की हत्या के जुर्म में।

पुनरावृत्ति प्रश्न–

i. 1857 की क्रान्ति के आर्थिक कारण स्पष्ट कीजिये।

ii. भारतीय सैनिकों में असन्तोष के कारण बताइये।

iii. 1857 की क्रान्ति का तात्कालिक कारण स्पष्ट कीजिये।

मूल्यांकन प्रश्न–

निर्देश– निम्न प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में अंकित कीजिए–

i. भारतीय किसानों से उनकी उपज का कितना प्रशित कर के रूप में लिया जाता था?
(अ) 20 (ब) 40 (स) 50 (द) 30 (स)

ii. किसके विलीनीकरण से 60 हजार सैनिक बेरोजगार हो गये।
(अ) बिहार (ब) राजस्थान (स) पंजाब (द) अवध (द)

निर्देश– सत्य व असत्य शब्दों में उत्तर दीजिये–

i. मंगल पाण्डेय ने एक अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। (सत्य)

ii. ब्रिटिश सरकार का उद्देश्य भारत को आर्थिक आधार प्रदान करना था। (असत्य)

निर्देश– रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये–

i. **एनफील्ड** नामक राइफलों में गाय व सूअर की चर्बी लगी थी।

ii. **1856** में सामान्य सेवा अधिनियम पारित किया गया।

निर्देश– निम्न प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए–

i. सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम किसके द्वाराा लागू किया गया?

उत्तर– 1856 में कैनिंग के द्वारा।

ii. बंगाल की सैना में किसे भर्ती किया गया?

उत्तर– निम्न जातियों को।

गृहकार्य– निबन्धात्मक प्रश्न–

प्रश्न–1 1857 की क्रान्ति के आर्थिक व सैनिक कारणों को स्पष्ट कीजिये।

———

इकाई–3
इतिहास
इतिहास शिक्षण की पद्धतियाँ एवं उपागम

Methods and Approaches of HistoryTeaching

Various metohods of teaching History (Story, Telling, Biographical, Dramatization, Time Sense, Source Project and Supervised Study Method) Resource Material

---

प्रश्न–1 मॉडल चित्र से अच्छा होता है, क्योंकि–
(अ) यह सस्ता होता है (ब) यह आकर्षक होता है
(स) यह वस्तु के आकार का सही ज्ञान देता है (द) यह चारों ओर देखा जा सकता है (स)

प्रश्न–2 इनमें से कौन–सी शिक्षण सामग्री केवल दृश्य सामग्री है?
(अ) टेप–रिकॉर्डर (ब) रेड़ियों
(स) मानचित्र (द) टेलीविजन (स)

प्रश्न–3 संख्यात्मक ऑकड़ों को अच्छी तरह प्रस्तुत कर सकते है?
(अ) चार्ट द्वारा (ब) ग्राफ द्वारा
(स) रेखाचित्र द्वारा (द) मानचित्र द्वारा (ब)

प्रश्न–4 निम्नलिखित में से परम्परागत सहायक शिक्षण सामग्री कौनसी है?
(अ) रेड़ियों (ब) श्यामपट्ट
(स) टेलीविजन (द) टेप–रिकॉर्डर (ब)

प्रश्न–5 ''पाठ्य–पुस्तक शिक्षण का आधार यन्त्र है।'' यह कथन है–
(अ) प्रो. बेकन का (ब) स्पेन्सर का
(स) प्रो. कीटिंग का (द) टी.एच. ग्रीन का (स)

प्रश्न–6 ''पाठ्य–पुस्तक अध्ययन की किसी शाखा की एक प्रमाणिक पुस्तक होती है।'' यह परिभाषा है–
(अ) प्रो. लैंग की (ब) प्रो. बैकन की
(स) एन.एल. गेज की (द) मुनरो की (अ)

प्रश्न–7 इतिहास की पाठ्य–पुस्तक का चयन करते समय किस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए?

(अ)	छपाई अच्छी हो	(ब)	पुस्तक छोटी एवं हल्की हो	
(स)	विषय–वस्तु सुस्पष्ट एवं पूर्ण हो	(द)	पुस्तक सस्ती हो	(स)

प्रश्न–8 इतिहास प्रयोगशाला की सामग्री इनमें से एक नहीं है?

(अ)	श्याम पट्ट	(ब)	सिक्के	
(स)	रेड़ियो	(द)	पाठ्य–पुस्तक	(द)

प्रश्न–9 ''जब तक छात्रों में सक्रिय रूचि न होगी तब तक शिक्षक का सर्वोत्तम कार्य नहीं होगा।'' यह कथन है–

(अ)	प्रिन्सेंट का	(ब)	रायबर्न का	
(स)	फोर्ज का	(द)	मेहता का	(ब)

1. शिक्षण पद्धिति का क्या अर्थ हैं? एवं उसका महत्व बताइये।
What is the meaning of the method of teaching? Explain its importance also.

उत्तर– शिक्षण को अध्ययन और अध्यापन का एक अनूठा संयोजन कहते हे। जिसके अनेक उपागम हो सकते हैं, अनेक पद्धतियॉ हो सकती है, अनेक आव्यूहन हो सकते हैं, जिसमें अन्य क्षमताएँ सन्निहित होती है।

अर्थ (Meaning)– शिक्षण पद्धति एक व्यापक प्रक्रम हैं, जिसका चयन शिक्षक अपनी सूझ–बूझ से, कक्षा की स्थिति, विषय वस्तु की मॉग, एवं उपलब्ध साधनों के आधार पर शिक्षण उद्धेश्यों की सम्प्राप्ति हेतु करता हैं।

परिभाषाएँ (Defination)–

जॉन डी.वी. के अनुसार– ''निष्कर्ष के विकास के लिए पद्धति पाठ्य वस्तु को सुव्यवस्थित करने की विधि हैं।'' ("Method is a way of managing material to develop a conclusion.")

बाइनिंग एवं बाइनिंग के अनुसार– ''शिक्षण शास्त्र को शिक्षण की प्रक्रिया का स्थिर पहले न मान जाए, वरन् उसे शिक्षा के गत्यात्मक कार्य के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए। ("Methodology should be conceived as dynamic function of education and not as a static aspect of the process of teaching")

शिक्षण पद्धति का महत्व (Importance of teaching method)–

- विषय वस्तु को स्पष्ट करने, शिक्षण और अनुदेशन की वास्तकिवक बनाने शिक्षण अधिगम को सुग्राहक बनाने और शिक्षक और छात्रों को अधिगम प्रक्रिया से जोड़ने हेतु शिक्षण विधियॉ **सेतु** का कार्य करती हैं।
- अधिगम अनुभव सम्प्राप्ति हेतु
- अधिगम प्रक्रिया को सरस बनाने हेतु
- उपलब्ध समय और साधनों के सर्वश्रेष्ठ उपयोग हेतु
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को व्यवस्थित करने हेतु
- विषय वस्तु, शिक्षक और छात्रों को शिक्षण प्रक्रिया में परस्पर जोड़ने हेतु।

शिक्षक शिक्षण कार्य के विश्लेषण (Task analysis) द्वारा अधिगम अनुभवों (Learning experience) का चयन करता है। शिक्षण विधियॉं इन अधिगम अनुभवों की सवांहक (Carrier & Learnining experiences) हैं, ये वह कड़ियॉं है, जिसमें शिक्षण उद्धेश्यों, विषय वस्तु, शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य सम्प्रेषण कड़ी (Communication link) का कार्य करती हें। शिक्षण विधि या पद्धतियॉं अपने आप में साध्य नहीं अपितु साधन हैं।

2. अच्छी शिक्षण विधि की विशेषताओं का उल्लेख करो।

Describe the characteristics of a good method of teaching.

उत्तर– इतिहास पढ़ाने के लिए प्रयोग में लाई जा सकने वाली विभिन्न विधियों में से कौनसी विधियॉं उपयुक्त ठहराई जा सकती हैं, इसका निर्णय करने के लिए उन्हें एक कसोटी पर कसना उत्तम रहता हैं, जिसमें हमारे सामने एक आदर्श शिक्षण विधि की विशेषताऍं एवं गुण विद्यमान हैं।

- **<u>मनोवैज्ञानिक (Psycological)</u>**– एक अच्छी शिक्षण विधि में मनोवैज्ञानिकता का गुण पायाना स्वाभाविक हैं। यह विषय केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित होती हैं, तथा इसमें बालक की आवश्यकताओं, रूचियों, योग्यताओं तथा मूल प्रवृत्यिों का पूरा–पूरा ध्यान रखा जाता हें और यह सीखने के प्रभावपूर्ण नियामें पर आधारित होती हैं।
- **<u>व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक (Helpful in all round development of the personality)</u>**– एक अच्छी शिक्षण विधि सब प्रकार से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक नैतिक एवं संवेंगात्मक पक्षों के संतुलित विकास में सहयोगी होनी चाहिए।
- **<u>क्रियाशीलता (Activity Centrered)</u>**– एक अच्छी शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पूर्ण सक्रियता प्रदान करने के प्रयत्न किए जाने चाहिए। विद्यार्थी मात्र दर्शक और मूक श्रोता न रहकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पूर्णतया सक्रिया रहकर अधिगम अनुभव प्रापत करें तथा अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर अधिक से अधिक ज्ञान ग्रहण करें, यही चेष्टा एक अच्छी विधि में की जाती हैं।
- **<u>व्यक्तिगत ध्यान देने में सहायक (Helpful in paying individual attention)</u>**– एक अच्छी शिक्षण विधि ऐसे अवसर प्रदान करती हैं कि अध्यापक विद्यार्थियों के ऊपर ठीक प्रकार से व्यक्तिगत ध्यान देने में समर्थ हो सके और इस प्रकार उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण कर सके तथा उन्हें उनकी अपनी गति से आगे बढ़ने में सहायक कर सके।
- **<u>व्यावहारिकता एवं प्रयोगशीलता (Practicability and usability)</u>**– एक अच्छी विधि शिक्षण के लिए प्रयोग में लाए जाने की दृष्टि से पूर्ण व्यावहारिक एवं सक्षम होती हैं। एक दृष्टि से अच्छी विध को निम्न विशेषताओं से मुक्त होना चाहिए–

  i. इसके द्वारा पाठ्यक्रम को समय पर समाप्त करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए।
  ii. इस विध पर आधारित पाठ्यपुस्तके भली भॉंति उपलब्ध होनी चाहिए।
  iii. इस विधि में प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी नहीं खटकनी चाहिए।
  iv. समय, शक्ति और धन के उपयोग की दृष्टि से यह अधिक खर्चीली नहीं होनी चाहिए।

3. इतिहास शिक्षण की शिक्षण विधियों का वर्गीकरण करो?

Do the classification methods of Historyteaching.

उत्तर– इतिहास की शिक्षण पद्धतियों को वर्गीकृत करने का, यहाँ समुचित आधार माना गया है। इस आधार पर शिक्षण पद्धतियों को निम्न तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता हैं'

शिक्षण पद्धतियों का वर्गीकरण (Classification of teaching methods)-

अनुदेशन अन्तः क्रिया केन्द्र (Focus of Instructions)	शिक्षण विधियाँ (Teaching Methods)
विद्यार्थी केन्द्रीत Pupil Centered	→ प्रायोगिक कार्य (Practical work) → पुस्तकालय कार्य (Library work) → दत्त कार्य (Assignments) → व्यक्तिगत प्रायोजनाएँ (Individual Projects) → स्व अनुदेशी पद्धतियां (Self Instruction materials)
समूह केन्द्रीत Group Centered	→ सामाजिक अभिव्यक्ति (Socialized recitation) → रोल प्ले (Role play) → मस्तिष्क मंथन (Brain storming) → समस्या पद्धति (Problem method) → योजना पद्धति (Project method)
शिक्षक केन्द्रीत Teacher Centered	→ व्याख्यान (Lecturer) → दल शिक्षण (Team teaching) → प्रदर्शन (Demonstration)

1. **विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण पद्धतियाँ**.– छात्र केन्दित शिक्षण पद्धतियों में छात्र अधिगम अनुभवों के सृजन में व्यक्तिशः प्रत्यक्ष रूप में सक्रियता से संलग्न होता हैं, शिक्षक इस प्रकार की पद्धतियों में अप्रत्यक्ष रूप से अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करने का कार्य करता हैं। इस प्रकार की आत्म निर्भरता छात्र केन्द्रीत पद्धतियों में स्व–निर्देशित विधियाँ (self instructional methods) जैसे– अभिक्रमित, अनुदेशन, प्रायोगिक कार्य, स्वाध्याय व पुस्तकालय कार्य, दत्त कार्य, प्रायोजना आदि हो सकते हैं।
2. **समूह केन्द्रित शिक्षण पद्धतियाँ**– इस वर्ग में ऐसी शिक्षण पद्धतियाँ हो सकती हैं। जिनमें शिक्षण–अधिगम का स्त्रोत 'छात्र समूह' होता हैं। अर्थात् क्रिया परस्पर अन्तः क्रियाशील समूह (Mutually interactive groups) द्वारा संचालित होती हैं। शिक्षक भी समूह में प्रेरक व नियोजक भूमिका में

सक्रिय होता हैं, इस प्रकार की पद्धतियॉं उच्च स्तरीय प्रतिधरात्मक अधिगम (Higher level reflective learning experiences) अनुभवों की निष्पत्ति में सहयोगी होती हैं।

3. **केन्द्रित शिक्षण पद्धतियॉं**– इनमें शिक्षक समस्त अनुदेशनात्मक अन्तः क्रियाओं का उद्‌गम होता हैं। विद्यार्थी इनमें ग्रहणकर्त्ता मात्र होता हैं। यद्यपि छात्र सक्रिय अधिगम–अनुभवकर्त्त बनाकर रह सकता है, किन्तु अधिगम अनुभवों के सृजन, संचालन और प्रस्तुतीकरण (Presentation) में शिक्षक ही अहम्‌ भूमिका अदा करता हैं, अर्थात्‌ वही शिक्षण प्रक्रिया का केन्द्र–बिन्दु होता हैं।

4. समस्या समाधान विधि एवं प्रायोजना विधि में अन्तर बताइये?
What is the difference between problem solving and Project Method?

उत्तर– योकाम तथा सिम्पसन के अनुसार– ''समस्या एक ऐसी अनुभूत कठिन परिस्थिति है।, जिसे चिंतनकर्त्ता स्पष्टता से अनुभव करता हें। यह कठिनाई मानसिक भी हो सकती हैं और शारीरिक भी। किन्तु जिनमें तथ्यात्मक आधार पर काम करना निहित हे। समस्या की विशेषता यह हैं कि इस पर विचार करने वाला इसे चुनौती के रूप में अनुभव करता हैं।

बैलार्ड के अनुसार– ''योजना वास्तविक जीवन का एक छोटा 'अंश' होता हैं, जिसे विद्यालय में प्रस्तुत किया जाता हैं।''

क्रमांक	समस्या समाधान विधि	योजना विधि
1.	इसमें मौलिक समस्याओं का अध्ययन करके अपने मौखिक विचार दिए जाते हैं।	इसमें समस्या केन्द्रित शिक्षण की व्यवस्था हें।
2.	समस्या समाधान विधि का क्षेत्र केवल मानसिक स्तर पर समस्याओं का चिंतन तक ही सीमित रहता हैं।	योजना विधि में शारीरिक तथा मानसिक क्रियाओं पर बल दिया जाता हैं।
3.	इस विधि में मौलिक तथा सृजनात्मक चिन्तन को प्रधानता दी जाती हैं।	ठस विधि के पाठ्‌यक्रम के ज्ञान की जानकारी तथा उसका बोध कराया जाता हैं।
4.	यह विधि मनोविज्ञान की आधुनिक विचारधाराओं पर आधारित हैं।	यह विधि प्रयोजनावादी विचारधाराओं पर आधारित हैं।
5.	इसका परिणाम समस्या के लिए समस्या के निष्कर्ष के रूप में होता हैं।	योजना विधि का परिणाम 'उत्पादन' के रूप में होता हैं।

5. योजना विधि के विभिन्न पदों को संक्षेप में बताइए?

Explain in brief the steps of project method?

उत्तर– योजना विधि को काम में लाने हेतु हमें निम्न छः सोपानों से गुजरना पड़ता हें–

1. **परिस्थिति प्रदान करना (Providing a situation)**– योजना विधि में जिस योजना को कार्य करने तथा शिक्षण अधिगम अनुभव प्रदान करने के लिए चुना जाता हें, उसके लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा करना ही इस सोपान का उद्धेश्य हैं।
2. **योजना का चुनाव (Selection of the project)**– अपनी समस्या के समाधान अथवा आवश्यकता की पूर्ति हेतु विद्यार्थियों द्वारा कई प्रकार की योजनाएँ सामने रखी जा सकती हैं। इस पर खुलकर विचार गोष्ठी के रूप में चर्चा की जाती हैं। जिससे न केवल समस्या समाधान के कार्य में से सहायता मिले बल्कि उससे विषय विशेष को पढ़ने के भी उपयुक्त अवसर मिल सकें।
3. **योजना में नियोजन (Planning of the project)**– किसी उपयुक्त योजना का चयन करने के पश्चात् उस योजना पर किस तरह काम करना हैं। इसके लिए भली भांति सोच समझकर एक निश्चित रूपरेखा बनाने का प्रयत्न किया जाता हैं। किसका क्या–क्या कराना हैं तथा किस प्रकार योजना सम्बन्धी कार्यों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ना हैं तथा इन कार्यों को करते समय शैक्षणिक अवसर किस प्रकार के उपलब्ध होंगे, उन सबके बारे में पहले से ही तय करके आवश्यक तैयारी कर ली जाती हैं।
4. **योजना का क्रियान्वयन– (Executing the project)**– योजना पर कार्य करने के लिए अपने–अपने समूहों के अन्तर्गत अथवा वैयक्तिक रूप से जिस प्रकार से भी कार्य करने के बारे में पहले ही तय होता हैं, अपने–अपने कार्यों को करते रहते हे। शिक्षक द्वारा आवश्यक निर्देश दिये जाते हैं। रूचिपूर्वक परिस्थितियों में मिल जुलकर कार्य सम्पादित किया जाता हैं।
5. **योजना का मूल्यांकन करना (Evaluating the project)**– इस सोपान के अन्तर्गत पहले के सोपानों में किये गये कार्य की समीक्षा की जाती हैं। योजना का चयन ठीक था या नही, इसकी पूर्ति के लिए रूपरेखा ठीक प्रकार तैयार हुई थी या नहीं, काम का बँटवारा ठीक था या नहीं, उत्तरदायित्वों का निर्वाह किस ढ़ंग से किया गया तथा योजना से सम्बन्धित उद्धेश्यों को प्राप्त करने में सीमा तक सफलता मिली, विषयों का शिक्षण तथा अधिगम अनुभव को किस रूप में ग्रहण किया गया आदि विभिन्न पहलूओं के बारे में समीक्षात्मक ढ़ंग से विचार कर योजना सम्बन्धी सभी कार्यों का उचित मूल्यांकन करने का प्रयत्न यहॉ विद्यार्थी और अध्यापक दोनों के द्वारा किया जाता हैं। अनुभव की गई कठिनाइयों गलतियों तथा उपलब्धियों को आगे मार्गदर्शन के लिए उपयोग में लाने के लिए इस प्रकार का मूल्यांकन काफी उपयोगी सिद्ध होता हैं।
6. **योजना का लेखा–जोखा रखना (Recording of the project)**– योजना के प्रथम सोपान से लेकर पंचम सोपान तक जो कुछ भी घटित होता हैं, उससे सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण बातों को इस तरह नोट किया जाता रहता है, ताकि कार्यों का वास्तविक मूल्यांकन और भविष्य में उससे शिक्षा ग्रहण करने में आसानी हो।

6. **अच्छी शिक्षण विधि की विशेषताओं का उल्लेख करो।**

Describe the characteristic of a good method of teaching.

उत्तर– एक अच्छी शिक्षण विधि की विशेषताऍ निम्न प्रकार हैं–

1. **मनोवैज्ञानिकता**– एक अच्छी क्षिक्षण विधि में मनोवैज्ञानिकता का गुण पाया जाना स्वाभाविक हैं। यह विषय केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित होती हैं। तथा उनकी रूचियों, आवश्यकताओं, योग्यताओं का ध्यान रखा जाता हैं।
2. **व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक**– एक अच्छी शिक्षण विधि सब प्रकार से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के शारीरिक, मानसिक नैतिक एवं संवेगात्मक पक्षों के संतुलित विकास में सहयोगी होनी चाहिए।
3. **अध्यापक और विद्यार्थी के मधुर सम्बन्ध**– एक अच्छी विधि में पढ़ने पढ़ाने का, स्वस्थ वातावरण निर्मित होता हैं तथा विद्यार्थी और अध्यापक दोनों एक सदूसरे से पर्याप्त तालमेल रखते हुए विषय शिक्षण के उद्धेश्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहते हैं।
4. **क्रियाशीलता**– एक अच्छी शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पूर्ण सक्रियता प्रदान करने के प्रयत्न किए जाने चाहिए। जिससे छात्र क्रियाशील रह सके।
5. **व्यक्तिगत ध्यान देने में सहायक**– एक अच्छी शिक्षण विध ऐसे अवसर सयप्रदान करती हैं कि अध्यापक विद्यार्थियों के ऊपर ठीक प्रकार से व्यक्तिगत ध्यान देने में समर्थ हो सके।
6. **विषय शिक्षण के उद्धेश्यों की प्राप्ति में सहायक**– एक अच्छी शिक्षण विधि द्वारा विषय विशेष के शिक्षण उद्धेश्यों की प्राप्ति में प्रभावपूर्ण भूमिका निभाई जानी चाहिए।
7. **कक्षा शिक्षण सम्बन्धी विभिन्नसमस्याओं से मुक्त रहने में सहायक**– कक्षा शिक्षण में बिना किसी तनाव और समस्या का शिकार हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे, इस प्रकार का वातावरण बनाए रखना एक अच्छी शिक्षण विधि का उत्तरदायित्व हैं।
8. **व्यावहारिकता एवं प्रयोगशीलता**– एक अच्दी विधि शिक्षण के लिए प्रयोग में लाए जाने की दृष्टि से पूर्ण व्यावहारिक एवं सक्षम हो, इस दृष्टि से एक अच्छी विधि को निम्न विशेषताओं से मुक्त होना चाहिए।
   1. इसके द्वारा पाठ्यक्रम को समय पर समाप्त करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए।
   2. इस विधि पर आधारित पाठ्यपुस्तके भली–भांति उपलब्ध होनी चाहिए।
   3. इस विधि में प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी नहीं खटकनी चाहिए।
   4. वर्तमान कक्षा परिस्थितियों जैसे कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होना, पुस्तकालय तथा प्रयोगशाला आदि की व्यवस्था न होना, शिक्षण उपकरणों का उचित मात्रा में उपलब्ध न होना आदि जैसे प्रतिकूल शिक्षण परिस्थितियों में भी यथा संभव अच्छे परिणाम बनाए रखने में यह समर्थ होनी चाहिए।
   5. समय, शक्ति और धन के उपयोग की दृष्टि से यह अधिक खर्चीली नहीं होनी चाहिए।

7. व्याख्यान विधि से आप क्या समझते हैं? इतिहास शिक्षण में लाभ और हानियॉं बताइए।
What do you understand by lecturer method? Write down the advantages and disadvantages of it in History teaching.

उत्तर– व्याख्यान विधि के अर्थ को समझने के लिए निम्न परिभाषा इस प्रकार हैं–

1. **थॉमस एम. रिस्क**– " व्याख्यान तथ्यों, सिद्धान्तों या अन्य सम्बन्धों का प्रतिपादन हैं, जिनको शिक्षक अपने सुनने वालों को समझाना चाहता हैं।"
2. **जेम्स एम.ली.** – "व्याख्यान शिक्षण–शास्त्रीय विधि हैं जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता हैं।"

व्याख्यान विधि की विशेषताएँ–

1. इससे बालकों को ध्यान केन्द्रित करने की आदत पड़ती हैं।
2. इससे समय की बचत होती हैं। कम समय में अधिक विषय–वस्तु का बोध करवाया जा सकता हैं।
3. पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता हैं।
4. शिक्षक के गुणों एवं योग्यताओं का विशेष प्रभाव पड़ता हैं। व्याख्या की सजीवता से बालकों को सीखने के लिए प्रेरणा मिलती हैं।
5. पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य संदर्भ की जानकारी दी जा सकती हैं।
6. बालकों को नवीनतम तथ्यों की जानकारी दी जा सकती है।

व्याख्यान पद्धति के लाभ–

1. प्रस्तुत पाठ्यवस्तु का उच्च गुणात्मक स्तर।
2. एक ही विषय पर विभिन्न रूप से चिन्तन करने, भिन्न–भिन्न पहलुओं से विचार करने की अन्दृष्टि का विकास।
3. छात्र समस्याओं का तुरन्त समाधान सम्भव।
4. शिक्षक अपने प्रत्यक्ष प्रभाव से छात्रों की ग्राह्यता के स्तर में वृद्धि कर सकता हैं।
5. अच्छे व्याख्यान से प्रत्यक्षतः छात्र अन्तः क्रियाओं की, एकाग्रता की, एकाग्रता के नोट्स लेने और प्रश्नोत्तर आदि कुशलताओं का विकास होता हैं।
6. पाठ्यवस्तु संगठन के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित।
7. विद्यार्थी की सुनकर समझने की आदतों का विकास।
8. कम समय में अधिक विषयवस्तु की प्रस्तुति सम्भव।
9. उच्च कक्षाओं के शिक्षण की सर्वाधिक सुगम विधि।
10. कम खर्चीली प्रणाली, कम साधनों से शिक्षण सम्भव।
11. ज्ञानात्म्क पहलूओं के प्रशिक्षण हेतु श्रेष्ठ विद्या।

व्याख्यान पद्धति से हानियाँ–

1. लम्बे समय तक, कई कालांशों तक व्याख्यान करना शिक्षक की कार्यक्षमता एवं गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव डालता हैं।
2. एक स्तर तक पहुँचते–पहुँचते व्याख्यान नीरस लगते लगता हैं। कक्षा का वातावरण भी निष्क्रिय होने का अंदेशा रहता हैं।
3. व्याख्यान का केन्द्र–बिन्दु शिक्षक हैं, न कि छात्र, जिसमें शिक्षक ज्ञान उंडेल देता हैं।
4. विषय के सभी पक्षों के शिक्षण हेतु यह विद्या अनुपयुक्त हे।।
5. यह एक तरफा सम्प्रेषण विधि हैं, जिसमें शिक्षण–अनुदेंशन के द्विपक्षीय एवं त्रि–पक्षीय सिद्धान्तों की पूर्ति नहीं होती।
6. माध्यमिक और निम्न माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के अनुपयुक्त विद्या हैं।
7. सभी शिक्षक अच्छे अव्याख्यान प्रस्तुतकर्त्ता नहीं हो सकते।
8. कमजोर छात्रों के लिए उपयुक्त नहीं हैं।
9. प्रभावी व्याख्यान हेतु उपयुक्त प्रदर्शन–सामग्री और सन्दर्भ पुस्तके सभी विद्यालयों में उपलब्ध नहीं होती।
10. यह 'सुनने' पर आधारित विद्या हैं, जिसमें छात्र अवधान और अधिगम सीमित ही रह पाता हैं।

8. **प्रयोजन विधि का अर्थ क्या है? इसके विभिन्न सोपानों का वर्णन करते हुए इसके गुण–दोष पर प्रकाश डालिए।**
What is the meaning of Project Method? Discuss the various steps involved in use of this method. Throw light on its merits and demerits.

उत्तर– <u>**योजना विधि का अर्थ एवं परिभाषा**</u>

1. **डॉ. डब्ल्यू. एच. किल्पैट्रिक–** " योजना एक ऐसी सोद्धेश्य क्रिया हैं, जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण दिलचस्पी से सम्पन्न की जाती हैं।''
2. **जे.ए. स्टीवेन्सन–** "योजना एक ऐसा समस्यात्मक कार्य हैं, जो प्राकृतिक अवस्थाओं में पूरा किया जाता हैं।''

इन परिभाषाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता हैं कि योजना विधि बालकों द्वारा वास्तविक कार्य या क्रिया पर अधिक बल देती हैं। उन पर बाहर से बलपूर्वक अध्यापक द्वारा भी कुछ नहीं लादा जाता। इस विधि में 'प्रयोग करते हुए सीखो' पर बल दिया जाता हैं।

<u>**एक अच्छी प्रायोजना विधि की विशेषताएँ**</u>–

1. आर्थिक रूप से दुर्बल भारत देश में यदि हम योजना–पद्धति अपनाये तों सदैव ध्यान रखना चाहिए कि योजना मितव्ययी हो। अच्छी योजना मितव्ययी होनी चाहिए।
2. अच्छी योजना में छात्र सक्रिय रहते हैं।
3. योजना के अन्तर्गत चुनी गयी समस्या ऐसी हो, जिस पर सफलता से प्रयोग किये जा सके। समस्या पूर्णरूपेण सैद्धान्तिक नहीं होनी चाहिए।
4. अच्छी योजना छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होती हैं।
5. योजना की परिभाषा में, जैसा कहा गया हैं, योजना में कुछ उपयोगिता होनी चाहिए। यदि योजना उपयोगी हो तो अपने उद्धेश्यों की प्रापित कर पाएगी।
6. योजना नये–नये अनुभव करने वाली हो तथा पूर्व–अनुभवों पर आधारित हो।

<u>**प्रोजेक्ट विधि के विभिन्न चरण**</u>–

योजना विधि को काम में लाने हेतु हमें निम्न छः सोपानों से गुजरना पड़ता हैं–

1. परिस्थिति प्रदान करना
2. योजना का चुनाव
3. योजना में नियोजन
4. योजना का क्रियान्वयन
5. योजना का मूल्यांकन करना
6. योजना का लेखा–जोखा रखना

योजना विधि के आधारभूत सिद्धान्त–

1. उद्धेश्यपूर्णता का सिद्धान्त
2. क्रियाशीलता का सिद्धान्त
3. अनुभव का सिद्धान्त
4. वास्तविकता का सिद्धान्त
5. स्वतन्त्रता का सिद्धान्त
6. उपयोगिता का सिद्धान्त

प्रायोजना पद्धति के गुण–

1. प्रायोजना विधि एक मनोवैज्ञानिक विधि हैं।
2. यह जनतांत्रिक जीवनयापन का प्रशिक्षण देती हैं।
3. प्रयोजना विधि सामाजिक गुणों के विकास में सहायक हैं।
4. यह विधि विद्यार्थियों में श्रम का महत्व स्थापित करती हैं।
5. योजना विधि बहुत ही स्वाभाविक ढ़ंग से सामाजिक अध्ययन का जीवन एवं कार्यानुभव सम्बन्धी क्रियाओं के साथ समवाय करने का अवसर प्रदान करती हैं।
6. योजना विधि करके सीखने के सिद्धान्त पर बल देती हैं व रहने की प्रवृत्ति को निरूत्साहित करती हैं।
7. प्रायोजना विधि सामाजिक समायोजन हेतु प्रशिक्षण प्रदान करती हैं।
8. क्रियात्मक एवं व्यवयहारात्मक ढ़ंग से ज्ञान प्रदान करती हैं।

प्रायोजना विधि की सीमाऍं–

1. प्रायोजना विधि सम्पूर्ण पाठ्यक्रम हेतु उपयुक्त नहीं हैं।
2. इस विधि का अन्य दोष हैं कि यह क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित ज्ञान प्राप्ति में सहायक नहीं हैं।
3. यह विधि अत्यन्त खर्चीली हैं।
4. इस विधि में विद्यालय कार्य अव्यवस्थित हो जाता हैं।
5. इस विधि में शिक्षकों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं।
6. पाठ्यक्रम समय पर समाप्त होना अत्यन्त कठिन हैं।
7. विद्यालय में विद्यमान परिस्थितियों के लिए अनुपयुक्त हैं।

9. **इतिहास शिक्षण में समस्या समाधान विधि को परिभाषित कीजिये तथा इसके गुणों व सीमाओं का वर्णन कीजिये।**
Define problem solving method in taching of civics. Describe its merits and lilmitations.

उत्तर– समस्या समाधान विधि शिक्षण की नवीन पद्धति हैं। इसके अन्तर्गत मानसिक निष्कर्षों पर अधिक बल दिया जाता हैं। यह एक ऐसी क्रिया विधि हैं, जिसमें छात्रों के सम्मुख कोई भी चुनौतीपूर्ण समस्या रखकर उसके समाधान का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता हैं।

परिभाषाऍं–

1. ''दो या दो से अधिक सीखे गये प्रत्यय या प्रन्नियमों को एक उच्च स्तरीय प्रन्नियम के रूप में विकसित किया जाता हैं, उसे समस्या समाधान अधिगम कहते हैं।''

2. वेस्ले एवं रोवस्की– ''समस्या एक ऐसी चुनौती हैं, जिसका सयामना करने के लिए अध्ययन व खोज की आवश्यकता पड़ती हैं।''

समस्या समाधन पद्धति के सोपान– समस्या समाधान पद्धति के पाठ के शिक्षण के लिए निम्नांकित सोपान का अनुसरण किया जाता है–

1. सर्वप्रथम समस्या का निर्माण किया जाता हैं।
2. तथ्यों का संकलन किया जाता हैं।
3. समस्या के समाधान के लिए तथ्यो का चयन किया जाता हैं।
4. अन्त में मूल्यांकन किया जाता हैं।

समस्या समाधान पद्धति के गुण–

1. इस विधि में छात्र सक्रिय रहते हैं।
2. छात्रों में रूचि व प्रेरणा बनी रहती हैं।
3. छात्रों में चिन्तन प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता रहता हैं।
4. यह विधि विश्लेषण व संश्लेषण का अभ्यास करवाती हैं।
5. वैयक्तिक भिन्नता पर आधारित रहती हैं।
6. समस्या समाधान विधि भावी जीवन के लिए तैयार करती हैं।
7. यह एक मानसिक विधि हैं।

समस्या समाधान की सीमाएँ–

1. इस विधि में श्रम व समय दोनों ही अधिक लगता हैं।
2. इसमें कोई निश्चित व व्यवस्थित कार्यक्रम नहीं होता हैं।
3. यह उच्च स्तर के लिए बहुत उपयोग विधि हैं।
4. इसकी क्रियान्विति प्रभावशाली हो, इसके लिए वाद–विवाद का उपयोग होना आवश्यक हैं।
5. पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त यदि अध्ययन सामग्री न हो तो इसका प्रयोग होना कठिन होता हैं।
6. इसकी क्रियान्विति में शिक्षक कुशल होना चाहिए।

10. इतिहास शिक्षण में पर्यवेक्षित अध्ययन विधि को परिभाषित कीजिए तथा इसके गुण व सीमाओं का वर्णन कीजिए?
Define supersised studies in teaching of civics. Describe its merits and limitation.

उत्तर– पर्यवेक्षित अध्ययन विधि छात्र आधारित ऐसी शिक्षण विधि हैं, जिसमें कक्षा के छात्र समूह अध्यापक की देख रेख में स्वयं अध्ययन कार्य पूर्ण करते हैं।

आर्थर सी. बाइनिंग और डेविड एच. बाइनिंग के अनुसार– ''पर्यवेक्षित अध्ययन विधि वह शिक्षण पद्धति हैं, जिसके अन्तर्गत शिक्षक द्वारा अपने छात्रों का उस समय या पर्यवेक्षण किया जाता हैं, जब वे अपनी 'डेस्क' या मेजों पर कार्यरत् होते हैं। इस दौरान छात्र अपने शिक्षण द्वारा प्रदत् कार्य को पूर्ण करने में व्यस्त रहते हैं।''

पर्यवेक्षित अध्ययन विद्या के गुण (Merits of the supersised study method)-

1. सही अध्ययन आदतों के विकास में सहायक
2. स्वाध्याय की प्रेरक।
3. विषय सामग्री की व्याख्या विलेषण, क्रियात्मक पक्षों की पहचान। अनुपयोग व चिन्तन स्तर तक अध्ययन करने में सहायक।
4. मितव्यतापूर्वक समय का सदुपयोग करते हुए अधिक अधिगम के उपयुक्त।
5. पाठ्य पुस्तक विधि का एक परिष्कृत विकल्प उपलब्ध।
6. तत्काल सहायता से शंका समाधान सम्भव, शिक्षक का मार्गदर्शन तत्काल उपलब्ध रहने के कारण छात्रोपयोग अधिक।
7. प्रयोग में सुगम व अधिक व्यावहारिक।
8. छात्रों को उनकी आवश्यकता के आधार पर अध्ययन के अवसर प्रदान करने में सक्षम।
9. बहुआयामी कौशलों के विकास में सहायक (जैसे–मानचित्र, ग्लोब, विश्वकोष, शब्दकोष आदि के प्रयोग के कौशल)

पर्यवेक्षित अध्ययन विधि की सीमाएँ
(Limitations of supervised study method)

1. उपयुक्त अध्ययन सामग्री की उपलब्धि कठिन।
2. शिक्षक पर निर्भरता बढ़ते रहने की आशंका।
3. आम–विद्यालयी समय तालिका में समायोजन कठिन।
4. कमजोर छात्रों को अधिक ध्यान, प्रतिभा सम्पन्न छात्रों के योग्य अध्ययन सामग्री प्रायः उपलब्ध नहीं हो जाती।
5. इस विधि से शिक्षण के बहु–आयामी उद्धेश्यों की पूर्ति नहीं होती (जैसे–अभिव्यक्ति, समूह के साथ कार्य करने की प्रवृत्ति, निर्माण व प्रयोग सिद्धता आदि)।

अन्ततः यह विधि चुनिंदा प्रकरणों की प्रस्तुति और उपचारात्मक शिक्षण के अच्छे अवसर प्रदान करती हैं। इतिहास शिक्षक अन्य विद्याओं के साथ अद्यतन विषयों के शिक्षण के इस विधि को प्रयुक्त कर शिक्षण कर सकते हैं।

11. वाद–विवाद विधि का अर्थ बताइये एवं उसके संचालन और गुण व दोष बताइए।
Explain the discuss method, its steps and the merits and demerits of it?

उत्तर– यह शिक्षण की वह पद्धति हैं, जिसमें छात्र तथा शिक्षक मिल–जुलकर किसी प्रकरण या समस्या के सम्बन्ध में स्वतंत्रतापूर्वक सामूहिक वातावरण में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

वाद–विवाद विधि का अर्थ/परिभाषा–

जेम्स एम.ली.– "वाद–विवाद एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया हैं, जिसमें शिक्षक तथा छात्र सहयोगी रूप से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते हैं।"

योकम एवं सिम्पसन– ''वाद–विवाद बातचीत का एक विशिष्ट स्वरूप हैं, इसमें बातचीत की अपेक्षा अधिक विस्तृत एवं विवेक युक्त विचारों का आदान–प्रदान होता हैं। सामान्यतः वाद–विवाद में महत्वपूर्ण विचारों को शामिल किया जाता हैं।

वाद–विवाद का संचालन– वाद–विवाद के संचालन में निम्नांकित चार बिन्दु सम्मिलित होते हैं–

1. प्रारम्भ (Orientation)
2. व्याख्या (Elaboration)
3. विश्लेषण (Analysis)
4. सारांश (Summary)

वाद–विवाद के संचालन हेतु कक्षा को कुछ उपभागों में विभाजित किया जा सकता हैं। वाद–विवाद प्रमुख लक्ष्य छात्रों में वांछनीय परिवर्तन लाना हैं। मूल्यांकन हेतु विभिन्न प्रकार की प्रश्नावलियॉ या साक्षात्कार का प्रयोग किया जा सकता हैं।

वाद–विवाद पद्धति के गुण (Merits of Discussion Method)

वाद–विवाद पद्धति के निम्नलिखित गुण हैं–

1. इस पद्धति से छात्र सोद्धेश्यपूर्ण रूप से अध्ययन करना सीख जाते हैं।
2. इसके द्वारा छात्रों से सहिष्णुता एवं सहयोग की भावना का विकास होता हैं।
3. इस पद्धति से छात्र विषय–वस्तु का चयन एवं संगठन करना सीखते हैं।
4. इसके द्वारा छात्रों में स्वाध्याय की आदत का विकास होता हैं।
5. इससे छात्र की तक्र एवं निर्णय शक्तियों का विकास होता हैं।
6. यह पद्धति व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर निर्भर हैं।
7. जेम्स एम. ली. के अनुसार इस पद्धति के द्वारा छात्र सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने वाला बन जाता हैं।
8. इस पद्धति के द्वारा छात्रों में स्वतंत्र रूप से विचार करने की आदत का विकास होता हैं।
9. इसके द्वारा छात्र अपने भावों एवं विचारों को सुव्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करना सीखते है।।
10. छात्र सामूहिक रूप से निर्णय लेना सीख जाते हैं।

वाद–विवाद पद्धति के दोष (Demerits of Discussion Method)–

1. इससे प्रायः पिछड़े और मंद बुद्धि के छात्रों को विकास का पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं होता।
2. सभी शिक्षक वाद–विवाद का संचालन कुशलतापूर्वक नहीं कर सकते।
3. इस पद्धति का प्रयोग छोटी (निम्नस्तर) कक्षाओं में नहीं किया जा सकता हैं।
4. इससे सम्पूर्ण विषय–वस्तु का अध्यान सम्भव नहीं हैं।
5. उद्धेश्य केन्द्रित न रह पाने की दशा में वाद–विवाद समय के अपव्यय के सिवाय और कुछ नहीं।
6. इस पद्धति में समय अधिक लगता हैं।

12. मस्तिष्क विप्लव के सोपानों को स्पष्ट करते हुए इसके लाभ व हानि बताइए?
Describe the steps of brain storming, its merits and demrits?

उत्तर– यह एक छात्र प्रधान, चिन्तन स्तरीय, विचार–उद्धेलक विद्या हैं। इसे मस्तिष्क 'विप्लव' उद्वेंलक, मस्तिष्क प्रवेगी या मस्तिष्क आवेषक आदि नाम दिये जा सकते हैं। यह विधि छात्रों के मस्तिष्क में किसी 'समस्या' मुद्धे,

परिस्थिति या घटनाक्रम को लेकर उद्धेलन उत्पन्न करती हैं और उक्त स्थितियों पर छात्रां को स्तन्त्र व निर्भीक वैचारिक प्रतिक्रिया करने का अवसर प्रदान करती हैं। इस विधि से व्युत्पन विचार क्रान्तिकारी, मौलिक आलोचनात्मक, विपरीत सोच वाले और नितान्त मौलिक भी होते हैं।

मस्तिष्क विप्लव के सोपान (Steps of Brain storming)– विल्सन (Wilson) 1987 ने मस्तिष्क उत्प्लवन के निम्नलिखित आठ सोपान दिए हैं–

1. **प्रथम–सोपान (परिचय)**–
   - **सक्रिय सहभागिता**– प्रत्येक सदस्य को सअपने विचार अभिव्यक्त करने हें।
   - **आलोचना**– प्रत्येक बच्चे एक दूसरे का सम्मान करे, आलोचना नहीं।
   - **विचार अभिव्यक्ति**– मुक्त चिन्तन का ही स्वा किया जाएगा।
   - **संख्या**– विचारों की गुणात्मकता से अधिक मात्रा की आवश्यकता अधिक हैं।
   - **तारतम्यता**– प्रत्येक सदस्य किसी दूसरे सदस्य के विचारों को जोड़कर नए विचार करने के लिए स्वतंत्र हैं।
2. **द्वितीय–सोपान**– हिमभंजक (Ice Breaker) हिमभंजक का अर्थ हैं ऐसा विचार, जो परम्परागत या सामान्यतः प्रचलित विचार को खण्डित करते हुए नए विचार उत्पन्न करे।
   उदाहरण– सामान्यतः पेन का कार्य लिखना है, परन्तु इसके निम्न कार्य भी हो सकते हैं–
   1. संकेतक के रूप में प्रयोग करना।
   2. बुक माक्र के रूप में प्रयोग।
   3. कॉपी में छेद करने के लिए
   4. किसी डिब्बे का ढ़क्कन खोलने के लिए।
3. **तृतीय सोपान– विषय या समस्या परिभाषीकरण** (statement of subject or problems)– इस सोपान में एक स्पष्ट कथन के द्वारा मस्तिष्क उत्प्लवन सत्र के विषय को परिभाषित किया जाता हैं।

   उदाहरण–
   i. जनसंख्या पर नियंत्रण की समस्या
   ii. आतंकवाद पर नियंत्रण की समस्या
   iii. भ्रष्टाचार पर नियंत्रण की समस्या
4. **चतुर्थ सोपान– समस्या पर संकेन्द्रण** (Attention on problem)– इसमें विद्यार्थियों से समस्या के समाधान के बारे में पूछा जाता हें।

   उदाहरण के लिए– जनसंख्या नियंत्रण की समस्या के निम्न समाधान विद्यार्थी बता सकते हैं–

   - जागरूक करके
   - सुविधाओं का प्रलोभन देकर
   - कानून बनाकर
   - आयकर में छूट देकर
   - धर्म से जोड़कर

- बैंक की ऋण सुविधाओं को देकर
- नौकरी के साथ जोड़कर

5. **<u>पंचम सोपान– संकेन्द्रित कथन का चयन (Selection of centralized statement)</u>–** इसमें अध्यापक लोकतान्त्रिक तरीके से छात्रों की सहायता लेते हुए एक संकेन्द्रित कथन का चयन करता हैं।

   उदाहरण– सुविधाओं का प्रलोभन देकर।

6. **<u>षष्ठम सोपान– मस्तिष्क उप्पलवन</u>**– इसमें अध्यापक विद्यार्थियों से संकेन्द्रित कथन के सन्दर्भ मं विचार प्राप्त करता हें। ये विचार का समाधान का विकास करते हैं। जैसे–
   1. व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में प्राथमिकता।
   2. होटलो में प्राथमिकता।
   3. रेल–बस यात्रा की टिकट मिलने में प्राथमिकता।

7. **<u>सप्तम सोपान</u>– <u>मूर्खतम सुझाव (suggestion)</u>–** इस चरण में मूर्खतम सुझाव की घोषणा की जतीी हैं। इसमें निम्न अवस्थाएँ होती हैं–
   1. मूर्खतम सुझाव का चयन
   2. इस सुझाव को कैसे उपयोगी बनाया जाए
   3. उपयोगी सुझाव

8. **<u>अष्टम सोपान</u>–(<u>मूल्यांकन</u>)**– मस्तिष्क उत्प्लवन सत्र की समाप्ति के पश्चात ढ़ेरों विचार एवं सुझाव ऐसे बच जाते हैं, जो न तो प्रवाहता के साथ में प्रस्तुत किए गए, न ही जिनका मूल्यांकन किया गया हो, इसलिए कुछ समय पश्चात् मुख्य सत्र का मूल्यांकन किया जाता हैं।

<u>मस्तिष्क विप्लव के लाभ (Merits of Brain Storms)</u>–

1. पूर्णतः नवीन विचारों एवं सुझावों को उत्पन्न किया जाता हैं।
2. सृजनात्मकता को प्रोत्साहित किया जाता है।
3. अधिक तैयारी की आवश्यकता नहीं होती हैं।
4. प्रशिक्षण के अलावा अन्य स्थितियों में भी उपयोग में लाई जा सकती हैं।
5. सभी प्रशिक्षणार्थियों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त की जाती हैं।

<u>मस्तिष्क विप्लव की सीमाएँ (Limitations of Brain Storms)</u>–

1. सत्रों का नियंत्रण कठिन होता हैं।
2. कुछ प्रतिभागी सहभागिता करने के प्रति उदासीन होते है।
3. किसी विषय के अध्ययन की सुव्यवस्थित विधि नहीं हैं।
4. मूल्यांकन कठिन होता हैं एवं अधिक समय खर्च होता हैं।
5. परिणामों की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती हैं।

13. **क्षेत्र पर्यटन का अर्थ व उद्धेश्य बताइये।**
Describe the meaning and obnjective of field trips.

उत्तर– पर्यटन का इतिहास शिक्षण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थान हैं। इनके द्वारा छात्रों को स्वतः ज्ञान प्राप्त होता हैं। जिनको छात्र अच्छी प्रकार से समझ लेते हैं। इसलिए आधुनिक युग में विद्यालयों में पर्यटन, विभिन्न यात्राएँ आदि आयोजित की जाती हैं। इसके शिक्षण में ऐसी पद्धतियॉ और क्रियाओं का समावेषण आवश्यक हैं, जिसमें छात्र स्वाभाविक परिस्थितियों में सद्नागरिकता, राष्ट्रीयता एवं सॉस्कृतिक एकता मूल्यों को आत्मसात् कर सके।

क्षेत्रीय भ्रमण के उद्धेश्य–

1. **समग्र विकास**– क्षेत्रीय भ्रमण का आयोजन नगारिक शास्त्र के छात्रों के नैतिक, शारीकिर, सामाजिक, सॉस्कृतिक सौन्दर्यात्मक एवं बौद्धिक विकास के बहुआयामी पक्षों को विकसित करने के उद्धेश्य की पूर्ति करते हैं।
2. **कक्षा–शिक्षण और एकरूपता को तोड़ने हेतु**– बन्द कमरों का शिक्षण एकरूपता और उबाऊपन का अहसास बढ़ा देता हैं। क्षेत्र भ्रमण इस बोरीयत से बचाता हैं। प्राकृतिक वातावरण में ताज़गी और खुलेपन का अहसास कराने और कक्षा–शिक्षण की एकरूपता को तोड़ने हेतु इस प्रकार के भ्रमण आयोजित करने चाहिए।
3. **प्रत्यक्ष, सक्रिय और छात्र प्रधान अनुभव विधि अर्जित करने के अवसर देने हेतु**– एडमर डेल के के अनुसार– ''प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से स्थाई अधिगम होता हैं। क्षेत्र–भ्रमण छात्रों को स्वयं सक्रिय रहकर अधिगम अर्जित करने के अवसर देने हेतु आयोजित किये जाते हैं।
4. **सॉस्कृतिक पहचान और कर्त्तव्य बोध हेतु**– क्षेत्रीय भमण द्वारा अपने क्षेत्र की सॉस्कृतिक धरोहरों व स्थलों को अवलोकन द्वारा छात्रों में सॉस्कृतिक अस्मिता का बोध एवं सॉस्कृतिक स्थलों के प्रति नागरिक कर्त्तव्यों की चेतना उत्पन्न के उद्धेश्य पूर्ण होते हैं।
5. **विभिन्न दक्षताओं के विकास हेतु**– शैक्षिक भ्रमण छात्रों में निरीक्षण सर्वेक्षण, मैपिंग, साक्षात्कार, प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण क्रियानुसंधान जैसी कुशलताओं और दक्षताओं के विकास के उद्धेश्य से भी आयोजित किये जाते हैं।
6. **प्रजातान्त्रिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण हेतु**– क्षेत्र भ्रमण इतिहास छात्रों में नेतृत्वशीलता, सहभागिता, उत्तरदायित्व पूर्ति जैसे मूल्यों को सुदृढ़ करने के उद्धेश्य की पूर्ति करते हैं।
7. **विद्यालय एवं समुदाय को जोड़ने हेतु**– विद्यालय समुदाय को सामुदायिक संसाधनों से लाभाविन्त करने एवं समुदाय को विद्यालय से लाभ पहुॅचाने व एक–दूसरे से निकट का सम्बन्ध स्थापित कर व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने के उद्धेश्यों की पूर्ति हेतु क्षेत्र–भ्रमण आवश्यक हैं।

Unit – IV

Instructional Support System

- Audio-visual Aids in Teaching History
- Text-book, teacher
- Community Resources, Computer, Television
- History room
- Planning of historical excursion
- Co-curricular activities

Unit 4

Instructional Support System.

अनुदेशनात्मक सहायक व्यवस्था

प्रश्न–1 एक अच्छे अध्यापक को सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए–
(अ) अपने ज्ञान को बढ़ाने पर (ब) अपने विद्यार्थियों को प्रभावशाली ढ़ंग से पढ़ाने पर
(स) अपने विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर (द) अपने विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम पर (ब)

प्रश्न–2 दल शिक्षण विधि का सर्वप्रथम प्रयोग कब हुआ?
(अ) सन् 1020 में (ब) सन् 1950–60 में
(स) सन् 1930–35 में (द) सन् 1856–60 में (ब)

प्रश्न–3 दैनिक पाठ योजना के निर्माण में उद्धेश्यों को परिभाषित कक्षा, पाठ्य–वस्तु का चयन करना, कमबद्ध करना तथा प्रस्तुतीकरण की विधियों का निर्णय करना प्रमुख है।'' यह कथन है–
(अ) बीलिंग का (ब) पारिख का
(स) बिनिंग तथा विनिंग का (द) बी.डी. भाटिया का (स)

प्रश्न–4 शिक्षण व्यवस्था के सभी पक्षों के व्यावहारिक रूप का आलेख ही पाठ योजना है– यह कथन है।
(अ) डेविस का (ब) बोसिंग
(स) पारिख का (द) बी.डी. भाटिया का (अ)

प्रश्न–5 पाठ योजना उस कथन को शिर्षक देती है जो इसका वर्णन करता है कि क्या उपलब्धियॉ प्राप्त करती है और किन साधनों के माध्यम से उनको कक्षा की क्रियायों के प्रतिक्रियास्वरूप प्राप्त करना है।'' यह परिभाषा है–
(अ) बोसिंग की (ब) बी.डी. भाटिया की
(स) पारिख का (द) फ्रॉबेल की (ब)

प्रश्न–6 अभिक्रमित अनुदेशन किस मनोवैज्ञानिक ने दिया–
(अ) बी.एफ. स्किनर (ब) सिडनी एल. प्रेसी
(स) ड्यूमास एवं बेकनर (द) डी.एल. कुक (अ)

प्रश्न–7 सूक्ष्म–शिक्षण का प्रारम्भ किस विश्वविद्यालय में हुआ?
(अ) अमेरिका विश्वविद्यालय (ब) लंदन विश्वविद्यालय
(स) ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (द) स्टेंनफोर्ड विश्वविद्यालय (द)

प्रश्न–8 सूक्ष्म–शिक्षण का समय होता है–

(अ) 5–10 मिनट का (ब) 5 से 20 मिनट का

(स) 5–30 मिनट का (द) 1 घण्टे का (अ)

Short type questions
(लघुत्तरात्मक प्रश्न)

प्रश्न–1 श्रव्य–दृश्य साधनों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
Explain the meaning of Audio-visual Aids.

उत्तर – श्रव्य–दृश्य सामग्री मुद्रित अथवा लिखित शब्द के अतिरिक्त वे साधन है, जो वस्तु विशेष या बिन्दु–विशेष की स्पष्ट धारणा बनाने में सहायता प्रदान करते है। वस्तुतः किसी वस्तु की स्पष्ट धारणा के निर्माण में उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। परन्तु इस विशाल एवं जटिल संसार की प्रत्येक वस्तु का ज्ञान इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता हें। इस प्रकार हमें उसे समझने के लिए प्रतिरूपों की सहायता लेनी पड़ती है। श्रव्य–दृश्य सामग्री द्वारा ही हमें इन प्रतिरूपों को प्रदान किया जाता हैं।

शिक्षा क्षेत्र में इस प्रकार श्रव्य–दृश्य सामग्री को शिक्षण सहायक सामग्री (Teachingaids) के नाम से जाना जाता है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुगम, सहज एवं प्रभावपूर्ण बनाने हेतु श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग किया जाता है। इतिहास शिक्षण की दृष्टि से श्रव्य–दृश्य सामग्री वे साधन है, जिनके प्रयोग के माध्यम से बालक की श्रव्य एवं दृश्य ज्ञानेन्द्रियॉं सक्रिय हो जाती है। तथा वे विषय–वस्तु के कठिन से कठिन एवं सूक्ष्म से सूक्ष्म अंश को सहजता समझ जाते हैं।

<u>परिभाषाऍं</u>–

- **इ.सी. डेन्ट** के अनुसार – ''श्रव्य–दृश्य वह सामग्री है, जो कक्षा में या अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित या बोली गई पाठ्य–सामग्री के समझने में सहायता प्रदान करती है।''
- **एलविन स्ट्रांग (Elvin Strong)** के अनुसार – ''श्रव्य–दृश्य सामग्री के अन्तर्गत उन सभी साधनों को सम्मिलित किया जाता है, जिसकी सहायता से छात्रों की पाठ में रूचि बनी रहती है तथा वे उनसे सरलतापूर्वक समझते हुए अधिगम के उद्धेश्य को प्राप्त कर लेते है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि श्रव्य–दृश्य सामग्री न केवल शिक्षण, अपितु शिक्षण विधियों, प्रविधियों एवं कौशलों को प्रभावत कर इन्हें अधिगम में सहायक बनाती है।

प्रश्न–2 इतिहास एक सुस्त विषय माना जाता है आप कला वातावरण को सजीव, रोचक एवं प्रभावोत्पादक बनाने के लिए किन–किन उपायों को अपनाएंगे।

History is regarded as a dull subject. What measures would you adopt for creating active interesting and effective environment in the class-room?

Or (अथवा)

विभिन्न श्रव्य–दृश्य सामग्रियों का उल्लेख कीजिए।

Name the various Audio-visual Aids.

उत्तर – इन्द्रियों के प्रयोग के आधार पर श्रव्य–दृश्य सामग्री को निम्न तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. श्रव्य सामग्री
2. दृश्य सामग्री
3. श्रव्य–दृश्य सामग्री

इतिहास शिक्षण में प्रयुक्त इन तीन प्रकार की सामग्री को निम्न चार्ट द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।
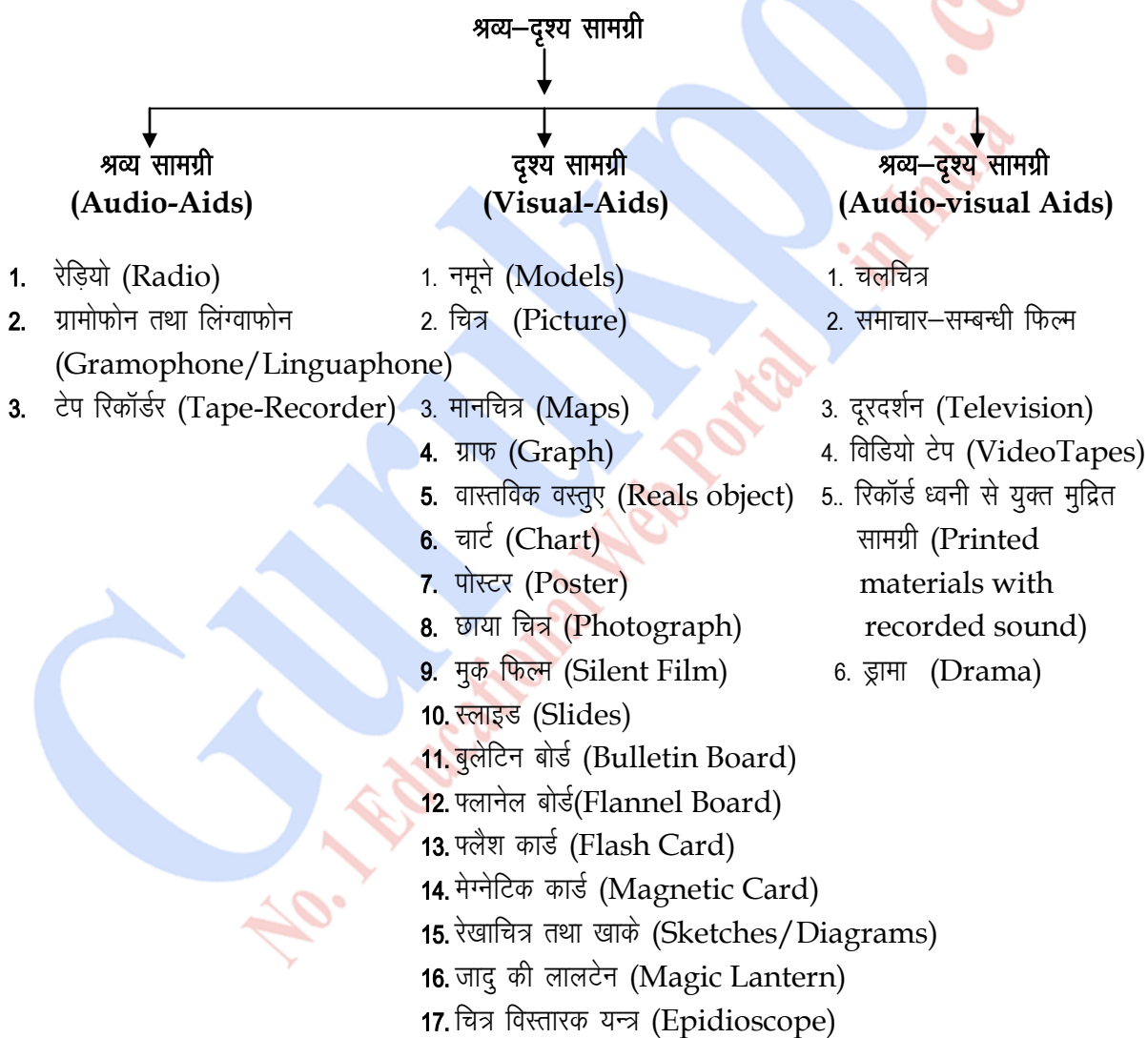
एक वर्गीकरण के अनुसार श्रव्य–दृश्य सामग्री को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है–

1. प्रक्षेपित सामग्री
2. अप्रक्षेपित सामग्री

श्रव्य–दृश्य सामग्री/सहायक सामग्री

↓

प्रक्षेपित सामग्री (Projected Aids)

1. फिल्म (Film)
2. फिल्म खण्ड (Film Strips)
3. ओपेक प्रोजेक्शन
4. ओवर हैड प्रोजेक्शन (Over Head Projection)
5. स्लाइड (Slides)

अप्रेक्षेपित सामग्री (Non-Projected Aids)

1. प्रतीकात्मक सामग्री
2. प्रदर्शन पट्ट (Graphic aids)
3. आयामी सामग्री (Dimensional aids
4. श्रव्य–सामग्री (Audio aids)
5. श्रव्य–दृश्य सामग्री (Audio-visual aids)
6. क्रियात्मक सामग्री (Activity aids)
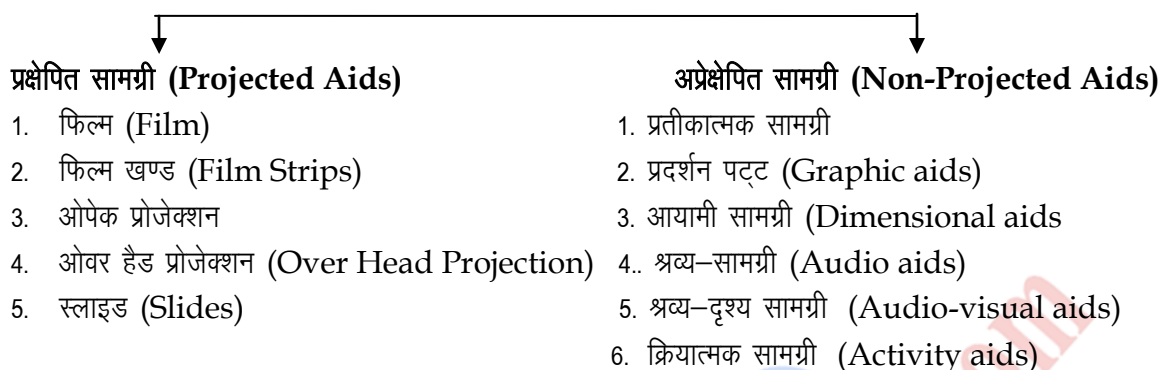
एडगर डेल के अनुसार – डेल ने सम्पूर्ण श्रव्य–दृश्य सामग्री को अनुभव–शंकु (cone of experience) के रूप में विस्तृत किया है–

- मौखिक प्रतीक (Verbal Symbol)
- दृश्यात्मक प्रतीक (Visual Symbol)
- रिकॉर्ड, रेड़ियो, आदि (Recording radio, etc.)
- चलचित्र (Motion Picture)
- शैक्षिक टेलीविजन (Educational Television)
- प्रदर्शनी (Exhibits)
- अध्ययन पर्यटन (Study Trips)
- प्रदर्शन (Demonstration)
- नाटकीय अनुभव (Dramatised experience)
- रचित अनुभव (Contrained experience)
- प्रत्यक्ष साभिप्राय अनुभव (Direct purposeful experience)

प्रश्न–3 "सहायक सामग्री शिक्षण को बोधगम्य, प्रभावी एवं रोचक बनाती है।" संक्षेप में इस कथन की विवेचना कीजिए।
"Teaching aids make teaching easy, effective and interesting." In short discuss the statement.

Or (अथवा)

इतिहास शिक्षण में श्रव्य–दृश्य के महत्व पर टिप्पणी लिखिये।
Write a note of the importance of Audio-visual Aids in History teaching.

उत्तर – श्रव्य–दृश्य सामग्री/सहायक सामग्री का शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। यह सामग्री शिक्षण को अधिक रोचक बनाकर प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण देती है।

- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार–** "दृश्य श्रव्य उपकरण सीखने वालो को व्यक्तियों, घटनाओ, वस्तुओ और कारण तथा प्रभाव सम्बन्धों के नियोजित अनुभवों को लाभ उठाने का अवसर देते है।"
- **विरिच तथा गुलर के अनुसार–** "दृश्य श्रव्य विधियॉ और वस्तुएँ भावपूर्ण सिखने, प्रबल छात्र रूचि और उत्साह तथा विद्यालय में सफलता के लिए अति लाभदायक आधार है।"

इतिहास शिक्षण में श्रव्य–दृश्य सामग्री (सहायक सामग्री) के महत्व को निम्न रूपों में वर्णित किया जा सकता है।

1. **स्थाई एवं प्रभावपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति**– इतिहास शिक्षण विषय से सम्बन्धित ज्ञान की स्थाई एवं प्रभावपूर्ण प्राप्ति में श्रव्य–दृश्य सामग्री काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।
2. **नवीन शिक्षण विधियों तथा तकनीकों के उचित प्रयोग में सहायक**– नवीन उपयुक्त शिक्षण विधियों एवं तकनीकों के उचित ढंग से उपयोग करने के अवसर प्रदान करने में श्रव्य–दृश्य उपकरण और साधन सफल भूमिका निभा सकते है। विभिन्न प्रकार की श्रव्य–दृश्य उपकरण तथा क्रियात्मक साधन जैसे– संग्रहालय, भ्रमण तथा सामुदायिक साधन आदि का प्रयोग इस दिशा में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
3. **कक्षा के वातावरण को सजीव एवं सक्रिय बनाना**– उचित ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि कक्षा का वातावरण पर्याप्त रूप से सक्रिय एवं सजीव बना रहे है। श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग इस दिशा में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
4. **प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने का सर्वोत्तम विकल्प**– ज्ञान प्राप्ति में प्रत्यक्ष अनुभवों का कोई सानी नहीं। परंतु अनेक बार कई कारणों से प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा ज्ञान प्राप्ति कर पाना सम्भव नहीं हो पाता है। श्रव्य–दृश्य सामग्री इस परिस्थिति में प्रत्यक्ष अनुभवों के सर्वोत्तम विकल्प की भूमिका अच्छी तरह निभा सकते है।
5. **विशिष्ट विद्यार्थियों की आवश्यकता पूर्ति में सहायक**– श्रव्य–दृश्य साधनों के प्रयोग द्वारा विशिष्ट विद्यार्थियों जैसे– मन्द बुद्धि बालक, प्रतिभाशाली बालक, पिछड़े हुए बालक, अन्धे और बहरे बालक आदि को समुचित लाभ पहुँचाया जा सकता है।
6. **विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञान की प्राप्ति**– ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञान का द्वार कहा जाता है। श्रव्य–दृश्य साधनों के प्रयोग से महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग द्वारा ज्ञान प्राप्ति के द्वार खुल जाते है और परिणामस्वरूप इतिहास विषय का विभिन्न प्रकार का ज्ञान उन्हे सहज ही प्राप्त हो जाता है।
7. **विषय–वस्तु की स्पष्टता**– इतिहास विषय से सम्बन्धित बहुत से ऐसे विचारों, प्रक्रियाओं आदि को व्याख्यान विधि (शब्दों के द्वारा वर्णन) द्वारा पढ़ाना काफी मुश्किल होता है तथा विद्यार्थी को भी विषयवस्तु स्पष्ट नहीं होती, परन्तु श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग कठिन से कठिन विषय वस्तु को भी सरल, स्पष्ट और सार्थक बना देता है।
8. **विषय को रोचक बनाना**– श्रव्य–दृश्य साधनों के प्रयोग से विषय का पठन पाठन रोचक और सरल बन जाता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में रूचि और ध्यान को बनाए रखना सहज हो जाता है।
9. **शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों तथा शिक्षण सूत्रों का प्रयोग**– शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सफलता में शिक्षण के सामान्य सिद्धानत तथा शिक्षण सूत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं, कि श्रव्य–दृश्य साधनों का प्रयोग इन सिद्धान्तों एवं सूत्रों के उपयोग के उचित अवसर प्रदान करता है।
10. **समय एवं परिश्रम की बचत**– श्रव्य–दृश्य साधनों के प्रयोग में पढ़ने और पढ़ाने दोनों क्रियाओं में विद्यार्थी और अध्यापक के समय और परिश्रम की बचत होती है।
11. **अनुशासनहीनता की समस्या के हल में सहायक**– श्रव्य–दृश्य साधनों का प्रयोग कक्षा के वातावरण को रोचक एवं सजीव बनाता है तथा विद्यार्थियों को सक्रिय रूप में ज्ञान ग्रहण करने की ओर तत्पर रहता है। परिणामस्वरूप कक्षा में अनुशासनहीनता जैसी समस्या को दूर करने में श्रव्य–दृश्य साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभने में काफी समर्थ सिद्ध हो सकते है।

1. **श्रव्य उपकरण**– श्रव्य उपकरणों में वे उपकरण आते है जिनका ज्ञान छात्र कानों की सहायता से करते है, सुनकर करते है। ये उपकरण निम्न प्रकार है–

रेड़ियो (Radio) – शिक्षण के क्षेत्र में रेड़ियों एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जता है, शिक्षा के क्षेत्र में रेड़ियों का उपयोग 20वीं शताब्दी की देन माना जाता है। रेड़ियों पर समय–समय पर ऐतिहासिक कहानियों का प्रसारण होता रहता है। जिसमें बालक अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता है।

सामान्यतः रेड़ियों दो प्रकार के पाठों का प्रसारण करता हैं।

1. ज्ञानवर्द्धक
2. प्रत्यक्ष शिक्षण पाठ

1. **ज्ञानवर्द्धक**– ज्ञानवर्द्धक पाठों में उन प्रसारणों को सम्मिलित करते है। जिनका पाठ्यक्रम के विशिष्ट प्रकरणो से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध नहीं होता, परन्तु फिर भी इन प्रकरणों के रूप में इन पाठों से पूरी जानकारी प्राप्त हो जाती है।
2. **प्रत्यक्ष शिक्षण पाठ**– प्रत्यक्ष शिक्षण पाठों के अन्तर्गत आकाशवाणी के प्रत्येक प्रसारण केन्द्रों से ऐसे कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है। जिनका कि स्कूल के पाठ्यक्रम से सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से होता है।

रेड़ियों से लाभ–

1. कक्षा में रोचकता व विविधता आती है
2. बालकों को नवीन ज्ञान प्राप्त होता है, जो कि मानसिक विकास में सहायक है।
3. बालक मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञानवृद्धि भी करते है।
4. ऐतिहासिक नाटकों द्वारा बालकों की रूचि जागृत होती है।
5. विविध विषय–वस्तु के विशेषज्ञों द्वारा शिक्षकों को सहायता मिलती है।

रेड़ियों के प्रयोग में कठिनाइयां–

1. कार्यक्रम के प्रसारण के समय श्रोता के मन में कोई जिज्ञासा हो तो उसका समाधान सम्भव नहीं है।
2. शिक्षण के विशेष कार्यक्रमों को छोड़कर शेष कार्यक्रमों व विद्यालय के समय में अन्तर होता है।
3. मौसम आदि की खराबी से भी प्रसारित कार्यक्रम पूर्ण रूपेण सुना जा सके, सम्भव नहीं हैं।

2. **ग्रामोफोन (Gramophone)**– श्रव्य उपकरणों में सस्ता व सुलभ उपकरण है, चूँकि रेड़ियों का उपयोग इतिहास के प्रत्येक पाठ के लिए नहीं किया जा सकता। अतः रेड़ियों की इस कमी को पूर्ण करने हेतु ऐतिहासिक रिकॉर्ड तैयार किए जाते है। जिन्हें ग्रामोफोन पर छात्रों को सुनाकर उनका ज्ञानवर्द्धन किया जाता है। छात्र उसमें से अपने लिए उपयोगी विषय–वस्तु लिखते जाते है, इसके माध्यम से ऐतिहासिक कथाऍ जैसे– 'प्रेमचंद की' 'शंतरंज के खिलाड़ी' ऐतिहासिक कविताऍ जैसे– 'झॉसी की रानी', 'पृथ्वीराज रासो' आदि के अंश सुनाकर इतिहास शिक्षण को प्रभावी बनाया जाता है।

3. **टेप रिकार्डर (Tape Recorder)**– टेप रिकार्डर एक उपयोगी शैक्षिक उपकरण है, जिसका अध्यापक अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने हेतु कर सकता है। इतिहास शिक्षण में इसका प्रयोग बढ़ता जा रहा है। क्योंकि यह कही भी इधर से उधर आसानी से लाया, ले जाया सकता है।

2. **दृश्य उपकरण (Visual Audis)**– दृश्य उपकरणो में वे उपकरण आते है जिनका ज्ञान छात्र नेत्रों की सहायता से देखकर प्राप्त करते है। ये उपकरण निम्न है–

1. **<u>वास्तविक पदार्थ एवं नमूने</u>**– इतिहास शिक्षण में इन नमूनों व पदार्थों का अत्यधिक महत्त्व है। बालक स्वंय इन्हें देखकर इनका ज्ञान प्राप्त करते है। इनमें छात्र प्रत्यक्षीकरण के आधार पर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करता है। इसके लिए छात्रों को पर्यटन कराया जा सकता है। ताकि यह क्रिया और अधिक स्वाभाविक हो जाए। इसमें छात्रों को ऐतिहासिक, भवन, दुर्ग, मीनार, मकबरा, स्तूप व खण्डहर आदि को वास्तविक रूप से दिखाने हेतु उस स्थान पर ले जाया जा सकता है।
2. **<u>मॉडल (Model)</u>**– इतिहास में कई बार ऐसा भी सम्भव होता है कि बहुत सारे ऐतिहासिक तथ्य, घटनाऍं एवं वस्तुऍं ऐसी है। जिन्हें हम कक्षा में नहीं दिखा पाते और यह भी नहीं हो पाता कि इनके बार–बार प्रत्यक्ष निरीक्षण हेतु बालकों को ले जाया जाए।
3. **<u>चित्र (Picture)</u>**– हर विषय–वस्तु से सम्बन्धित प्रतिमान या मॉडल दिखाया जाना सम्भव नहीं हो पाता। इनके बनवाने में समय भी अधिक लगता है। तथा इनका निर्माण भी कठिन है। अतः इनके स्थान पर चित्रों का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए जार्विस का विचार है कि छोटी कक्षाओं में शिक्षण को रोचक बनाने हेतु शिक्षण सामग्री में अभिनयात्मक दृश्यों तथा नायकों के चरित्रों को रखना चाहिए। और इसको रोचक बनाने हेतु अध्यापक को ऐतिहासिक चित्रों का प्रयोग करना चाहिए।

<u>चित्रों के गुण–चित्रों में निम्न गुण होने चाहिए</u>–

1. चित्र सरल व आकर्षक होने चाहिये।
2. चित्रों से ऐतिहासिक विचार प्रदान किए जाने चाहिए।
3. चित्र अर्थपूर्ण होने चाहिए।
4. चित्र प्रामाणिक होने चाहिए।
5. चित्र शिक्षात्मक होने चाहिए।

<u>चित्रों की उपयोगिता</u>–

1. इतिहास के सूक्ष्म प्रतीक भी इतिहास शिक्षण में सार्थक प्रतीत होते है।
2. इतिहास शिक्षण में सस्ते दृश्य साधन है।
3. इतिहास शिक्षण को सजीव बनाने में सहायक हैं।
4. चित्रों के माध्यम से विषय–वस्तु जीवान्त हो जाती हैं।
5. यथार्थ वस्तुओं के अभाव में चित्र शिक्षण में विशेष सहायता पहुॅंचाते हैं।

<u>चित्रों के उपयोग में सावधानियॉं</u>–

1. शिक्षण के दौरान आकर्षक चित्रों का प्रयोग ही किया जाना चाहिए।
2. चित्र क्रियाशीलता से परिपूर्ण होने चाहिए।
3. चित्र छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होने चाहिए।
4. चित्र आवश्यकतानुरूप ही दिखाए जाने चाहिए।
5. हर बार एक ही चित्र का प्रयोग ना किया जाए, विभिन्नता वाले हों।

<u>रेखाचित्र (Sketch)</u>– इतिहास शिक्षण में इसका उपयोग सरल हैं, किसी भी विषय–वस्तु से सम्बन्धित रेखाचित्र श्यामपट्ट पर खींचकर अध्यापक स्वतः ही बालकों का ध्यान आकर्षित कर सकता हैं। अगर वह कहीं की ऐतिहासिक स्थिति पढ़ा रहा हैं, किसी युद्ध को पढ़ा रहा हैं, तो उस स्थिति या युद्ध की योजना को वह रेखाचित्रों की सहायता

से समझा सकता है। रेखाचित्र शिक्षक व छात्र दोनों के लिए उपयोगी हैं। क्योंकि इनको बनाने में कम समय लगता हैं।

- **चार्ट (Chart)**– चार्ट इतिहास शिक्षण हेतु एक उपयोगी सामग्री हैं। विभिन्न विषय सामग्री हेतु चार्ट का उपयोग किया जाता हैं, ये शिक्षण की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करते हैं। तथा छात्र आसानी से ऐतिहासिक तथ्यों एवं घटनाओं को सरलता से समझ सकते हैं।

चार्ट के प्रकार – चार्ट के विविध प्रकार होते हैं।

1. **तालिका चार्ट (Table Chart)**– इसमें इतिहास के तथ्यों या सूचनाओं को तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता हैं, तुलनात्मक अध्ययन हेतु यह उपयोगी हैं।
2. **आनुवांशिक चार्ट**– ये चार्ट भी इतिहास शिक्षण हेतु उपयोगी सिद्ध होते हैं।
3. **कालक्रम चार्ट**– इस प्रकार के चार्ट ऐतिहासिक घटनाओं एवं विकास से सम्बन्धित तथ्यों को प्रदर्शित किया जाता हैं।

- **समय रेखा (Time Line)**– इतिहास शिक्षण में रेखा का प्रयोग अत्यधिक किया जाता है। समय रेखा कालक्रम का ज्ञान कराने में सहायता प्रदान करती हैं, समय रेखा में समय को विभिन्न प्रकार से प्रदर्शित किया जाता हैं।

समय रेखा के प्रकार–

1. **अर्ध्वगामी समय रेखा (Progressive Time Line)**
2. **प्रतिगामी समय रेखा (Regrassive Time Line)**
3. **चित्रात्मक समय रेखा (Pictorial Time Line)**
4. **तुलनात्मक समय रेखा (Comparitive Time Line)**

1. **अर्ध्वगामी समय रेखा (Progressive Time Line)** – इस समय रेखा का प्रयोग अधिकतर किया जाता हैं। इस समय रेखा में घटनाएँ अतीत से वर्तमान की ओर अग्रसित होती हैं। इस समय रेखा को आसानी से बनाया जा सकता हैं।
2. **प्रतिगामी समय रेखा (Regrassive Time Line)** – इसकी रचना अर्ध्वगामी समय रेखा के अनुसार की जाती हैं, अन्तर इतना हैं कि अर्ध्वगामी समय रेखा अतीत से वर्तमान की बनाई जाती हैं।
3. **चित्रात्मक समय रेखा (Pictorial Time Line)** – यह समय रेखा भी कालक्रम का ज्ञान कराने हेतु उपयोगी हैं, इस प्रकार की समय रेखा में अर्ध्वगामी या प्रतिगामी समय रेखा बना ली जाती हैं।
4. **तुलनात्मक समय रेखा (Comparitive Time Line)** – उच्च कक्षाओं में कालक्रम का ज्ञान कराने हेतु इसका उपयोग किया जाता हैं, विभिन्न उद्धेश्यों की पूर्ती इसके द्वारा की जाती हैं।

- **सिक्के (Coines)** – सिक्के भी दृश्य उपकरण का एक भाग हैं, विभिन्न शासक अपने–अपने काल में विभिन्न सिक्कों का प्रयोग करते थे, अतः इन सिक्कों से उन राजाओं के शासन तथा उस काल की आर्थिक दशा का ज्ञान होता हैं।

- **कठपूतलियॉं (Puppets)** – कठपूतलियॉं छोटे बच्चों को इतिहास की शिक्षा देने हेतु प्रभावशाली सामग्री हैं। भारती सॅस्कृति के विभिन्न धार्मिक प्रसंग कठपूतलियों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं तथा मनोरंजन के रूप में काम में ली जाती हैं।
- **एटलस (Atlas)** – ऐतिहासिक ज्ञान को विधिवत् प्राप्त करने हेतु एटलस का सहयोग लिया जाता हैं। इतिहास शिक्षण में एटलस का महत्वपूर्ण स्थान हैं, क्योंकि यह छात्र व अध्यापक दोनों के लिए समान उपयोगी हैं। इतिहास में प्रसिद्ध नगरों, विभिन्न राज्यों को पुरानी राजधानी, अनेक स्थलों व अन्य आवश्यक ऐतिहासिक तथ्यों का ज्ञान छात्र स्वयं एटलस के माध्यम से सकते हैं।
- **मानचित्र (Map)** – इतिहास में जिस प्रकार बालकों को समय ज्ञान देना आवश्यक हैं। उसी प्रकार समय स्थान का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। मानचित्र का उपयोग शिक्षण के दौरान करने हेतु घटनाओं से समबन्धित सीमा का ज्ञान कराकर भौगौलिक स्थिति से अवगत कराया जाता हैं।

मानचित्र के गुण–

1. मानचित्र सरल व स्पष्ट होना चाहिए।
2. मानचित्र का आकार कक्षा के अनुरूप होना चाहिए।
3. मानचित्र में नवीनता के साथ–साथ शुद्धता होनी चाहिए।
4. एक ही मानचित्र से बहुत अधिक सामग्री प्रस्तुत ना की जाए, अन्यथा शिक्षा में जटिलता आ जाती हैं।
5. विविध तथ्यों को प्रदर्शन हेतु अलग–अलग रंगों का प्रयोग किया जाए, ताकि बालको को जल्दी समझ में आए।

मानचित्र के प्रयोग में सावधानियॉं–

1. मानचित्र का आकार कक्षानुसार होना चाहिए।
2. शुद्ध माप के मानचित्रों का प्रयोग ही किया जाना चाहिए।
3. मानचित्रों में तथ्यों को समझाते समय संकेतक का प्रयोग किया जाना चाहिए।
4. मानचित्र कक्षा में यथास्थान व यथा समय टॉंगा जाना चाहिए, काम आने के बाद उतार देना चाहिए।

- **श्यामपट्ट (Black Board)** – इतिहास शिक्षण में सहायक सामग्री के रूप में श्यामपट्ट का विशेष स्थान हैं, यह सबसे सस्ता व सरलतापूर्वक उपलब्ध होने वाला उपकरण हैं। एक सैनिक के शस्त्र के समान ही चॉक व श्यामपट्ट का अध्यापक के लिए होना आवश्यक हैं।

श्यामपट्ट से लाभ–

1. पाठ का विकास करने में सहायक उपकरण हैं।
2. सबसे सस्ता व सरल दृश्य उपकरण हैं।
3. श्यामपट्ट पूर्ती करने हेतु उपयोगी हैं, ताकि छात्रों ज्ञात रहे कि क्या शिक्षण कार्य होने वाला हैं।
4. विषय–वस्तु से सम्बन्धित कोई भी कार्य इस पर किया जा सकता हैं।
5. पाठ की रोचकता में वृद्धि श्यामपट्ट से की जा सकती हैं

श्यामपट्ट प्रयोग में सावधानियॉं–

1. श्यामपट्ट पर लिखते समय सहज रहना चाहिए तथा कृत्रिमता का वातावरण उत्पन्न नहीं करना चाहिए।
2. श्यामपट्ट पर रफ व श्यामसार में अन्तर होना चाहिए। रफ कार्य समाप्त होते ही मिटा देना चाहिए।
3. श्यामपट्ट पर लिखते समय 45° के कोण से खड़ा होना चाहिए ताकि छात्रों को लिखा हुआ भली–भॉति दिखाई दे।
4. श्यामपट्ट पर विस्तृत रूप से ना लिखकर संक्षिप्त क्रमबद्ध व व्यवस्थित लिखना चाहिए।
5. श्यामपट्ट पर किसी विशिष्ट बात, तथ्य या सूचना पर जोर देने के लिए व्यवस्थित कर देना चाहिए।

- **बुलेटिन बोर्ड (Bulletin Board)** – बुलेटिन बोर्ड शिक्षण में दृश्य उपकरण के रूप में काम आता हैं। यह एक प्रकार का बोर्ड होता हैं, जिसमें किसी भी ऐतिहासिक सामग्री की जानकारी बालकों के लिए लगी रहती हैं। इसका उपयोग कक्षा के अन्दर व बाहर दोनों स्थानों पर किया जा सकता हैं।
- **बुलेटिन बोर्ड का उपयोग**–

1. छात्रों को रचनात्मक कार्यों हेतु प्रेरित किया जा सकता हैं तथा वे अधिकाधिक अपनी रचनात्मकता को प्रदर्शित कर सकते हैं।
2. यह इतिहास से सम्बन्धित सामग्री हैं, जैसे– चित्र, मानचित्र, समाचार पत्र की कतरन तथा, विशिष्ट पाठों की सामग्री हेतु उपयुक्त स्थान हैं।
3. इस पर विशिष्ट सामग्री को सुव्यवस्थित व क्रमबद्ध ढ़ंग से प्रस्तुत किया जा सकता हैं।
4. सामग्री का आकार बुलेटिन बोर्ड तथा सामान्य दूरी से दिखाई देने वाला होना चाहिए।

- **फ्लेनेल बोर्ड (Flannel Board)** – यह भी इतिहास में एक उपयोगी उपकरण है। यह लकड़ी का बना हुआ एक बोर्ड होता है। जिस पर फ्लेनेल का कपड़ा चढ़ा रहता हें, नीचे इसमें रेजमाल लगा हुआ रहता है।। इसका उपयोग छात्रों द्वारा निर्मित व संकलित ऐतिहासिक महत्व की सामग्री के प्रदर्शन हेतु किया जाता हैं किन्हीं भी दो तथ्यों को एक साथ प्रदर्शित करने हेतु, कोई भी युद्ध योजना क्रम से विकसित होती हुई युद्ध में सेना की संरचना, व्यूह रचना आदि को इस बोर्ड पर सुगमता से लगाकर हटाया जा सकता हैं।
- **समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ (News Paper and Magzines)** – आधुनिक दृश्य सामग्री में समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं को भी सम्मिलित किया जाता हैं। इनके द्वारा इतिहास विषय से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी प्राप्त होती हैं। तथा इस जानकारी को देने से शिक्षण रोचक व प्रभावशाली सिद्ध हो सकता हैं, इतिहास कक्षा में इस सामग्री का उपयोग किया जा सकता हैं। किसी भी नयी सूचना या सामग्री की कटिंग बालक लेकर बुलेटिन बोर्ड पर अन्य छात्रों की जानकारी हेतु संकलित कर सकता हैं।
- **पर्यटन (Excurion)** – ऐतिहासिक स्थानों के भ्रमण का इतिहास शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान हैं, जिन ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी पुस्तक से प्राप्त होती हैं। उसको स्वयं के निरीक्षण द्वारा यथार्थ रूप में प्राप्त करना छात्र को रूचिकर सिद्ध होता हैं।
- **संग्रहालय (Museum)** – इतिहास में संग्रहालय का भी विशिष्ट स्थान हैं, संग्रहालय में विभिन्न वस्तुओं का संग्रह किया जाता है। तथा इतिहास शिक्षण में जिस ऐतिहासिक सामग्री का उपयोग किया जाता है।

संग्रहालय में निम्न संकलन होना चाहिये–

1. वास्तविक पदार्थ व नमूने।
2. चार्ट
3. चित्र

4. मानचित्र
5. समय रेखाएँ व समय ग्राफ
6. मॉडल
7. अन्य संग्रह।

इतिहास संग्रहालय का महत्व–

1. इतिहास से विभिन्न प्रकार की ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती हैं, जिससे बालकों का ज्ञान बढ़ता है।
2. प्रत्यक्ष वस्तुओं का अवलोकन करने से विषय के प्रति उनकी रूचि बढ़ती हैं।
3. बालकों की निरीक्षण व परीक्षण शक्ति विकसित होती है।
4. किसी विशिष्ट देश के बारे में शिक्षण बालकों को जानकारी संग्रहालय के माध्यम से दे सकता हैं।
5. यदि वस्तुएँ छात्रों द्वारा संग्रहित की गई हैं, तो छात्र आनन्दित होते है। तथा आगे संग्रहण हेतु प्रेरणा मिलती हैं।

3. **श्रव्य–दृश्य उपकरण (Audio-Visual Audis)**– श्रव्य–दृश्य उपकरणों में वे उपकरण आते हैं, जिनमें छात्र कान व नेत्र दोनों का प्रयोग एक साथ करते हुए ज्ञान प्राप्त करते हैं। ये उपकरण निम्न है–

1. **प्रोजेक्टर्स (Projectors)**–
   1. मायादीप
   2. अपारचित्रदर्शी
   3. परिचित्रदर्शी
   4. चलचित्र

2. **दूरदर्शन**
3. **वीडियो**
4. **कम्प्युटर**

1. **प्रोजेक्टर्स (Projectors)**– शैक्षिक क्षेत्र में प्रोजेक्टर का प्रयोग बढ़ता जा रहा हैं, भारतीय विद्यालयों में इसका उपयोग किया जाने लगा हैं। प्रोजेक्टर में फिल्म, फिल्म पट्टी व स्लाइड्स प्रयुक्त की जाती हैं, और इन पर अंकित चित्र मानचित्र आदि को पर्दे पर प्रक्षेपित किया जाता हैं। प्रोजेक्टर में प्रयुक्त सामग्री निम्नानुसार होती हैं।

- **स्लाइड्स (Slides)**– ये कॉच की पट्टियॉ होती हैं, स्लाइड को स्लाइड प्रोजेक्टर के माध्यम से परदे पर प्रक्षेपित कर देखा जाता है। इतिहास विषय से सम्बन्धित विषय का चयन करके सूक्ष्म से सूक्ष्मतम बातों को परदे पर बड़ा करके दिखाया जाता हैं। स्लाइड $2'' \times 2''$ या $3\frac{1}{4}'' \times 4''$ आकार की होती हैं– इन्हें $2'' \times 2''$ (50–50) मिमि. फ्रेम में चढ़ाया जा सकता है।

स्लाइड तीन वर्गों में वर्गीकृत की जाती हैं–

1. हस्तनिर्मित स्लाइड।
2. फोटोग्राफिक प्रक्रिया से बनी स्लाइडे।
3. कम्प्यूटर द्वारा निर्मित स्लाइडें।

2. **<u>फिल्म पट्टी (Film Strips)</u>**– फिल्म स्ट्रिप्स विषय विशेष से सम्बन्धित 35 एम.एम. की फोटोग्राफी की एक फिल्म होती हैं, जिसे प्रोजेक्टर के माध्यम से परदे पर बड़ा करके दिखाया जाता है। फिल्म पट्टी में फ्रेमों की संख्या अधिकतम 100 से हो सकती हैं, ये फिल्म पट्टी दो प्रकार की होती हैं–
   1. **<u>मूक (Silent)</u>**– इस प्रकार की फिल्म पट्टी में विस्थापित ध्वनि रिकॉर्ड नहीं होती हैं, अतः यह मूक पट्टी कहलाती हैं।
   2. **<u>सवाक् (Sound)</u>**– इस प्रकार की पट्टी में वितापित ध्वनि रिकॉर्ड भी होता हैं, उसे सवाक् फिल्म पट्टी कहा जाता हैं।

<u>मायादीप (Magic Lantern or Disacope)</u>– शिक्षा के क्षेत्र में इसका उपयोग पूर्व से ही चला आ रहा हैं। यह इतिहास शिक्षण में काफी काम आता हैं, हालांकि वर्तमान समय में प्रोजेक्टर का प्रचलन ज्यादा है। परन्तु फिर भी इसका उपयोग आवश्यकतानुसार किया जाता हैं। इसमें 2 × 2 से 4 × 6 इंच की स्लाइड्स प्रयुक्त की जाती हैं।

- **<u>अपारचित्रदर्शी (Episcope)</u>**– एपीस्कोप का अर्थ हैं, अपारदर्शक वस्तु का परदे पर बहुत साफ प्रक्षेपण। यह आधुनिक प्रोजेक्ट कहा जाता हैं। क्योंकि इसमें कागज पर छपी तस्वीरें पुस्तक का पृष्ठ, ठोस चीजें सभी प्रदर्शित किये जाते हैं।

1. **<u>पारचित्रदर्शी (Epidiascope)</u>**– एपीडायस्कोप शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैं– (1) Episcope (2) Discope एपीस्कोप का अर्थ हैं, अपारदर्शक वस्तु का परदे पर बहुत साफ प्रक्षेपण और डायस्कोप का अर्थ हैं, स्लाइड का प्रक्षेपण। इसके माध्यम से पारदर्शक व अपारदर्शक दोनों की वस्तुओं की छवि परदें पर प्रक्षेपित की जाती हैं।
2. **<u>ओवर हैड प्रोजेक्टर</u>**– शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम सम्प्रेषण की विधि है– चॉक व श्यामपट्ट की आवश्यकता इससे समाप्त हो जाती है। यह प्रक्षेपण की सबसे सरल तकनीक हैं, वर्तमान पर सेमीनार के साथ–साथ इसका प्रयोग कक्षा शिक्षण में भी किया जाने लगा हैं।

ओवर हैड प्रोजेक्टर के निम्न भाग होते है–

1. केबीनेट
2. प्रोजेक्शन लैम्प
3. ठण्डा करने की व्यवस्था
4. फोकस व्यवस्था

इसका उपयोग करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा जाता हैं–

1. ट्रान्सपरेन्सी पर लिखें शब्दों का आकार कम से कम 6 से.मी. अवश्य होना चाहिए।
2. साधारण स्केच पेन का प्रयोग ना करके माक्रर पैन का उपयोग करना चाहिए।
3. पंक्तियों में दूरी होनी चाहिए तथा गहरे रंगों का प्रयोग करना चाहिए।
4. परदे व छात्रों के मध्य की दूरी कक्षा में 6 मीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए।
5. तथ्यों को समझाने हेतु लेजर संकेतक का प्रयोग करना चाहिए।

चलचित्र (Cinema)– इतिहास शिक्षण मं अतीत को सजीव रूप में प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त साधन चलचित्र हैं, चलचित्रों का प्रयोग 20वीं शताब्दी की देन हैं, चलचित्रों का उपयोग इतिहास के विभिन्न कारणों का तुलनात्मक अध्ययन करने तथा इतिहास विषय में रूचि उत्पन्न करने के लिए भी किया जा सकता हैं।

चलचित्रों से लाभ–

1. विषय–वस्तु में रूचि उत्पन्न करते हैं।
2. विषय पर ध्यान केन्द्रित रखने में सहायक हैं।
3. सीखने हेतु छात्रों को प्रेरणा दी जाती हैं।
4. विषय–वस्तु को गतिशीलता प्रदान करते हैं।
5. कम समय में अधिक ज्ञान मिलता हैं।

टेलीविजन (Television)– टेलीविजन शिक्षा का आकर्षक व सरल साधन हैं, इनके माध्यम से बालक अपनी दोनों इन्द्रियों का प्रयोग करता हैं, जिससे बालक शीघ्रता से तथ्यों का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। टेलीविजन के कार्यक्रम विडियों फिल्म पर अंकित किए जाते हैं। तथा बाद में वे एक निश्चित समय पर प्रसारित किए जाते है।। भारत में विद्यालयी टेलीविजन का प्रारम्भ आकाशवाणी ने सन् 1961 में फोर्ड फाउण्डेशन तथा दिल्ली के निदेशालय के सहयोग से किया जाता हैं।

टेलीविजन से लाभ –

1. किसी भी घटना को विकारमुक्त रूप में जीवन्त प्रस्तुत करना।
2. इतिहास विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करने में सहायक हैं।
3. उपयोगी एवं उत्कृष्ट सूचनाएॅ टेलीविजन प्रदान करता हैं।
4. इसके द्वारा उच्च स्तर के भाषण तथा ऐतिहासिक परिचर्चा सुनने के सुअवसर मिलते हैं।
5. टेलीविजन द्वारा छात्रों को अदृश्य व अलभ्य ऐतिहासिक घटनाओं एवं तथ्यों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता हैं।

- **विडियो** – यह अति आधुनिक उपकरण माना जाता हैं, एम्पेक्स कारपोरेशन द्वारा 1956 में इसे तैयार किया गया। 1/2 इन्च से 3 इन्च के टेप पर पितापित ध्वनि के साथ दृश्य तस्वीरों की श्रृंखला को विद्युत द्वारा पुनरूपादित करने की मशीन हैं। इसके प्रमुख भाग हैं–
  1. वीडियो कैमरा
  2. वीडियो टेप
  3. मॉनीटर
- **कम्प्यूटर (Computer)**– कम्प्यूटर आधुनिक युग का सबसे बड़ा आविष्कार हैं, कम्प्यूटर का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक प्रभाव पड़ा है। कम्प्यूटर की अत्यधिक उपयोगिता के कारण यह युग कम्प्यूटर युग कहा जाने लगा हैं।

कम्प्यूटर के प्रकार–

1. मुख्य फ्रेम कम्प्यूटर (Main Frame Computer)–

2. सुपर कम्प्यूटर (Super Computer)–
3. मैन फ्रेम कम्प्यूटर (Main Frame Computer)–
4. मिनी कम्प्यूटर (Mini Computer)–
5. माइक्रो कम्प्यूटर (Micro Computer)–

कम्प्यूटर की विशेषताएँ

1. गति (Speed)–
2. संग्रहण क्षमता (Storage)–
3. शुद्वता (Accuracy)–
4. सार्वभौमिकता (Universal)–
5. स्वचालक (Auto Mation)–
6. सक्षमता (Efficient)–

कम्प्यूटर के भाग–

1. अदा (Input)–
2. प्रक्रिया (Process)–
3. प्रदा (Out Put)–

कम्प्यूटर से लाभ–

1. व्यक्तिगत विभिन्नता व योग्यता वाले छात्र अपनी गति से ज्ञानार्जन करते हैं।
2. व्यक्तिगत व समूह शिक्षण दोनों के लिए उपयोगी हैं।
3. छात्र को पूरे समय क्रियाशील रखने में सक्षम हैं।
4. इसका सजीव रंगीन चित्रण छात्रों को अभ्यास करने के लिए वास्तविक प्रेरणा प्रदान करता हैं।
5. कठिन प्रकरणों पर कृत्रिम तथा खेल, तकनीकियों द्वारा प्रशिक्षण देने में अत्यन्त उपयोगी है।

प्रश्न पाठ्य–पुस्तक को परिभाषित कीजिए।
Define the Text-Book.

उत्तर– पाठ्य–पुस्तक को मानवीय ज्ञान के संचय एवं संचार का साधन बताया गया है। **शिक्षा शब्दकोश** में पाठ्य–पुस्तक के लिए लिखा गया हैं– ''पाठ्य–पुस्तक अध्ययन की निश्चित विषय–वस्तु से सम्बन्धित पुस्तक है, जो क्रमबद्ध ढ़ंग से व्यवस्थित, शिक्षण के विशिष्ट स्तर पर प्रयोग के लिए उद्विष्ट एवं प्रदत्त पाठ्यक्रम के लिए अध्ययन की सामग्री के मुख्य स्त्रोत के रूप में प्रयोग की जाती हैं।

शैक्षणिक अनुसंधान के एनसाइक्लोपिडिया (Encyclopedia of educational research) के अनुसार ''आधुनिक तथा प्रचलित अर्थ में पाठ्य–पुस्तक सीखने वाला साधन हैं, जिसका प्रयोग विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अनुदेशन कार्यक्रम को परिपुरित करने के लिए किया जाता हैं।

(In the modern sense and as commonly understood, the text-book is a learning instrument usually employed in schools and colleges to support a programme of instruction)

अमेरिकन पाठ्य–पुस्तक प्रकाशक संस्थान (American Text-Book Publishers Institute) के अनुसार– '' पाठ्य–पुस्तक विद्यालय या कक्षा हेतु तथा शिक्षक के प्रयोग के लिए विशेष रूप से तैयार की जाती हें, जिसमें एकाकी विषय या घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित विषयों की पाठ्य–वस्तु को प्रस्तुत किया जाता हैं।

(A true text-book is one specially prepared for the use of pupil and teacher in a school or a class, presenting a cause of study in a single subject or close by related subjects)

- पाठ्य पुस्तक के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विद्वानों ने निम्न परिभाषाएँ दी हैं–
- हालक्यूस्ट (Hallquest) के अनुसार– ''पाठ्य पुस्तक अनुदेशीय अभिप्रायों के लिए व्यवस्थित किया गया एक प्रजातीय चिन्तन का अभिलेख हैं।
  "Text-book is a record of racial thinking organized for instructional purposes".
- बिकॉन (Becon) के अनुसार– पाठ्य पुस्तक कक्षा–कक्ष के प्रयोग के लिए निर्धारित की गई पुस्तक हैं।
  (Text-Book is a book designed for class-room use).
- लॉन्ज (Longe) के अनुसार– पाठ्य पुस्तक किसी अध्ययन की प्रमुख शाखा के लिए एक मानक पुस्तक हैं।
  (Text-Book is a standard book for any particular branch of study).
- डगलस (Daglus) के अनुसार– शिक्षकों द्वारा बहुमत से अन्तिम विश्लेषण के आधार पर पाठ्य–पुस्तक ''वे क्या और किस प्रकार पढ़ायेंगे? की आधारशिला हैं।''
  (In the last analysis with great the text-book is potent determinant of what and how they will teach)?
- प्रो. कीटिंग (Prof. Keeting) के अनुसार– पाठ्य पुस्तक शिक्षण का आधार यन्त्र हैं।
  (Text-Book is the basic instrument by teaching).

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हैं कि पाठ्य–पुस्तक एक शैक्षिक साधन अथवा यन्त्र है, जो प्रमाणिक होता है और शिक्षण के उद्धेश्यों की पूर्ति करता हैं। व्यवहारिक रूप में पाठ्य–पुस्तक से अभिप्राय किसी भी एक उस विषय की पुस्तक से हो सकता हैं, जिसे विद्यालय में भी विद्यार्थी अपने अध्ययन के लिए कार्य में लेते हैं तथा जो शिक्षक अथवा बोर्ड द्वारा प्रस्तावित होती हैं।

प्रश्न इतिहास शिक्षण में पाठ्य–पुस्तक के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
Explain the importance of Text-Book in teaching History.

उत्तर– The modern text-book is instructional asset that has a valuable place in today's classroom. The text-book may be used effectively in different ways. **- Thomas M. Risk.**

पाठ्य पुस्तक द्वारा पाठ्यक्रम की वास्तविक रूपरेखा व्यक्त की जाती हैं। सीखने के अनुभवों में पाठ्य.पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। पाठ्य–पुस्तक शिक्षण का मूलभूत साधन हैं। अतः पाठ्य–पुस्तके शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए लाभकारी हैं।

इतिहास की पाठ्य–पुस्तकों का महत्व निम्नलिखित हैं–

1. शिक्षक का मार्गदर्शन करते हुए शिक्षण–आयोजन का सीमांकन करती हैं।
2. पाठ्य–पुस्तक से सम्बन्धित विषय–वस्तु को ताक्रिक एवं क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित करती हैं।

3. योजना–विधि, डाल्टन–योजना, इकाई–विधि आदि की पूर्णता के प्रतिपादन को पाठ्य–पुस्तक मजबूत आधार देती हैं।
4. पाठ्य–पुस्तके ज्ञान को संचित करने तथा प्रसार करने में महत्वपूर्ण कार्य करती हैं।
5. पाठ्य पुस्तकों में विषय के पाठ्यक्रम की सम्पूर्ण रूप में व्याख्या की जाती हैं, इससे शिक्षक सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं।
6. पाठ्य पुस्तके विद्यार्थियों को विभिन्न नवीन एवं महत्वपूर्ण सूचनाएॅ एकत्रित करके एक ही स्थान से देती हैं।
7. पाठ्य–पुस्तके विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी में सहायता देती हैं।
8. पाठ्य–पुस्तके पाठ दोहराने (अभ्यास) तथा गृहकार्य करने में सहायता करती हैं।
9. मन्द–बुद्धि बालकों के लिए भी पाठ्य–पुस्तकें अत्यन्त उपयोगी हैं।
10. पाठ्य पुस्तके वे साधन हैं, जिनमें पाठ्य–वस्तु को सरल एवं बोधगम्य बनाया जाता हैं।
11. पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से शिक्षण कार्य करवाने से अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों के श्रम (शक्ति) एवं समय की बचत होती हैं।
12. पाठ्य पुस्तकों के पीछ पाठ से सम्बन्धित मूल्यांकन प्रश्न होते हैं। उन्हें हल करने से ज्ञानवृद्धि में सहायता मिलती हैं।
13. कक्षा में प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान नहीं दिया जा सकता, अतः उसकी पूर्ति छात्र अपनी रूचि के अनुसार पाठ्य–पुस्तकों के अध्ययन से करते हैं।
14. पाठ्य पुस्तकों से शिक्षक पाठ भी पूर्ण तैयारी तथा शिक्षण की व्यूह रचना तैयार कर लेता हैं।
15. पाठ्य पुस्तकें विद्यार्थियों को गृह कार्य को पूर्ण करने में सहायता करती हैं।

प्रश्न इतिहास की उत्तम पाठ्य पुस्तक की प्रमुख विशेषताएॅ वर्णित कीजिए।
Describe the main characteristics of a good text-book of history.

Or

इतिहास की उत्तम पाठ्य पुस्तक के मुख्य गुण लिखिए।
Write the main merits of a good text-book of history.

उत्तर– इतिहास की उत्तम पाठ्य पुस्तक में निम्नांकित विशेषताएॅ या गुण होते हैं–

1. विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण बालकों के मानसिक स्तर के अनुरूप।
2. विषय वस्तु का संगठन मनोवैज्ञानिक व ताक्रिक।
3. व्याख्या, स्पष्टीकरण, उदाहरण आदि की सहायता से विषय का सरलीकरण।
4. भाषा शैली उपयुक्त सरल, स्पष्ट, मौलिक एवं प्रवाहशील हो।
5. बालकों से स्वयं अध्ययन में रूचि विकसित करने वाली हो।
6. मुख पृष्ठ सचित्र, आकर्षक एवं सादृश्य हो।
7. मुद्रण स्वच्छ, शुद्ध एवं स्पष्ट हो।
8. आकार सुविधाजनक हो।
9. अध्यायों (पाठों) के आकार बालकों के मानसिक स्तरानुकुल हो।
10. विषय–वस्तु का प्रस्तुतीकरण उद्धेश्यों एवं मूल्यानुरूप हो।
11. इतिहास की पाठ्य–पुस्तक निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार उद्धेश्यों की पूर्ति में सहायक होनी चाहिए।
12. पाठ्य–पुस्तकों में आवश्यकतानुसार बड़े, स्पष्ट, रंगीन चित्रों, रेखाचित्रों, मानचित्रों, ग्राफों तथा तालिकाओं को यथास्थान रखकर उनकी समुचित विवेचना की गई हो।
13. पाठ्य–पुस्तक का मूल्य कम होना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी उन्हें खरीकर पढ़ सकें।
14. पाठ्य–पुस्तक की विषय–वस्तु निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप एवं प्रामाणिक हो।

15. आधुनिकतम घटनाओं तथ्यों व समस्याओं पर बल जो विषय वस्तु से सम्बन्धित हो।
16. विषय सूची, शब्दावली, सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, निर्देश नियमावली आदि का पाठ्य पुस्तक में समावेश हो।
17. चिन्तन एवं नवीन विचारों का प्रस्तुतीकरण पाठ्य–पुस्तक में होना चाहिए।
18. पाठ्य–पुस्तक में अध्याय के अन्त में अभ्यास हेतु मूल्यांकन प्रश्नों का समावेश होना चाहिए।
19. विषय–वस्तु से किसी की भी भावनाओं को आघात ना पहुँचाना अर्थात्, धर्म निरपेक्षता की भावना आधारित पाठ्य पुस्तक होनी चाहिए।
20. **सी.पी. हिल के अनुसार** – ''पाठ्य पुस्तके तथ्यों के संकलन के रूप में प्रयुक्त नहीं की जानी चाहिए, जिनका छात्र कर सकें, वरन् वे मौलिक सूचनाओं के भण्डार के रूप में प्रयुक्त की जाये, जिनकों छात्र विभिन्न सक्रिय ढ़ंगों से प्रयोग में ला सकें।
21. पाठ्य पुस्तक में नवीनतम परिस्थितियों के अनुसार समय–समय पर सुधार एवं पुनरावृत्ति की जानी चाहिए।
22. पाठ्य पुस्तक पूर्वागृहों (prejudices) से मुक्त होनी चाहिए।

प्रश्न इतिहास को अच्छी पाठ्य पुस्तक में चयन के मापदण्ड क्या होने चाहिए? तथा पाठ्यपुस्तक के चयन हेतु आप किस मूल्यांकन उपकरण का प्रयोग करेंगे? उसका प्रारूप दीजिए।

What should be the criteria for selection of a good text-book of history? What evaluation tool would you use for the selection of text-book? Give its format.

Or

''इतिहास शिक्षण'' की पाठ्य पुस्तक के मूल्यांकन के क्या मापदण्ड हैं?

What are the main criteria of evaluation of a history text-book?

उत्तर– किसी भी पाठ्य पुस्तक का चयन करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना होता हैं। ये सभी पाठ्य पुस्तक के चयन के मापदण्ड माने जा सकते हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक हें। कुछ महत्वपूर्ण पाठ्य पुस्तक चयन के मापदण्ड निम्नांकित हैं।

1. **साज–सज्जा (Get-up)**- पाठ्य पुस्तक बाह्म रूप से आकर्षक व सुस्सजित होनी चाहिए, ताकि स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित कर सकें।

(A) आकार (Size)-

- इतिहास की पाठ्य पुस्तक का आकार कक्षा स्तर के अनुकूल होना चाहिए।
- पुस्तक में उतनी ही विषय सामग्री दी जानी चाहिए, जितनी कि उस स्तर का बालक ग्रहण कर सकें।

(B) जिल्द (Cover)-

- इतिहास की जिल्द, मोटी मजबूत और टिकाऊ होनी चाहिए।
- जिल्द पर इतिहास विषय से सम्बन्धित ही कोई चित्र होना चाहिए।

(C) कागज (Paper)-

- इतिहास की पाठ्य–पुस्तक का कागज मोटा, सफेद, चिकना होना चाहिए।
- कागज में मजबूती भी होनी चाहिए।

(D) छपाई (Printing)-

- छपाई में काली व चमकदार स्याही प्रयुक्त की जानी चाहिए।
- मुद्रण में शब्दों व पंक्तियों के मध्य समुचित दूरी हो।
- पाठ के चारों ओर पर्याप्त स्थान छोड़ा जाना चाहिए।
- छपाई उच्च स्तर की होनी चाहिए ताकि व्याकरणिय अशुद्धियॉ नहीं होनी चाहिए।

(E) मूल्य (Price)-

- इतिहास की पाठ्य पुस्तक का मूल्य अधिक नहीं होना चाहिए, ताकि सभी बालकों को पुस्तक का लाभ मिल सके।

2. **विषय–वस्तु का चयन एवं संगठन**– पाठ्य पुस्तक में विषय वस्तु को गुढ़ एवं व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
   - पाठ्यक्रम के उद्धेश्यों के अनुरूप विषय–वस्तु का चयन होना चाहिए।
   - विविधता के साथ क्रमबद्धता भी होनी चाहिए।
   - विश्व के विभिन्न देशों के ऐतिहासिक एवं सामाजिक तथ्यों का समावेश होना चाहिए।
   - विश्व बन्धुत्व एवं 'वसुधैव–कुटुम्बकम' की भावना से ओत–प्रोत होनी चाहिए।
   - छात्रों की रूचि, योग्यता, मानसिक स्तर, संवेगात्मक स्तर एवं प्रवृत्तियों में अनुकुलता होनी चाहिए।
   - संगठन की मनौवैज्ञानिक अध्यायों का क्रम बालकों के मानसिक विकास क्रम के अनुसार होना चाहिए।
   - विषय–वस्तु छात्रों के वास्तविक एवं सामाजिक–जीवन से सम्बन्धित होनी चाहिए।
   - विषय वस्तु छात्रों को बौद्धिक स्तर के अनुकुल होनी चाहिए।
   - विषय वस्तु छात्रों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास में सहायक होनी चाहिए।
   - स्थानीय वातावरण से विषयवस्तु को स्पष्ट करने हेतु उदाहरण लिए जाने चाहिए।
   - विषय वस्तु के चयन में प्रजातान्त्रिक आदर्शों व मूल्यों का ध्यान रखना चाहिए।

3. **प्रस्तुतीकरण**– पाठ्य पुस्तक में विषय वस्तु सामग्री को चित्रों मानचित्रों, रेखाचित्र तालिकाओं आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाना चाहिए तथा विषय सामग्री को मनोवैज्ञानिक क्रम से ताक्रिक क्रम की ओर प्रस्तुत किया जाना चाहिए–
   - शिक्षण विधियों के अनुकुल हो।
   - विषय के प्रति रूचि विकसित करने में सहायक हो।
   - इतिहास के शिक्षण सूत्रों के अनुरूप हो।
   - सीखने के नियमों एवं सिद्धान्तों का अनुसरण करने वाला हो।
   - व्यक्तिगत विभिन्नताओं की पूर्ति करने में सहायक हो।
   - निर्देशित अध्ययन के अवसर प्रदान करने वाला हो।
   - छात्रों के मानसिक एवं सवेंगात्मक स्तर के अनुकूल हो।
   - अन्य विषयों से यह सम्बन्धित हो।

4. **भाषा एवं शब्दावली**–
   - भाषा का स्तर कक्षा स्तर के अनुरूप होना चाहिए।
   - पाठ्य पुस्तकों की शुद्ध सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए।
   - इतिहास से सम्बन्धित शब्दावली का प्रयोग सतक्रता से किया जाना चाहिए।

5. **शैली**–
   - इतिहास की पाठ्य–पुस्तकों में प्रयुक्त शैली, सरल, सजीव, तक्रपूर्ण एवं भाव प्रकाशन की क्षमता से परिपूर्ण होनी चाहिए।
   - शैली में विविधता होनी चाहिए, ताकि वह स्तरानुरूप बालकों का मानसिक विकास कर सकें।

6. **नियोजन**–
   - सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित होनी चाहिए।

- विषय वस्तु विभिन्न पाठों, शीर्षकों में उचित रूप से विभक्त की जानी चाहिए।
- पाठ्य–पुस्तक में क्रम से पहले सरल पाठ, बाद में कठिन पाठ व्यवस्थित किए जाने चाहिए।
- आवश्यक एवं उपयोगी ऐतिहासिक तथ्यों व घटनाओं को भी यथास्थान व्यवस्थित करना चाहिए।
- पाठ्य–पुस्तक में पाठ अधिक विस्तृत होने चाहिए, कक्षा स्तर के अनुसार पाठों का विस्तार होना चाहिए।

7. **उपयुक्त सामग्री का प्रयोग**–
- शाब्दिक व प्रदर्शनात्मक उदाहरण काम में लेने चाहिए।
- विषय वस्तु को रोचक व प्रभावी बनाने के लिए चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र एवं चार्ट आदि का आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए।
- छोटी कक्षाओं में चित्र व रेखाचित्र बड़े आकार के साथ रंगीन होने चाहिए।
- प्रयुक्त चित्रण व उदाहरण रोचक व आकर्षक होने चाहिए।
- ऑकड़ों, उद्धरणों व सन्दर्भों की पर्याप्त संख्या होनी चाहिए।

8. **अभ्यास प्रश्न**–
- कुछ प्रश्न स्वाध्याय व ज्ञान वृद्धि के होने चाहिए।
- प्रश्न उद्धेश्याधारित होने चाहिए।
- पाठ्य–पुस्तक में प्रत्येक पाठ के अन्त में विषय वस्तु पर आधारित कक्षा कार्य एवं गृहकार्य के लिए प्रश्न दिये जाने चाहिए।
- प्रश्नों की सूचना वस्तुनिष्ठ, लघूत्तरात्मक तथा निबन्धात्मक होनी चाहिए।

9. **दृष्टान्त (उदाहरण)**– पाठ्य–पुस्तक दृष्टान्त (उदाहरण) शुद्ध, उपयुक्त व स्पष्ट होनी चाहिए।

10. **मूल्यांकन प्रश्न**–
- पाठ्य पुस्तक में मूल्यांकन प्रश्न उद्धेश्याधारित होने चाहिए।
- पाठ्य पुस्तक में पाठ्य वस्तु (विषय वस्तु) पर आधारित होनी चाहिए।
- पाठ्य पुस्तक में मूल्यांकन प्रश्नों में विश्वसनीयता व वस्तुनिष्ठता वैधता एवं व्यापकता होनी चाहिए।

11. **अतिरिक्त सामग्री**–
- पाठ्य–पुस्तक के प्रारम्भ में अनुक्रमणिका पाठ्यक्रमानुसार होनी चाहिए।
- पाठ्य–पुस्तक के प्रारम्भ में निर्देश एवं प्रस्तावना होने चाहिए।
- पाठ्य–पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट एवं सन्दर्भ ग्रन्थ सूची होनी चाहिए।

12. समाज एवं राष्ट्र की दृष्टि से उपयुक्त होनी चाहिए।

पाठ्य–पुस्तक चयन हेतु मूल्यांकन उपकरण का प्रारूप

पाठ्य–पुस्तकों के चयन हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा विकसित निम्नांकित उपकरण का प्रयोग किया जा सकता हैं।

मापनी प्राप्तांक बोर्ड (Rate-cum-Score Card)

1. पुस्तक का शीर्षक (Title)
2. लेखक का नाम
3. प्रकाशक
4. कक्षा

5. पुस्तक का संस्करण

क्रम सं.		(Rating) मापनी						प्राप्तांक (Score)	टिप्पणी (Remarks)
		(Writage) अंक भार	A 4	B 3	C 2	D 1	E 0		
1	पुस्तक का नियोजन								
2	पाठ्यवस्तु का चयन								
3	विषयवस्तु का संगठन एवं प्रस्तुतीकरण								
4	दृष्टान्त सामग्री का प्रावधान								
5	अभ्यास कार्य का निर्माण								
6	सहायक विशेषताओं का प्रावधान								
7	पुस्तक की भौतिक विशेषताएँ								

कुल प्राप्तांक (Total Score)

प्रश्न अपने देश में इतिहास की वर्तमान पाठ्य–पुस्तकों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए तथा भविष्य में इतिहास की पाठ्य–पुस्तकों में सुधार हेतु सुझाव दीजिए।

Critically examine the Present Text-Book of the History in our country and give suggestion for future revision improvement of the text-book of the history.

उत्तर इतिहास की वर्तमान पाठ्य–पुस्तकों का आलोचनात्मक परीक्षण

Critically examine the Present Text-Book of History

भारतीय शैक्षिक कार्यक्रम में पाठ्य पुस्तकों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया हैं, लेकिन देश में इतिहास की वर्तमान पाठ्य–पुस्तकों की स्थिति बड़ी शोचनीय हैं, हमारे देश में अभी पाठ्य पुस्तकों का रूप परम्परागत बना हुआ हैं, यधपि इस क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T.) ने कुछ कार्य किया है, जिसकी प्रशंसा की जा सकती हैं। फिर भी अधिकांश पाठ्य–पुस्तकें आलोचना का विषय बनी हुई हैं। इतिहास की प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों पर दृष्टिपात करने से उनमें निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं–

1. पाठ्य–पुस्तकों में विषय–वस्तु तथा उनकी व्यवस्था, कक्षा स्तर तथा पाठ्यक्रम के अनुसार नहीं पायी जाती।
2. इतिहास की पाठ्य–पुस्तकों मं तथ्यों की पुनरावृत्ति तथा अनावश्यक तथ्यों का समावेश आदि दोष पाये जाते हैं।
3. प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों में तथ्यों का प्रस्तुतीकरण ऐसे ढ़ंग से किया गया हैं कि कभी–कभी वे साम्प्रदायिक एवं संकीर्ण भावना जागृत करने में अधिक सफल हुई हैं, जबकि उनकों राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने वाला साधन होना चाहिए।
4. इनमें स्त्रोत सन्दर्भों का अभाव पाया जाता हैं। इस कारण भी उनका स्तर गिरा हुआ हैं?
5. बाह्म सज्जा के दृष्टिकोण से भी प्रचलित पाठ्य–पुस्तकें निम्न श्रेणी की है।
6. प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों में उपयुक्त सहायक–सामग्री चित्र, मानचित्र, समय–रेखा, युद्ध योजना आदि का अभाव पाया जाता हैं।
7. प्रायः प्रचलित पाठ्य–पुस्तकें उन लेखकों द्वारा लिखी गई हैं, जो कॉलेज या विश्वविद्यालय के शिक्षक हें, जिनकों सम्बन्धित कक्षा के शिक्षण का कोई अनुभव नहीं होता हैं। फलस्वरूप ऐसी पाठ्य–पुस्तकें कक्षा–स्तर के अनुकूल नहीं होती और न वे एक प्रभावकारी शिक्षण उपकरण के रूप में कार्य करती हैं।
8. इतिहास की प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों में तिथियों को अधिक महत्व प्रदान किया गया हैं, जिसको छात्र असम्बद्ध रूप से रहते हें। फलतः इतिहास एक नीरस विषय बन गया हैं।
9. पाठ्य–पुस्तकों में मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियॉ भी पायी जाती हैं।
10. प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों में मूल्यांकन की नवीन विधि के अनुसार प्रश्नों के स्थान प्रदान नहीं किया गया हैं।
11. वर्तमान पाठ्य–पुस्तकों में भाषा तथा शैली का भी दोष पाया जाता हैं।
12. प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों में राजनीतिक पक्ष का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाता है। इनमें जन साधारण के जीवन के सामाजिक, आर्थिक, सॉस्कृतिक, धार्मिक आदि पक्षों की उपेक्षा पायी जाती हैं। जिसके कारण ये पुस्तके छात्रों में सामाजिक एकता की भावना का विकास करने में असमर्थ रहती हैं।
13. पाठ्य–पुस्तकों की तैयारी और अवस्था के विषय में अनुसंधान का अभाव।
14. अनेक प्रकाशकों की अनैतिक कार्य रीति।

(Suggestion for the future improvement of the text book of the history)

'भविष्य में इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के सुधार हेतु सुझाव'– शिक्षा आयोग ने लिखा हैं, एक ऐसी पाठ्य पुस्तक जो एक सुशिक्षित एवं सुयोग्य विषय विशेषज्ञों द्वारा लिखी गई हैं और जिसके निर्माण में मुद्रण स्तर, चित्र एवं सामान्य सज्जा के प्रति सावधानी बरती गई हो, छात्रों की रूचि को जगायेगी और अध्यापक के कार्य में पर्याप्त सहायक सिद्ध होगी। इस प्रकार उच्च कोटि की पाठ्य पुस्तकों की व्यवस्था स्तर उन्नयन करने में प्रगति सिद्ध होगी, दुर्भाग्यवश हमारे देश में पाठ्य–पुस्तक लेखन तथा उत्पादन की ओर उसकी महत्ता के अनुरूप ध्यान नहीं दिया गया हैं। अधिकांश विद्यालय विषयों में विशेषकर भाषाओं में ऐसी पुस्तकों की प्रचुरता हैं, जिनका स्वरूप एवं स्तर निम्न कोटि का हैं तथा जिनका उत्पादन बड़ी उपेक्षा से किया गया हैं, इनके सुधार के लिए शिक्षा आयोग के अग्रांकित सुझाव उल्लेखनीय हैं–

1. देश में उपलब्ध सिद्धान्तों से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T.) द्वारा पाठ्य पुस्तकों के उत्पादन के प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाए।
2. भारत सरकार पाठ्य पुस्तक उत्पादन के लिए सरकारी क्षेत्र में व्यापारिक ढ़ंग पर कार्य करने वाले स्वायत्त संगठन की स्थापना करें।
3. पाठ्य पुस्तकों के उत्पादन के लिए राज्य शिक्षा विभाग के निकट सम्पक्र से काम करने वाले एक पृथक अभिकरण की स्थापना की जाए, यह अभिकरण राज्य स्तर पर स्वायत्त एवं व्यापारिक आधार पर कार्य करें।
4. विद्वानों को पुस्तक लेखन के लिए आकर्षित करने हेतु यह अभिकरण पारिश्रमिक देने में प्रकाशकों से अधिक उदार नीति अपनायें।
5. यह अभिकरण पाठ्य–पुस्तकों का उत्पादन 'न लाभ न हानि' के आधार पर कार्य करें।
6. पुस्तक लेखन के कार्य के लिए प्रत्येक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
7. शिक्षकों को पाठ्य पुस्तकें लिखने के लिए विशेषतः प्रोत्साहित करना चाहिए।
8. प्रत्येक पाठ्य पुस्तक में निरन्त संशोधन करना उसका आधुनिकतम स्वरूप बनाये रखना तथा यदि नही तो कम से कम पॉच वर्षों में उसका पूर्णतया संशोधन करना कार्यनीति का एक निश्चित उद्धेश्य होना चाहिए।
9. पाठ्य पुस्तक उत्पादन के कार्यक्रम में अधोलिखित पक्षों पर ध्यान दिया जाए–

   i. **शैक्षिक पहलू**– इसमें पाठ्य पुस्तकों की तैयारी, परीक्षण एवं मूल्यांकन शामिल हैं।
   ii. **तैयारी सम्बन्धी पहलू**– इसके अन्तर्गत मुद्रण एवं प्रकाशन की सभी बातें आती हैं।
   iii. **विवरण सम्बन्धी पहलू**– इसमें संग्रहण एवं बिक्री आदि शामिल हैं।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्य पुस्तकों के सुधार के लिए अग्रलिखित सुझाव दिये हैं–

1. प्रत्येक राज्य में पाठ्य पुस्तकों में सुधार लाने के लिए एक उच्च शक्ति सम्पन्न पाठ्यपुस्तक समिति (High power text-book committee) की स्थापना की जाये।
2. अच्छे उदाहरणों के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारें मिलकर एक संग्रहालय की स्थापना करें। यह संग्रहालय पाठ्य पुस्तक समितियों तथा प्रकाशकों को पुस्तकों के उदाहरणों के स्तर को सुधारने के लिए ब्लॉक प्रदान करेगा।
3. प्रस्तावित पाठ्य पुस्तकों में जल्दी–जल्दी परिवर्तन नहीं किये जायें।

प्रश्न–1 'इतिहास शिक्षक की व्यावसायिक प्रगति" पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

Write a short note on "Professional growth of History teachers".

Or

"व्यावसायिक अभिवृद्धि से आप क्या समझते हें? इतिहास–शिक्षक अपनी व्यावसायिक अभिवृद्धि किस प्रकार प्राप्त कर सकता हैं?

उत्तर– **व्यावसायिक अभिवृद्धि का अर्थ (Meaning of Professional Growth)-**

व्यावसायिक अभिवृद्धि (Professional Growth) – का अर्थ हैं, प्रत्येक कार्यरत् व्यक्ति द्वारा अपने निर्धारित व्यवसाय में कुशलता, निपुणता एवं निष्ठतता प्राप्त करने का सतत प्रयास करते रहना। प्रत्येक व्यवसाय का ज्ञान एवं कौशल पक्ष होता हैं। इन पक्षों में निरन्तर अपनी प्रभावोत्पादकता बढ़ाने का प्रयास करना एक दक्ष कार्यकर्त्ता का लक्ष्य होता हैं। जिससे वह अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता हें। शिक्षण–व्यवसाय में कभी शिक्षक का यही लक्ष्य होना चाहिए। इतिहास शिक्षक की व्यावसायिक अभिवृद्धि का अर्थ होगा कि वह इतिहास विषय, उसकी शिक्षण व मूल्यांकन विधियों एवं प्रविधियों का अद्यतन ज्ञान प्राप्त करता रहें।

टैगोर ने कहा था– ''जो शिक्षण का साहस करता हैं, उसे सदैव सीखते रहना चाहिए'' (One who dares to teach must never cease to learn) – यह कथन सभी विषयों के शिक्षकों पर चरितार्थ होता हैं।

- इतिहास– शिक्षक को भी अपनी व्यावसायिक अभिवृद्धि हेतु सदैव अध्ययनरत् रहना चाहिए।
- **व्यावसायिक अभिवृद्धि के उपाय** (Ways of Professional Growth) –इतिहास–शिक्षक की व्यावसायिक अभिवृद्धि हेतु निम्नांकित उपाय अपनाये जा सकते हैं–

1. **सतत् अध्यवसाय** (Continuous study) – इतिहास शिक्षक को सम्बन्धित साहित्य पुस्तकों, समाचार–पत्रों, रेड़ियों, टी.वी., फिल्म आदि साहित्य एवं जन संचार साधनों के अध्ययन एवं परिदर्शन द्वारा अपने विषय–ज्ञान एवं शिक्षण कौशलों का विकास करते रहना चाहिए यह शिक्षक द्वारा अपने अवकाश के समय को पुस्तकालय, वाचनालय तथा जन–संचार के माध्यमों से अध्ययन करने में लगाने से सम्पन्न हो सकता हैं।
2. **सेवारत प्रशिक्षण** (inservice training) – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड व राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा माध्यमिक कक्षाओं के शिक्षकों हेतु विभिन्न प्रकार के अल्पकालीन प्रशिक्षण शिविर एवं कार्यशालाएँ (Campus workshops) आयोजित की जाती हैं, जिनमें भाग लेकर इतिहास शिक्षक शिक्षण–विधियों एवं मूल्यांकन की नवीन तकनीकों से अवगत हो, अपनी व्यावसायिक अभिवृद्धि कर सकता हैं।
3. **शैक्षणिक पर्यटन** (Educational Tours) –केन्द्रीय तथा राज्य सरकारें शिक्षकों को अंतर्देशीय तथा विदेशों में शैक्षणिक आदान–प्रदान करने हेतु पर्यटन करने के लिए वित्तिय सहायता देती हे। अन्य राज्यों या विदेश में वहॉ की शिक्षा व्यवसाय तथा शिक्षण तकनीकों का अध्ययन करने का पर्यटन एक महत्वपूर्ण साधन हें, जिसका लाभ शिक्षकों को उठाना चाहिए।
4. **अध्ययन अवकाश** (Study Leave) – सरकार द्वारा उच्च अध्ययन अथवा प्रशिक्षण हेतु विशेष अवकाश स्वीकृत किया जाता हें, जिसका लाभ–शिक्षकों को लेना चाहिए।
5. **स्वयंपाठी अध्ययन** (Private Study) – शिक्षकों को उच्च उपाधि प्राप्त करने हेतु स्वयंपाठी प्रत्याशी के रूप में अध्ययन कर परीक्षा देने की सुविधा दी जाती हें। शिक्षक अपनी शैक्षणिक योग्यता बढ़ा सकते हैं।
6. **पत्राचार पाठ्यक्रमों द्वारा अध्ययन** (Study Through Correspondance Courses) – की भी सुविधा शिक्षकों को दी जाती हैं। सेवारत होते हुए भी वह अपना अध्ययन जारी रख सकते हें। सम्पक्र शिविरों (contact campus) हेतु उन्हें अवकाश भी दिया जाता हैं।
7. **शैक्षिक पत्र–पत्रिकाओं हेतु लेखन** (Writing for Educational Journals) – अनेक शैक्षिक–पत्रिकाएँ ऐसी प्रकाशित होती हैं, जिनके माध्यम से शिक्षक अपने लेख व शोध प्रबन्ध प्रकाशित करा

सकते हे। तथा शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा ऐसी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, जैसे– N.T.E. Journal शिविरा, नया शिक्षक इत्यादि।

8. **<u>शोध कार्य</u>** (Research work) – अनुसंधान की प्रकृति वाले शिक्षक सेवारत रहते हुए भी किसी विश्वविद्यालय से शोध–कार्य कर अपनी व्यावसायिक अभिवृद्धि कर सकते हैं। राज्य स्तर प्रत्येक जिले में जिला शैक्षिक अनुसंधान (DERF) – बने हुए है।, जिनके माध्यम से शिक्षक अपने शोध कार्य का परस्पर आदान–प्रदान कर सकते हैं।

9. **<u>विषय अध्ययन परिषदे</u>** (Subject Study Circles) – कुछ राज्यों में स्थानीय जिला तथा राज्य स्तर पर प्रत्येक विद्यालयीय विषय के शिक्षकों की अध्ययन परिषदों का निर्माण किया जाता हैं। इसके माध्यम से इतिहास शिक्षक परस्पर विचारों का आदान–प्रदान कर सकते है। तथा अपनी कठिनाइयों व समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं।

10. **<u>विद्यालय–संगम</u>** (School Complexes) – का निर्माण राजस्थान राज्य में काफी अर्से पूर्व हो चुका हैं। इसके माध्यम से एक विद्यालय संगम के किसी विश्व के शिक्षक अपने अनुभवों से दूसरों को लाभान्वित कर सकते हैं।

प्रश्न–2 यदि आप माध्यमिक स्तर के लिए इतिहास विषय के अध्यापक की चयन समिति के सदस्य हो तो इतिहास विषय के अध्यापक का चयन करते समय आप किन–किन बातों का विशेष ध्यान रखेंगे?

Suppose you are in a Selection Committee for selection of a history teacher for secondary level. What special, joints would lyou keep in mind for selection the history teacher?

Or

संक्षिप्त टिप्पणी लिखिऐं– इतिहास का शिक्षक
Write short note on teacher of history.

Or

इतिहास शिक्षक के गुणों का विवेचन कीजिए।
Discuss the qualities of a history teacher.

उत्तर– **प्रस्तावना**– शिक्षा प्रक्रिया के तीन केन्द्र बिन्दु हैं। शिक्षक, बालक तथा पाठ्यक्रम। शिक्षक की सफलता इन तीनों की सुसम्बद्धता पर ही निर्भर होती हैं। आधुनिक शताब्दी में प्रत्येक देश में शिक्षण–जगत् के विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त विकास एवं परिवर्तन हुए हें। परिवर्तन हमें विशेषतः पाठ्यक्रम शिक्षण विधि, सामग्री साज–सज्जा आदि मूल्यांकन प्रविधियों के क्षेत्र में दिखाई पड़ते हें, पर हमारा पाठ्यक्रम, पाठशाला–भवन फर्नीचर, प्रयोगशाला सहायक सामग्री, मूल्यांकन एवं निर्देशन कार्यक्रम आदि कितने ही अच्छे हो, तब तक वे निरर्थक हैं, जब तक एक अच्छे शिक्षक द्वारा उनमें जीवन संचार न किया जाये, शिक्षा–प्रक्रिया के संचालक के रूप में उसका बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान हैं। संचालक ही शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिए उत्तरदायी हैं, यदि शिक्षक रूपी संचालक के ज्ञान, योग्यता एवं व्यवहार में विकास न किया गया तो शिक्षा का गुणात्मक पक्ष छिपाया बना रहेगा।

इतिहास–शिक्षक के गुण (Qualities of History-Teacher)-

1. **विषय एवं व्यवसाय में निष्ठा (Faith in the subject and vocation)-** प्रत्येक विषय में अध्यापक को अपने विषय में निष्ठा रखना आवश्यक हैं। जो अध्यापक अपने विषय में निष्ठा नहीं रखता हैं। वह

अध्यापक कहलाने योग्य नहीं हैं, अर्थात् उसको सफल शिक्षक नहीं कहा जा सकता। निष्ठा 'सीखने की प्रक्रिया' (Learning Process) को प्रोत्साहित करती हैं तथा विषय में सदैव के लिए रूचि उत्पन्न करती हैं। इतिहास का अध्यापक निष्ठा के बिना भूतकाल के महत्व को नहीं समझ सकता हैं। निष्ठा अन्धविश्वास से पूर्ण तथा तक्ररहित नहीं होनी चाहिए। क्योंकि इससे वैज्ञानिक तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विकास नहीं होगा, जिसको उत्पन्न करना इतिहास के शिक्षक का मुख्य उद्धेश्य हैं। भारतीय शिक्षकों में इसी निष्ठा की कमी हैं, तभी हमारी शिक्षा का स्तर प्रतिदिन गिरता जा रहा हें। यह सत्य हैं कि हमारे शिक्षकों को पेट भरने योग्य वेतन भी नहीं मिलता, परन्तु फिर भी जब उन्होनें इस व्यवसाय को ग्रहण कर लिया हैं तब उनके लिए वह अनिवार्य हैं कि वे सत्यनिष्ठ होकर अपने कार्य को रूचि, तत्परता तथा उत्साह के साथ करें, क्योंकि वे ही राष्ट्र के निर्माता हैं।

2. **विषय का ज्ञान (Knowledge of the subject)**– इतिहास के शिक्षक से जिस बात की अपेक्षा की जाती हें, वह हैं, इतिहास का ज्ञान। प्रत्येक शिक्षक को स्वस्थ शरीर, स्वस्थ चित्त तथा स्वस्थ व्यक्तित्व के साथ ही विषय का भी पूर्ण ज्ञान रखना चाहिए। विषय का अपूर्ण ज्ञान सदैव हानिकारक होता हैं। इतिहास शिक्षक को प्रथम कोटि का विद्यार्थी होना चाहिए। अनेक बातों की केवल सूचना रखने वाला व्यक्ति इतिहास का शिक्षक नहीं हो सकता। ज्ञान को सूचना से स्पष्टतया भिन्न प्रदर्शित कर देना चाहिए। वेदों के अनुसार ज्ञान तथा क्रिया का संयोग एक मनुष्य को प्रकाश प्रदान करता हैं। एक विद्धान के अनुसार, ''ज्ञान एक बहुत बड़ा संश्लेषण हैं'' ज्ञान के लिए सूचना तथा अन्य बातों की आवश्यकता होती हैं, सूचना।
ज्ञान का एक अंग हैं। इतिहास के (Information) से हमारा तात्पर्य यह हैं कि व्यक्ति को इतिहास का ज्ञान हो, वह उसके कालक्रम का भी ज्ञान रखता हो। उसे इतिहास के विषय में अनेक सूचनाएॅ ंतो अवश्य ही प्राप्त हो, साथ में वह उनका महत्व सीमाएॅ तथा उपयोगिता भी जानता हो, अर्थात् वह कब कैसे तथा कहॉ का उत्तर देने की सामर्थ्य रखता हो। इतिहास एक घटना हैं, तो इतिहास के शिक्षक के लिए यह जानना अतिआवश्यक हैं वह घटना कब कैसे और क्यों घटित हुई। इसके अतिरिक्त उसे इन तथ्यों को प्रस्तुत करने का भी ज्ञान होना चाहिए। जैसे की ऊपर कहा गया हैं कि शिक्षक विश्व–कोष नहीं हो सकता, परन्तु वह मानव इतिहास के किसी काल–विशेष का विशेषज्ञ अवश्य हो सकता हैं।

3. **विश्व इतिहास का ज्ञान (Knowledge of world history)**– इस बात की आवश्यकता नहीं कि वह विश्व–इतिहास का पारंगत पण्डित हो, वरन् उसको विश्व–इतिहास का सामान्य ज्ञान अवश्य हो, जिससे वह अपने कार्य को सुचारू रूप से चला सकें। वह मानव–जाति के पूर्ण इतिहास को ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता हैं तो वह उसके एक काल का पूर्ण ज्ञान अवश्य प्राप्त करे, जिससे वह इतिहास के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने के लिए बच्चों की बुद्धि को ठीक मार्ग पर लगा सके। भारत के राज्यो को शिक्षा–पद्धति में विश्व इतिहास को पहले महत्व नहीं दिया गया था। परन्तु धिरे–धिरे सभी राज्य अपने पाठ्यक्रम में विश्व–इतिहास का प्रारम्भिक ज्ञान सम्मिलित कर रहे हैं।

4. **निष्पक्षता तथा वैज्ञानिक (Impartiality and Scientific outlook)**–इतिहास एक विज्ञान हैं। इसलिए इतिहास के शिक्षक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा निष्पक्षता ही उसको दूसरे सामाजिक विषयों के शिक्षकों से अलग करती हैं। एक वैज्ञानिक के रूप में इतिहास का शिक्षक सत्यासत्य की खोज सम्बन्धित हैं। साथ ही उसको पक्षपात तथा हठधर्मी से पृथक रहना चाहिए। उसमें संकुचित राष्ट्रीय भावनाओं का समावेश न होने पाये। इसका यह धर्म नहीं हैं कि वह अपने को इनसे पृथक रखे, वरन् वह सदैव एक तीसरे व्यक्ति का–सा कार्य करें। किसी सिद्धान्त अथवा घटना के प्रतिपादन के अवसर पर उसे दोनों पक्षों पर शान्तिपूर्वक विचार करना चाहिए। इसके पश्चात् उनके महत्व तथा सीमाओं पर विचार करें। जिस समय अध्यापक अपनी जाति तथा धर्म के विषय में वर्णन कर रहा हो उस

समय उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि वह अन्य जातियों या धर्म वालों को हेय न समझें, क्योंकि प्रत्येक वस्तु में गुण–दोष हुआ करते हैं। अतः वह निष्पक्ष भाव से उनकी विवेचना करें और सत्य की खोज करके छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करें।

5. **प्रान्तीय इतिहास ज्ञान (Knowledge of provincial history)**– इतिहास के योग्य शिक्षक के लिए यह अनिवार्य हैं कि वह प्रान्तीय इतिहास के तथ्यों को भली प्रकार जानता हो, जिससे वह सतक्रता के साथ उनको अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकें। भारत के प्रत्येक प्रान्त का अपना–अपना इतिहास हैं, उदाहरणार्थ– गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल आदि। इतिहास का शिक्षक इनका पृथक–पृथक वर्णन न करें, वरन् इनके इतिहास का वर्णन राष्ट्र के इतिहास के उपयोगी बनाकर करें, इन्होंने राष्ट्र की उन्नति के लिए क्या–क्या देने प्रदान की हैं। संकुचित प्रान्तीय भावनायें राष्ट्र की उन्नति के लिए हानिकारक सिद्ध होगी इसलिए इतिहास के योग्य अध्यापक के लिए आवश्यक हैं कि वह इनके इतिहास को इस प्रकार छात्रों के सम्मुख रखें जिससे उनको अपने प्रान्त के इतिहास का ज्ञान हो जाये और राष्ट्रीय हित को क्षति न पहुॅचे।

6. **कथा वाचक (Stoory-Teller)**– इतिहास के अध्यापक को एक कुशल कथा वाचक भी होना चाहिए, कहानी कहना भी एक कला हैं। ईश्वरीय देन हैं, लेकिन कुछ कलाऍ अभ्यास के द्वारा ग्रहण की जा सकती हैं। कहानी कहने की कला को ग्रहण करने के लिए अहं की भावना को दबाना चाहिए। इतिहास के अध्यापक को कहानी कहते समय अपने पद का ध्यान नहीं करना चाहिए, वरन् यह विद्यार्थियों के साथ मिलकर अपने पद का ध्यान किए बिना कहानी सुनता रहे। इतिहास के अध्यापक को कुशल कथावाचक बनाने के लिए अधोलिखित गुणों को ग्रहण करना चाहिए–

   अ. नाटक के पात्र के गुण
   ब. अच्छी तथा उपयुक्त कहानियों के चयन का अनुभव
   स. प्रभावशाली वाणी
   द. आत्मविश्वास
   य- ऐतिहासिक व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति तथा
   र. कहानी की पाठ्य–वस्तु का पूर्ण ज्ञान।

7. **इतिहास शिक्षण का ज्ञान (Knowledge of Teaching History)**– प्राचीनकाल में शिक्षकों के प्रशिक्षण को अधिक महत्व नहीं दिया जाता था। यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं हैं कि उस काल में भी बहुत से प्रतिष्ठित शिक्षक उत्पन्न हुए। शिक्षण एक कला हैं। मध्यकालीन विश्वविद्यालयों ने इस कला के सामान्य सिद्धान्तों को निरूपित किया। अध्यापक के लिए विधियों तथा शिक्षण–साधन, जिनके द्वारा वह अपनी पाठ्य–वस्तु को रोचक तथा आकर्षक ढ़ंग से अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकता हैं, जो जन्मजात शिक्षक नहीं हैं, उनके लिए पाठन–विधियों का प्रयोग विशेष लाभप्रद हैं। उनके द्वारा वे अपने शिक्षण को उन्नत बना सकते हैं। इनके प्रयोग से शिक्षक अपने कार्य को सरल बना सकता हैं। पाठन विधियों के ज्ञान से शिक्षक ऐतिहासिक तथ्यों को अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करना सीख जायेगा कि ये तथ्य कब, कैसे, क्यों प्रदान किए जायें।

   ये विधियों शिक्षक की पथ–प्रदर्शक तथा साधन होनी चाहिए, ये विधियॉ उसके लिए हैं, न कि वह उनके लिए। विधियॉ उसकी शासकीय अधिकारी नहीं, वरन् उसकी सेवा करने वाली हैं। उसको इनका प्रयोग लोच के साथ करना चाहिए। बहुत–से शिक्षक इन विधियों को हेय दृष्टि से देखते हें। उनका विचार हैं कि इनको प्रशिक्षण की समाप्ति के पश्चात् भूल जाना चाहिए। यह उनकी भूल हैं, ऐसा करना मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के विरूद्ध हैं, क्योंकि इनका आधार मनोवैज्ञानिक हैं। जब हम मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से अपने छात्रों

को शिक्षा प्रदान करेंगे, तभी उनका विकास समुचित रूप से हो जायेगा। विद्यालय स्तर पर तिथियॉ ही दी जानी चाहिए। इतिहास के अध्यापक को शिक्षण की गतिशील विधियों तथा सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जिससे वह तथ्यों का चयन तथा संगठन करके शिक्षण को रोचक बना सकें।

8. **सामयिक घटनाओं से सुपरिचित (Familiarity with the current events)**– एक योग्य इतिहास शिक्षक को सामयिक घटनाओं की जानकारी होनी चाहिए। इनके निम्नलिखित कारण हैं–
   - **अ.** इन घटनाओं की जानकारी से अपने शिक्षण को रोचक तथा प्रभावशाली बना सकता हैं।
   - **ब.** वह अपने प्रकरण के शिक्षण के लिए प्रभावशाली वातावरण निर्मित कर सकता हैं।
   - **स.** बहुत–सी वर्तमान घटनाऍ तत्कालीन भूतकाल की देन हैं। इसके द्वारा इतिहास का अध्यापक परावर्तन करा सकता हैं और दूर के अतीत का पता लगा हैं।
   - **द.** इन घटनाओं की भिन्नता के प्रमुख उद्धेश्य की प्राप्ति में विशेष सहायता मिलती हैं।

9. **शिक्षक का व्यक्तित्व (Personality of the teacher)**– प्रत्येक देश की शिक्षा पद्धति में शिक्षक का स्थान एक धूरी (Pivot) के समान हें। एक विद्वान का विचार हैं कि शिक्षक के गुण ही शिक्षा–पद्धति को सफल बनाते हैं, न कि पाठ्यक्रम शिक्षक के गुण उसकी सफलता के लिए पर्याप्त सीमा तक उत्तरदायी हैं, परन्तु पाठ्यक्रम भी अपने क्षेत्र में सफलता प्रदान कराने में सहायक हैं। शिक्षक का स्वर उसका रक्षात्मक शस्त्र हैं। इसके द्वारा वह अपने व्यक्तित्व को प्रदर्शित कर सकता हैं। उत्तम व्यक्तित्व आधा शिक्षण हैं। उसमें सभी गुण होने चाहिए, जिनके द्वारा मानवता की भलाई के लिए कार्य कर सके। इतिहास के अध्यापक के लिए संवेगात्मक रूप से संतुलित होना अति आवश्यक हैं, उसका व्यक्तित्व चुम्बक शक्ति के समान हो, जिसके द्वारा दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सके।

10. **पर्यटन योग्यता–बेकन (Bacon)** का कथन हैं– देशाटन शिक्षा का एक श्रेष्ठ साधन हैं। पर्यटन (Excursion) से देश–विदेश के मनुष्यों और स्थानों के विषय में गम्भीर एवं व्यापक ज्ञान प्राप्त होता हैं। इतिहास के शिक्षक को विभिन्न ऐतिहासिक स्थानों को देखना चाहिए, क्योंकि बहुत से ऐसे स्थल हैं जहॉ पर छात्रों को भ्रमण कराने के लिए नहीं ले जाया जा सकता हैं। यदि वह उन स्थलों का भ्रमण करेगा तो वह उन स्थानों से सम्बन्धित जानकारी को छात्रों के सम्मुख स्पष्टतम रूप से रखने में सफल होगा तथा छात्रों को भ्रमण में पथ–प्रदर्शन करने में सफल हो सकेगा।

के.डी. घोष (K.D. Ghosh)– के विचार के अनुसार हम अन्त में कह सकते हैं कि जब तक इतिहास का अध्यापक अपने में निम्नलीखित गुणों का समावेश नहीं करेगा, तब तक वह सफल अध्यापक नहीं कहा जा सकता।

- **अ.** उसमें सत्य की खोज के लिए लभ्य उत्साह होना चाहिए
- **ब.** उसमें ऐतिहासिक व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति हो तथा
- **स.** वह मानव चरित्र तथा उसकी सर्वतोमुखी उन्नति को प्रोत्साहित करने के लिए सतक्र रहे और उसके आदर्श महान हो।

प्रो. हस्लक (Prof. E.L. Huslluck)– ने इतिहास–शिक्षक के विषय में लिखा हैं कि इतिहास पाठ्यक्रम का सबसे कठिन विषय हैं जिसका शिक्षक सक्रिय अनुसंधानकर्त्ता एवं फौज के कमाण्डर की भॉति तत्पर होना चाहिए।

प्रश्न–2 इतिहास शिक्षक के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधायें कौन–कौनसी हैं?
What are the main Pitfalls in the path of a Hisotry Teacher?

उत्तर– इतिहास–शिक्षक की कठिनाइयॉ (Pit Falls) तथा उनका निराकरण–

1. **भूतकाल का प्रस्तुतीकरण**– इतिहास की विषय–वस्तु भूतकाल के धुँधले आवरण में परिपेक्षित होने के कारण विद्यार्थियों के समक्ष उसे प्रस्तुत करने की समस्या इतिहास शिक्षक की सबसे बड़ी कठिनाई हैं। उसे एक निर्जीव भूतकाल को सजीव रूप में प्रस्तुत करना होता हैं। एक कुशल अध्यापक उपयुक्त शिक्षणार्थियों तथा शिक्षण–उपकरणों के माध्यम से इस कठिनाई का निराकरण सरलता से कर सकता हैं। ऐसी विधियों तथा उपकरणों का पहले विशद् विवेचन किया जा चुका हैं। यदि प्रकरण के अनुकूल विधि एवं उपकरों का प्रयोग किया जाए ताकि भूतकाल के अमूर्त तथ्य विद्यार्थियों के समक्ष मूर्त, बोधगम्य एवं आकर्षक रूप से प्रस्तुत किए सजा सकते हें। यदि शिक्षक में अपने विषय के प्रति वास्तविक अभिरूचि, निष्ठा एवं श्रमशीलता हो।
2. **भूत को वर्तमान के सम्बद्ध करना**– इतिहास के अध्ययन का प्रमुख उद्धेश्य वर्तमान को भूतकाल के प्रकाश में समझना होता हैं। शिक्षक अपने विद्यार्थियों में इस उद्धेश्य की उपलब्धि चाहता हैं, किन्तु भूत व वर्तमान के उचित समवाय के अभाव में उसके लिए यह कार्य कष्टसाध्य हो जाता हैं। प्रायः तथ्यों का विवरण मात्र देने से इस उद्धेश्य की पूर्ति नहीं होती। भूत को वर्तमान से सम्बद्ध करने का दायित्व इतिहास–शिक्षक का होता हैं। जिससे कि विद्यार्थी वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं को समझने में सक्षम हो सके। ब्रिटेन की इतिहास–शिक्षर समिति ने अध्यापक के इस दायित्व को महत्वपूर्ण माना हैं। यह तथ्य प्रगट करता हैं कि इतिहास–शिक्षक को अपने विषय ज्ञान के साथ वर्तमान की ज्वलन्त समस्याओं तथा उनके भूतकाल का सहज सम्बन्ध आवश्यक ध्यान में रखना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में उपरोक्त उद्धेश्य की पूर्ति हो सके। इसके लिए शिक्षक को अपने सामान्य ज्ञान की निरन्तर वृद्धि करते रहना चाहिए।
3. **विषय–वस्तु के चयन एवं प्रस्तुतीकरण की समस्या**– उक्त समिति ने इतिहास शिक्षक का प्रमुख कार्य एक ऐसे विषय को बालको के समक्ष प्रस्तुत करना बतलाया हैं जो कि प्रौढ़ विकसित लोगों के अध्ययन का विषय हैं। अतः यह स्वाभाविक हैं कि शिक्षक के समक्ष यह समस्या आती हैं कि वह बालकों के मानसिक विकास क्रम के अनुरूप विषय–वस्तु का इस प्रकार चुनाव एवं प्रस्तुतीकरण करे, जो उनकी जिज्ञासा की पूर्ति कर उनमें ऐतिहासिक अभिवृत्ति तथा विवेचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। यह कार्य शिक्षक में एक उच्च स्तरीय कुशलता की अपेक्षा रखता हैं। इतिहास शिक्षक एक सुनियोजित कार्य पद्धति अपनाकर इस समस्या का निराकरण कर सकता हैं।
4. **निष्पक्ष वैज्ञानिक दृष्टिकोण**– इतिहास सत्यान्वेषण के आधार पर विगत की घटनाओं से परिचय का एक विज्ञान हैं। इसमें पूर्वाग्रहों, पक्षपात तथा संकुचित निष्ठाओं का कोई स्थान नहीं हैं, अन्यथा ऐतिहासिक तथ्य कर्पोकल्पित कहानी अथवा प्रचार के रूप में निरर्थक सिद्ध होंगें इतिहास शिक्षण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण निष्पक्षता से तथ्यों की तटस्थ व्याख्या से ही सम्भव हैं विवादास्पद् प्रसंगों की व्याख्या भी इसी निष्पक्षता से की जानी चाहिए। देश की आवश्यकता के अनुकूल राष्ट्रीय भावात्मक एकता में सहायक प्रकरणों पर अधिक बल दिया जाना वांछनीय होगा। इतिहास शिक्षक द्वारा इस वैज्ञानिक एवं राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विषय–वस्तु के प्रस्तुतीकरण की नितान्त आवश्यक हैं, जिससे कि देश में राष्ट्रीय भावना से युक्त भावी नागरिकों का निर्माण हो सके, इतिहास–शिक्षक का यह एक नैतिक दायित्व हैं। अभ्यास एवं विवके द्वारा शिक्षक अपने नैतिक दायित्व का निर्वाह कर सकता हैं।
5. **विद्यालयों में इतिहास–कक्ष एवं उपकरणों का अभाव**– प्रायः अधिकांश विद्यालयों में इतिहास–कक्ष एवं उपयुक्त उपकरणों का अभाव रहता हैं, जिसके कारण शिक्षक को प्रभावी शिक्षण में कठिनाई आती हैं। इस अभाव की पूर्ति हेतु विद्यालयों के उच्चाधिकारियों को चाहिए कि वे आवश्यक धनराशि उपकरणों के क्रय हेतु आवंटित करें। इतिहास–शिक्षक भी इस अभाव की पूर्ति छात्रों द्वारा सस्ती किन्तु ज्ञानार्जन में सहायक मानचित्र, समय रेखा, युद्ध योजना मॉडल आदि सामग्री का निर्माण करा सकता हैं। इतिहास–कक्ष उपलब्ध

न होने पर किसी एक कक्षा–कक्ष को इस कार्य के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। पुस्तकालय में इतिहास की अच्छी पुस्तकों का होना भी विषय के अध्ययन में सहायक होता हैं यदि धनाभाव के कारण अधिक पुस्तकों का क्रय करना सम्भव न हो तो अध्यापक अन्य स्त्रोत से उन्हें उपलब्ध कर उनसे आवश्यक तथ्य संकलित करता रहें। विशेषकर स्त्रोत सन्दर्भ के ग्रन्थों का विद्यालयों में अभाव पाया जाता हैं। जिससे इतिहास शिक्षण की स्त्रोत–सन्दर्भ विधिवत् नहीं हो पाता हैं। अतः कक्षोपयोगी –सन्दर्भो का निजी संग्रह अध्यापक के पास होना चाहिए इतिहास शिक्षण की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने का हर सम्भव प्रयास शिक्षक को करना चाहिए जिससे वास्तविक उद्धेश्यों की पूर्ति कर सकें।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953) ने ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा हैं कि "जो शिक्षक अपने विषय में अभिरूचित तथा उसे उचित परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता हो, उससे सम्पक्र करने के अतिरिक्त अन्य कोई भी वस्तु अधिक प्रेरणास्पद नहीं हो सकती।"

प्रश्न–2 इतिहास कक्ष की आवश्यकता एवं सामग्री पर टिप्पणी कीजिए।

Write a short note on need and requirrites of a history room.

Or

इतिहास शिक्षण के लिए इतिहास कक्ष क्यों आवश्यक हैं? इतिहास कक्ष को वास्तव में इतिहास शिक्षण के लिए उपयुक्त बनवाने के लिए उसमें आप क्या–क्या चीजे रखेंगें?

उत्तर– आधुनिक समय में शिक्षण का कार्य पुस्तकों की व्यवस्था, अध्यापक के व्याख्यान और कक्षा–कक्ष की उपलब्धता तक ही सीमित नहीं रह गया हैं, अपितु कक्षा–कक्ष प्रयोग शालाओं का रूप ले रहे हैं। इतिहास की प्रयोगशाला को हम इतिहास–कक्ष के रूप में जान सकते हे।

- **वी. डी. घाटे के शब्दों में** – " इतिहास–कक्ष वस्तुतः इतिहास की एक प्रयोगशाला हैं, जहॉ विद्यार्थी प्रतिदिन ज्ञानार्जन तथा अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए कार्य करेंगे।
- **श्रीमती ब्रजेश्वरी के शब्दों में**– "इतिहास–कक्ष एक कार्यशाला के रूप में छात्रों को आकर्षित कर प्रमुख उद्धेश्य की पूर्ति करता हैं।

<u>इतिहास–कक्ष की आवश्यकता (Need of History Room)</u>–

इतिहास शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए इतिहास–कक्ष की आवश्यकता होती हैं। इतिहास–शिक्षकों को प्रशिक्षण द्वारा छात्रों के सम्मुख विषय प्रस्तुतीकरण में इतिहास–कक्ष विशेष सहायक होता हैं।

(इतिहास कक्ष जहॉ एक ओर विभिन्न उपकरणों एवं स्त्रोत पुस्तको को सहज सुलभ कर उपयुक्त वातावरण के माध्यम से शिक्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाता हैं, वहॉ दूसरी ओर वह इतिहास का विद्यालय के अन्य विषयों से समन्वय स्थापित करने में भी सहायता प्रदान करता हैं। इतिहास की नवीन धारणा (वैज्ञानिक–दृष्टिकोण पर आधारित) तथा उसकी विकसित एवं विशेष शिक्षण–विधियों ने उसकी आवश्यकता को सबके समक्ष स्पष्ट कर दिया हैं।)

"Every subject which is recognized as descrining of study in a scholl should name a room of its own" - Ghate

इतिहास कक्ष की आवश्यकता को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित तक्र प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

1. इतिहास के विभिन्न उपकरणों जैसे– मॉडल, मानचित्र, चार्ट आदि के रखने हेतु एक निश्चित स्थान की आवश्यकता होती हैं।

2. इतिहास कक्ष छात्रों में इतिहास के प्रति रूचि उत्पन्न करने में सहायक हो।
3. इतिहास शिक्षण के मध्य अनेक ऐसी समस्याएँ आती हैं, जिनका निराकरण करने को अध्यापक को चार्ट, मानचित्र, मॉडल आदि की सहायता लेनी पड़ती हैं।
4. इतिहास शिक्षण में अनेक ऐसे अवसर आते हें। जिनमें अभिनय की आवश्यकता पड़ती हैं अभिनय के लिए इतिहास कक्ष की आवश्यकता होती हैं।
5. इतिहास कक्ष के द्वारा ऐसा वातावरण निर्माण किया जा सकता है, जिससे बालकों में तक्र एवं कल्पना शक्ति का विकास किया जा सकता हैं।
6. छात्रों को चित्र, मानचित्र, मॉडल आदि तैयार करने हेतु भी इतिहास कक्ष अत्यन्त आवश्यक हैं।
7. छात्रों में ऐतिहासिक अभिवृत्ति को विकसित करने में सहायक। प्रो. वी.डी. घाटे ने लिखा हैं– ''मैं चाहता हूँ कि इतिहास के छात्र अपने विषय का आदर करें तथा वे और उनके शिक्षक, उसका गम्भीरता से अध्ययन करें। एक सुसज्जित इतिहास–कक्ष छात्रों में ऐतिहासिक अभिवृत्ति को विकसित करने में सहायक होगा।
8. शिक्षण को रोचक व प्रभावी बनाने में इतिहास–कक्ष सहायक होता हें।
9. इतिहास शिक्षक को प्रत्येक कक्षा में बार–बार मानचित्र, चित्र आदि नही बनाने पड़ते तथा उसके समय एवं श्रम की बचत हो जाती हैं।
10. इतिहास–कक्ष इतिहास शिक्षण को व्यावहारिक वास्तविक तथा जीवन से सम्बद्ध करता हैं जो उसके प्रभावी होने हेतु अत्यन्त आवश्यक हैं।
11. यदि विद्यार्थियों को विषय सम्बन्धी सन्दर्भ ग्रन्थों को पढ़ना हैं तो वे इतिहास कक्ष में उसी समय अध्ययन कर सकते हैं।
12. इतिहास कला होने के साथ–साथ विज्ञान भी हैं, जिस प्रकार अन्य विज्ञानों के लिए प्रयोगशाला की आवश्यकता हैं, जिसमें छात्र स्त्रोत संदर्भों तथा अन्य सामग्री का प्रयोग करके अन्वेषण करते हैं। इस सम्बन्ध में प्रो.वी.डी. घाटे ने लिखा हैं– इतिहास–कक्ष, वस्तुतः इतिहास की एक प्रयोगशाला या कार्यशला हैं जहॉ छात्र प्रतिदिन ज्ञानार्जन तथा अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए कार्य करेंगे।
13. छात्रों में ऐतिहासिक वस्तुओं के संरक्षण की विचारधारा उत्पन्न होती हैं।
14. इतिहास शिक्षक के लिए इतिहास कक्ष की अत्यधिक आवश्यकता हैं। वह उसका एक प्रकार से अपना 'घर' हैं जहॉ बैठकर वह विषय से सम्बन्धित नई–नई बातें सोच सकता हैं एस.के. कोचर ने इतिहास शिक्षक द्वारा उसके स्वयं के कक्ष की सहायता से विषय के प्रति, पर्याप्त उत्साह एवं रूचि जागृत करने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा हैं कि– ''इतिहास–शिक्षक को अपने विषय के प्रति उत्साह विकसित करने तथा उपयुक्त उपकरणों द्वारा विद्यार्थियों में रूचि जागृत करने में उसे अपना एक कक्ष उपलब्ध कराना आवश्यक हैं।''

इतिहास कक्ष की सामग्री तथा उसकी व्यवस्था

(History Room's Equipment and its Arrangement)

– इतिहास कक्ष को उपयोगी बनाने के लिए इतिहास कक्ष की सामग्री तथा उसकी व्यवस्था निम्न प्रकार होनी चाहिए–

1. **इतिहास कक्ष का आकार**– इतिहास के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय भवन निर्माण के समय ही इतिहास कक्ष की योजना बना लेनी चाहिए जिसमें कि बड़ा कक्ष विज्ञान तथा हस्तकला आदि विषयों की भांति तैयार किया जा सके। जिससे इतिहास के उपकरणों को रखने में असुविधा न हो।
2. **इतिहास कक्ष की सामग्री**– इतिहास कक्ष में निम्नलिखित सामग्री होनी आवश्यक हैं।

1) **फर्नीचर**– इतिहास कक्ष में पर्याप्त फर्नीचर शिक्षक तथा छात्रों के लिए होना चाहिए शिक्षक की मेज बड़ी हो तथा उसकी कुर्सी तथा मेज एक स्टेज पर होनी चाहिए जिसमें वह समस्त छात्रों को अनुशासित रख सके तथा मॉडल चित्र आदि का प्रदर्शन सुविधापूर्वक कर सकें।

2) **मेज**– प्रायोगिक कार्य हेतु कक्ष में एक कोने में बड़ी मेज होनी चाहिए।

3. **श्याम–पट्ट**– इतिहास कक्ष में श्यामपट्ट का होना अति आवश्यक हैं। अध्यापक को शिक्षण के समय सबसे ज्यादा श्यामपट्ट की ही पड़ती हैं। इतिहास शिक्षक आवश्यकतानुसार आवश्यक सारांश, चित्र, रेखाचित्र, प्रमुख तिथियॉं आदि श्यामपट्ट पर अंकित कर सकता हैं।

- **प्रक्षेपण सामग्री**– आजकल इतिहास शिक्षण में श्रव्य–दृश्य सामग्री में शिक्षक प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर OHP (Over Head Projector) चलचित्र, चित्र, वीडियो, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग करने लगा हैं और इनको व्यवस्थित करने हेतु कक्ष में पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिए। यदि प्रोजेक्टर नहीं लाया जा सकें तो उसके स्थान पर एपिडायस्कोप को काम में लिया जा सकता हैं। प्रोजेक्टर से प्रदर्शन हेतु एक सफेद पर्दा लगाना आवश्यक होता हैं तथा कमरे में अन्धकार होना चाहिए।
- **अनुरेखन मेज**– इस प्रकार की मेज का प्रबन्ध किया जाना चाहिए क्योंकि ऐतिहासिक मानचित्रों का अनुरेखन अधिकांशतः इतिहास शिक्षण में किया जाता हैं।
- **आलमारियॉं**– इतिहास विषय से सम्बन्धित सामग्री जैसे– साहित्य, स्त्रोत, सन्दर्भ ग्रन्थ, छात्रों द्वारा किये गये कार्य आदि को सम्भालकर रखा जा सकता हैं।
- **पानी की टंकी व तश्तरी**– छात्रों को मॉडल बनाने हेतु तश्तरी की आवश्यकता होती हैं, क्योंकि प्रदर्शन मेज पर मॉडल बनाया नहीं जा सकता।
- **शो–केस**– इतिहास कक्ष में शीशे लगे शो–केस में विभिन्न राजा–महाराजाओं के चित्र, सिक्के, मुहरे, अस्त्र–शस्त्र, चित्र आदि को प्रदर्शित किया जाना चाहिए।
- **भण्डार गृह**– इतिहास कक्ष के समीप एक भण्डार गृह होना चाहिए, क्योंकि सारी सामग्री इतिहास कक्ष में नहीं रखी जा सकती। भण्डार का समुचित उपयोग करते हुए मानचित्र, कपबोर्ड, पुस्तकालय कप बोर्ड, सामान्य कप बोर्ड आदि रखे जा सकते हें। सन्दर्भ ग्रन्थों को रखने हेतु पुस्तकालय कप बोर्ड तथा लेखन सामान, फिल्म स्ट्रिप्स, स्लाइड्स, ट्रान्सपेरेन्सी रखने हेतु सामान्य कप बोर्ड भण्डार गृह में रखा जाना चाहिए। इन सबके अतिरिक्त निम्न व्यवस्था भी इतिहास कक्ष में होनी चाहिए–
    - इतिहास कक्ष में उपयोगी छोटा सा पुस्तकालय होना चाहिए, जिसमें उच्च स्तरीय ऐतिहासिक कृत्तियॉं होनी चाहिए, जिनका उपयोग अध्यापक व छात्र दोनों करें।
    - इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक पत्रिकाऍं भी होनी चाहिए।
    - इतिहास कक्ष में कुछ ऐतिहासिक चित्रों का प्रयोग भी किया जाना चाहिए, इन ऐतिहासिक चित्रों के साथ–साथ भित्ति–चित्र भी लगाए जा सकते हैं।
    - ऐतिहासिक चित्रों को काटकर छात्र एकत्रित करें तथा अपना अलग–अलग एक एलबम तैयार करने को प्रेरित किया जाए।
    - कालक्रम की अनुभूतियों हेतु भी कुछ कार्य किया जाए, इसके लिए वर्तमान व अतीत का ज्ञान कराने हेतु समय रेखा का प्रयोग किया जाना चाहिए। किसी भी काम उत्थान–पतन तथा राजाओं के जीवन चरित्र हेतु समय रेखा बनानी चाहिए। तुलनात्मक समय रेखाओं का प्रयोग भी किया जा सकता हैं।

- इतिहास कक्ष में ग्लोब का होना अत्यन्त आवश्यक हैं। विश्व इतिहास शिक्षण में इसका उपयोग किया जाता हैं।

<u>आवश्यक उपयोग हेतु सुझाव</u>–

- इतिहास कक्ष में जो भी उपकरण व सामग्री रखी जाए, उसकी समुचित देख–रेख की जानी चाहिए।
- इतिहास शिक्षक का शिक्षण सदैव इतिहास–कक्ष में ही करना चाहिए।
- इतिहास कक्ष में चित्र, रेखा–चित्र, समय रेखा आदि को बनाने के लिए छात्रों को प्रेरित किया जाना चाहिए।
- इतिहास में अभिनय आदि की क्रियाएँ भी करायी जानी चाहिए।
- छात्रों को प्रेरित किया जाए कि वे इतिहास कक्ष को प्रभावी बनाने हेतु अधिक से अधिक प्रयत्न करें।
- प्रदर्शन हेतु ट्रान्सपेरेन्सी समय रेखा, रेखाचित्र आदि सामग्री का निर्माण छात्रों द्वारा ही करवाया जाना चाहिए।

प्रश्न–2 इतिहास शिक्षण में पर्यटन के महत्व का वर्णन कीजिए।
Describe importance of excurrion in history teaching.

उत्तर– ऐतिहासिक ज्ञान को अधिक ठोस तथा प्रभावी बनाने के लिए इतिहास शिक्षण में पर्यटन की नितांत आवश्यकता हैं। क्योंकि ऑखों द्वारा देखी गई वस्तुओं का अनुभव किसी पुस्तकीय 'ज्ञान' से अधिक होता हैं शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक ने पर्यटन की महत्ता को स्वीकार किया हैं। रूसो और पेस्टालाजी प्रथम मनोवैज्ञानिक थे जिन्होनें भ्रमण–विधि को महत्व दिया और पुस्तकीय ज्ञान से अधिक क्षेत्रीय कार्य को प्रधानता दी। इतिहास शिक्षण में पर्यटन का महत्व निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट होता हैं–

1. **<u>ज्ञान की पूर्णता</u>**– इतिहास विषय के कुछ प्रकरणों का ज्ञान भ्रमण पद्धति के माध्यम से दिया जाना आवश्यक हैं। प्रत्यक्ष ज्ञान–पुस्तकीय ज्ञान के अपेक्षा अधिक स्थायी होता हैं, कहावत हैं– एक देखना सौ सुने को ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।
2. **<u>कक्षा–शिक्षण को रोचक बनाना</u>**– पर्यटन कक्षा–शिक्षण की नीरसता को समाप्त करने में सहायक होता हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव तथा धारणों को स्थूल बनाने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता हैं। अतीत के अनुभव द्वारा अभिरूचि, सहानुभूति तथा संरक्षण की अभिवृत्ति उत्पन्न होती हैं। शैक्षिक यात्राओं के आयोजन द्वारा बालकों का समाजीकरण सहज होता हैं। अतः पर्यटन कक्षा–शिक्षण की परम्परागत विधियों में परिवर्तन लाकर इतिहास को रोचक एवं बोधगम्य बनवा सकता हैं।
3. **<u>पूर्वजों की उपलब्धियों के लिए प्रेम</u>**– छात्रों में पर्यटन के द्वारा पूर्वजों की उपलब्धियों के प्रति प्रेम एवं गर्व की भावना विकसित की जा सकती हैं। छात्रों को ऐतिहासिक खण्डहरों, प्रसिद्ध स्मारकों, मकबरों, किलो, स्तूपो आदि को दिखाना चाहिए और बताया जाय कि उन लोगों की सभ्यता एवं उन्नति के प्रतिक हैं। इस प्रकार छात्रों को पूर्वजों की उपलब्धियों पर गर्वान्वित होने का अवसर प्राप्त होगा। इसके साथ ही बालकों को उस समय की सभ्यता एवं संस्कृति का भी ज्ञान प्राप्त हो जायेगा।
4. **<u>स्थानीय इतिहास का ज्ञान</u>**– पर्यटन के माध्यम से स्थानीय इतिहास का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हैं। बालक इसके माध्यम से अपने भौतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों का परिचय प्राप्त करने के साथ–साथ उनके पारस्परिक सम्बन्धों को समझने में भी समर्थ होते हैं। बालकों में नेतृत्व–क्षमता विकसित होती हैं।

5. **मनसिक शक्तियों का विकास**– पर्यटन द्वारा छात्रों की निरीक्षण, कल्पना, अन्वेषण, निर्णय आदि शक्तियों का विकास होता हैं। छात्रों में सही दृष्टिकोण और अभिवृत्तियों का विकास होता हैं। छात्र आत्मनिर्भर होकर सीखते है तथा स्वतन्त्रता आती हैं। बालकों में नेतृत्व क्षमता विकसित होती हैं।
6. **ज्ञानात्मक एवं भावात्मक योग्यता का विकास**– इससे ज्ञानात्मक तथा भावात्मक योग्यताओं का विकास होता हैं, छात्रों में निरीक्षण, कल्पना शक्ति, निर्णय आदि क्षमताओं का विकास होता हैं।
7. शैक्षिक–यात्राओं के आयोजन में मानसिक क्रियाओं का अधिकतम उपयोग होता हैं।
8. यात्राओं का आयोजन एवं भ्रमण द्वारा ज्ञानेन्द्रियॉ सक्रिय होती हैं।
9. छात्रों की जिज्ञासा तथा अभिरूचियॉ जागृत होती हैं। तथा इन्हें पूर्णता मिलती हैं।
10. छात्रों में महत्वाकांक्षा का संचरण होता हैं तथा राष्ट्रप्रेम की भावना उत्पन्न होती हैं।
11. साथ रहने, साथ–साथ कार्य करने के परिणामस्वरूप परस्पर, समन्वय, सहयोगादि की भावना बनती हैं।
12. छात्रों में निरीक्षण, अवलोकन आदि द्वारा अभिव्यक्ति की क्षमता बनती हैं तथा आत्मविश्वास आता हैं।
13. बालक समुदाय एवं समाज के करीब आता हैं, इससे बालक का सर्वांगिण विकास होता हैं।
14. छात्रों की सामान्य जानकारी बढ़ती हैं वे प्रसन्नता से परिपूर्ण होते हैं।
15. स्वास्थ्य के लिए लाभदायक वातावरण मिलता हैं, जो विद्यालय के वातावरण में नहीं होता।

प्रश्न– ऐतिहासिक भ्रमण की योजना बनाने में किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
Which considerations are cared for planning a historical exussion?

उत्तर– ऐतिहासिक पर्यटन की योजना बनाने में ध्यान रखने योग्य बातें–

1. इतिहास–शिक्षक को पर्यटन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व स्थानीय वातावरण की ऐतिहासिक सामग्री का पर्यवेक्षण कर लेना चाहिए।
2. यदि किसी सुदूर ऐतिहासिक स्थान को दिखाने के लिए ले जाना हैं तो भी शिक्षक को उस स्थान के विषय मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।
3. स्थान निर्धारित करने के पश्चात् योजना का निर्माण किया जाए और योजना बनाने में निम्नलिखित बातों पर ध्यान अवश्य दिया जाये–
   - **i.** उस स्थान पर किस उद्धेश्य से जा रहे हैं।
   - **ii.** किस मार्ग से उस स्थान पर सुविधापूर्वक पहॅुचा जा सकता हैं। और वह मार्ग कौन–कौनसे शैक्षिक अनुभव प्रदान कर सकता हैं, इसका भी ध्यान रखना चाहिए।
   - **iii.** बालकों को अपने साथ किन–किन वस्तुओं को ले जाना चाहिए।
4. पर्यटन की सफलता के लिए छात्रों का सहयोग लेना परमावश्यक हैं।
5. जिस स्थान को देखने के लिए जाये, वहां की ऐतिहासिक वस्तुओं का ही अवलोकन न किया जाय वरन् वहॉ के निवासियों से भी सम्पक्र स्थापित किया जाय।
6. छात्रों को ऐतिहासिक तथ्यों को नोट करने का आदेश देना चाहिए, जिससे वे बाद में उनका उपयोग कर सके।
7. छात्रों को ऐतिहासिक दुर्ग, मकबरा, स्मारक, मस्ज़िद, स्तूप आदि को दिखाते समय उनके सम्बन्ध में सभी बातों पर प्रकाश डालना चाहिए।
8. यदि पर्यटन स्थान पर रात्रि में रोकना पड़े, तो रात में, दिन भर देखी हुई वस्तुओं के विषय में चर्चा करवा देनी चाहिए।

9. पर्यटन कार्यक्रम के समाप्त होने पर यदि दूसरे मार्ग से वापस आ सके तो अच्छा रहेगा, क्योंकि इससे उनको और अन्य कई बातों का ज्ञान हो जायेगा।

प्रश्न– पाठ्य सहगामी क्रियाओं का शैक्षिक महत्व क्या है? ऐसी पाठ्य सहगामी क्रियाओं की नामावली बताइये, जिन्हें माध्यमिक स्कूलों में संगठित किया जा सकता है।

What is the educational importance of co-curricular acticities? Suggest various types of co-curricular activities that can be organized in a secondary school.

उत्तर– बालक का सर्वांगीण विकास शैक्षणिक क्रियाओं से ही नहीं किया जा सकता, बल्कि इसके लिए विद्यालय में कुछ अन्य क्रियाओं की भी आवश्यकता होगी, जो बालक का सर्वांगीण विकास करने में सहायक हो। अतः इसके लिए विद्यालय में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए। शिक्षा बाल केन्द्रित होने से ऐसी क्रियाओं को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में अपनाया गया तथा अब इन्हें विद्यालयी कार्यक्रम का अभिनय अंग माना जाता हैं।

सुल्तान महियुद्दीन के अनुसार–''ये क्रियाएँ अब अतिरिक्त नहीं समझी जाती, बल्कि अब ये विद्यालय कार्यक्रमों की अभिन्न अंग हैं। आज की शिक्षा प्रक्रिया में पाठ्य सहगामी व पाठ्योत्तर क्रियाओं में कोई अन्तर नहीं रह गया हैं।''

सोरोकीन– ''विद्यार्थी के विभिन्न आचरणों को सन्मार्ग पर ले जाने के लिए सामुदायिक प्रवृत्तियों पर बल दिया हैं, उससे परस्पर दृढ़ स्नेह, सहानुभूति और मुक्त योग की भावना का विकास होता हैं।''

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने कहा हैं– ''पाठ्य कार्य के समान यह भी स्कूल क्रियाओं का अभिन्न अंग हैं और इनके उचित संगठन के लिए उतनी ही सावधानी एवं अन्तदृष्टि की आवश्यकता हैं। यदि इनका उचित संचालन किया जाए तो ये महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों एवं गुणों के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता हैं–

क्रमांक	बौद्धिक व साहित्यिक क्रियाएँ	सॉस्कृतिक क्रियाएँ	कौशल युक्त क्रियाएँ
1.	ऐतिहासिक क्लब का निर्माण	नृत्य नाटिका	ऐतिहासिक खेलों का निर्माण
2..	निबन्ध	नुक्कड़ नाटक	विभिन्न मॉडल्स का निर्माण
3.	आशुभाषण	मूकाभिनय	पोस्टर का निर्माण
4	भाषण	विचित्र वेशभूषा	फोटोग्राफी
5.	वाद–विवाद	गीत/लोकगीत	टिकिट संग्रह करना
6.	कविता पाठ		सिक्के एकत्रित करना
7.	कहानी लेखन		विषयगत पारदर्शिकाओं का निर्माण
8.	शोध–पत्र वाचन		प्रदर्शनियों का आयोजन

9.	समाचार–पत्र प्रकाशन		विभिन्न ऐतिहासिक दिवसों का आयोजन
10.	पत्रिका प्रकाशन		फिल्म प्रदर्शन
11.	प्रश्नोत्तरी		ऐतिहासिक भ्रमण

1. **ऐतिहासिक क्लब का निर्माण**– विद्यालयों में विषयगत समुदाय का निर्माण किया जाता हैं। विषय में सम्बन्धित अनेक समस्याओं के समाधान हेतु तथा सहज व अनौपचारिक वातावरण में सिखाने हेतु इस क्लब का निर्माण किया जाता हैं। ऐतिहासिक क्लब में सैद्धान्तिक की अपेक्षा क्रियात्मक कार्यों पर अधिक बल दिया जाता हैं तथा कौशलात्मक उद्धेश्य की पूर्ति इसी क्लब के माध्यम से की जाती हैं।
2. **निबन्ध**– निबन्ध के माध्यम से बालक अपनी लिखीत अभिव्यक्ति को विकसित करते हैं, क्योंकि अधिकांशतः यह देखा गया हैं कि कई बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति सशक्त नहीं होती, परन्तु उनकी कल्पना व चिन्तन शक्ति उच्चकोटि की होती हैं।
3. **आशुभाषण**– इतिहास विषय पर आशुभाषण का आयोजन कराया जा सकता हें। प्रकरणों में इसमें तत्काल विचार, अभिव्यक्ति का विषय दिया जाता हैं, और विद्यार्थी 3–5 मिनट की अवधि में उस विषय पर अपने विचार रखता हैं, इस प्रकार बालक जब बिना तैयारी के ही विषय से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत करते हैं तो विषय के ज्ञान के साथ अभिव्यक्ति क्षमता का विकास भी किया जाता हैं।
4. **भाषण**– भाषण में पूर्व में ही विषय ज्ञात होता हैं और वक्ता पूर्व निश्चित तैयारी से अपनी अभिव्यक्ति देता हैं। भाषण कला से बालक की लज्जाशील प्रवृत्ति दूर होती हैं तथा विषय ज्ञान के साथ–साथ, सशक्त तथा साहस के साथ अपने विचारों को अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास करता हैं।
5. **वाद–विवाद**– वाद–विाद को कक्षस्तर, विद्यालयी स्तर या अन्य उच्च स्तर पर आयोजित किया जा सकता हैं। प्रत्येक वक्ता चाहे वह पक्ष में बोल रहा हो या विपक्ष में तक्र सहित अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता हें। इसमें छात्रों मं समस्या समाधान शक्ति का विकास होता है तथा छात्र अपने विचारों को तक्रपूर्ण तथा व्यवस्थित ढ़ंग से व्यक्त करना सीखते हैं।
6. **कविता पाठ**– कविता पाठ को कार्यक्रम में भी सम्मिलित कर सकते हैं और प्रतियोगिता के रूप में भी आयोजित कर सकते हैं। कविता देशभक्ति आदि से भी सम्बन्धित हो सकती हैं तथा पुस्तकों में दी गई कविताओं का पाठ भी कराया जा सकता हैं।
7. **कहानी लेखन**– इसके अन्तर्गत प्राचीन ऐतिहासिक विषयों से सम्बन्धित प्रकरणों को कहानी रूप में लिखने को दिया जा सकता हैं या ऐतिहासिक विषयों से सम्बन्धित कहानी का निर्माण करने को कहा जा सकता हैं।
8. **शोध–पत्र वाचन**– इसमें पूर्व में ही विषय बताकर पत्र तैयार करने का अवसर दिया जाता हैं, तथा वाचन करने को कहा जाता हैं।
9. **समाचार पत्र प्रकाशन**– वर्ष में प्राप्त की गई उपलब्धियों का विवरण देने हेतु मासिक, अर्द्धवार्षिक या वार्षिक समाचार पत्र का प्रकाशन किया जा सकता हैं।
10. **पत्रिका का प्रकाशन**– इतिहास विषय से सम्बन्धित पत्रिका का प्रकाशन भी विद्यालयी स्तर पर किया जाना चाहिए।
11. **प्रश्नोत्तरी**– इतिहास से सम्बन्धित विषय–वस्तु की जानकारी देने का सशक्त माध्यम हैं। इसका आयोजन भी दो प्रकार से किया जा सकता हैं– 1. एक समूह में और 2. अनेक समूह में।

12. **नृत्य नाटिका**– नाटक सिर्फ अभिनय व सवांद के माध्यम से किया जाता हैं, जबकि नृत्य नाटिका में संवाद के साथ गीतों का भी समावेश रहता हैं।
13. **नुक्कड़ नाटक**– विषय के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए कई विषयों पर नुक्कड़ नाटक करवाए जा सकते हें, जिससे आम जनता को विषय की जानकारी के साथ उसके प्रति उनका सकारात्मक दृष्टिकोण भी बनाया जा सके।
14. **मूकाभिनय**– किसी भी ऐतिहासिक पात्र का चित्रण मूकाभिनय के माध्यम से किया जा सकता हैं।
15. **विचित्र वेशभूषा**– विचित्र वेशभूषा का अर्थ हैं कि सामान्य से अलग हटकर कोई भी वेश धारण करना जो विचित्र या पृथक नजर आये। इसके अन्तर्गत प्रतियोगी भिन्न–भिन्न वेशभूषा धारण कर या वैसी ही वेशभूषा से उस पात्र की भूमिका का निर्वाह करते हैं।
16. **गीत/लोकगीत**– ये गीत कार्यक्रम व प्रतियोगिता दोनों ही रूप में हो सकते हैं तथा सामूहिक व वैयक्तिक दोनों प्रकार से आयोजित कराया जा सकता हैं।
17. **ऐतिहासिक खेलों का निर्माण**– यह बालकों को विषय–वस्तु स्पष्ट करने में, सरलता से सीखने में तो सहायक हैं ही, साथ ही इसके माध्यम से अवकाश के क्षणों में मनोरंजन व मानसिक व्यायाम भी कराया जा सकता हैं।
18. **मॉडल्स का निर्माण**– जिन बालकों की रचनात्मक प्रवृत्ति होती उसे बढ़ावा देने के लिए मॉडल बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन कराया जा सकता हैं। इसमें छात्र स्वयं करके सीखता हैं, तथा इस निर्माण से उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता हैं।
19. **पोस्टर का निर्माण**– इससे भी छात्रों की रचनात्मक प्रवृत्ति को सशक्त बनवाने के लिए पोस्टर का निर्माण कराया जा सकता हैं। इसमें प्रतियोगिता के विषय को पूर्व में भी बता सकते हैं और प्रतियोगिता स्थल पर भी विषय बताया जा सकता हैं। इससे बालक की कल्पना शक्ति तीव्र होती हैं।
20. **फोटोग्राफी**– फोटोग्राफी में जिस बालक की रूचि हैं उसके द्वारा लिए गए ऐतिहासिक स्थलों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जा सकती हैं तथा प्रतियोगिता द्वारा भी फोटो लेकर उनकों लगवाया जा सकता हैं।
21. **टिकट संग्रह करना**– इसमें सभी बालकों की रूचि नहीं होती, अपितु कुछ ही बालक ऐसे होते हैं जिन्हें भिन्न–भिन्न विषयों से सम्बन्धित टिकट संग्रह करने की रूचि होती हैं। इस रूचि का विकास कर ऐतिहासिक व्यक्तियों से सालों से या इतिहास विषय से सम्बन्धित टिकट संग्रह करने को प्रेरित किया जा सकता हैं।
22. **सिक्के एकत्रित करना**– कई दुर्लभ सिक्के होते हैं। अतः यदि छात्र अत्यधिक दुर्लभ सिक्कों को एकत्र करता हें तो उन सिक्कों को प्रदर्शनी के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता हैं, ताकि अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिल सके।
23. **पारदर्शिकाओं का निर्माण**– पारदर्शिकाओं का निर्माण ऐतिहासिक क्लब के अन्तर्गत भी किया जा सकता हैं। विषय वस्तु प्रतियोगिता स्थल पर भी बताई जा सकती हैं या पूर्व में भी। इससे छात्रों की कौशलात्मक रूचि का विकास होता हैं तथा रेखाचित्र या चित्र के माध्यम से विषय–वस्तु अधिक स्पष्ट की जा सकेगी।
24. **प्रदर्शनियों का आयोजन**– बालकों द्वारा किए गए कौशलात्मक कार्यों से उत्पादित वस्तुओं की प्रदर्शनी का आयोजन किया जा सके तथा अभिभावक व समाज में उनकी प्रतिभा का परिचय भी हो सके।
25. **विभिन्न दिवसों का आयोजन**– महापुरूषों व ऐतिहासिक व्यक्तियों से सम्बन्धित दिवस या जयन्ती का आयोजन किया जा सकता हैं तथा उस दिवस से सम्बन्धित प्रासंगिकता तथा उसकी विशेषता को स्पष्ट किया जा सकता हैं।

26. **फिल्म प्रदर्शन**– इतिहास की प्रमुख घटनाओं से सम्बन्धित या प्रमुख ऐतिहासिक फिल्मों का प्रदर्शन वी.सी. आर या वी.सी.डी के माध्यम से प्रदर्शन किया जाना चाहिए।
27. **ऐतिहासिक भ्रमण**– ऐतिहासिक स्थल का वास्तविक परिचय कराने हेतु उस स्थल की यात्रा का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे बालक की ज्ञान वृद्धि के साथ–साथ विषय के प्रति रूचि भी बढ़ती हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का शैक्षिक महत्व– पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व निम्न बिन्दुओं में बताया जा सकता हैं–

1. **व्यक्तित्व का सर्वागीण एवं सन्तुलित विकास**– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ बालक का सर्वागीण विकास करने में सहायक होती हें। जिससे बालक का सांवेगिक, नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक आदि का विकास हो सके।
2. **मूल प्रवृत्तियों के शोधन में सहायक**– प्रत्येक बालक कुछ मूल प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता हैं और जैसे–जैसे बालक का विकास होता जाता हैं, ये मूल प्रवृत्तियां भी विकसित होती जाती हें। यदि इन मूल प्रवृत्तियों को सही स्थान पर काम में ले लिया जाए तो ये लाभदायक सिद्ध हो सकती हैं, अन्यथा ये प्राकृतिक रूप से समाज के लिए हानिकारक हो सकती हैं। अतः इन मूल प्रवृत्तियों का शोधन पाठ्य सहगामी क्रियाओं से आसानी किया जा सकता हैं।
3. **सैद्धान्तिक के साथ व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना**– जिस ज्ञान को हम छात्रों को पुस्तकों के माध्यम से प्रदान करते हें उनका व्यावहारिक रूप उन्हें इन क्रियाओं के माध्यम से प्राप्त हो जाता हैं। भ्रमण, पिकनिक, समाज व्यावहारिक सेवा शिविर आदि के माध्यम से बालक को व्यावहरिक ज्ञान प्राप्त होता हैं।
4. **अनुशासक बनाए रखने में सहायक**– मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि बालकों में कुछ अतिशय शक्ति होती हें, ये यदि इस अतिशय शक्ति को सृजनात्मक कार्यों में लगा दिया जाए तो वह स्वयं अनुशासनहीन क्रियाओं को नहीं कर पायेगा।
5. **नैतिक गुणों का विकास करने में सहायक**– इन क्रियाओं द्वारा बालकों में सहयोग, सहानुभूति, धैर्य, आज्ञापालन, सत्यता आदि नैतिक गुणों का विकास सहज रूप से लिया जा सकता हैं। ये गुण बालक के व्यक्तित्व विकास में सहायक हैं तथा उसमें जीवन मूल्यों का विकास करते हैं।
6. **प्रजातान्त्रिक गुणों का विकास**– इन क्रियाओं के माध्यम से नेतृत्व, दलीय, भिन्नता, उत्तरदायित्व की भावना आदि गुणों का विकास किया जा सकता हैं। वे भावी नवागरिक बनने के सभी गुणों का विकास करते हैं।
7. **अवकाश में समय का सदुपयोग**– पाठ्य साहगामी क्रियाओं से बालक अपनी व्यक्तित्व रूचियों को विकसित कर लेता हैं तथा इनका उपयोग वह अवकाश के क्षणों में करता हैं। सिक्के एकत्रित करना, टिकट संग्रह करना, बागवानी, फोटोग्राफी, चित्रकारी आदि ऐसी रूचियॉ हैं, जिनका उपयोग वह अवकाश के क्षणों में सहजता से कर सकता हैं।

Unit 5

Evaluation

प्रश्न–1 अपेक्षाकृत कम वैद्य एवं विश्सनीय होते है–

(अ) निबन्धात्मक परीक्षण (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षण

(स) निदानात्मक परीक्षण (द) उपलब्धि परीक्षण (अ)

प्रश्न–2 एक वस्तुनिष्ठ प्रश्न की विशेषता है–

(अ) रटने पर अधिक बल (ब) भाषा की प्रभावकता

(स) स्मृति की जॉच (द) परीक्षक का व्यक्तिगत पक्षपात न होना (द)

प्रश्न–3 मूल्यांकन सम्बन्धी ब्लूक का चिन्तन है–

(अ) शिक्षक केन्द्रित (ब) बाल केन्द्रित

(स) विषय केन्द्रित (द) उद्धेश्य केन्द्रित (द)

प्रश्न–4 मूल्यांकन की प्रविधियों को बॉटा गया है–

(अ) एक प्रकार (ब) दो प्रकार

(स) तीन प्रकार (द) चार प्रकार (ब)

प्रश्न–5 ''मूल्यांकन हमें यह बताता है कि बालक ने किस सीमा तक किन उद्धेश्यों को प्राप्त किया है।''

(अ) डॉडेकर (ब) एम.पी. मोफात

(स) जेरोलिमेक (द) ई.वी. बेस्ले (अ)

प्रश्न–6 हरबर्ट की प्रणाली है–

(अ) त्रि–पदीय (ब) द्वि–पदीय

(स) पंच–पदीय (द) अष्ट–पदीय (स)

प्रश्न–7 पाठ योजना का प्रारूप शैक्षिक अनुदेशन की रूपरेखा पर आधारित है, इसके कितने पक्ष है–

(अ) दो पक्ष (ब) चार पक्ष

(स) तीन पक्ष (द) पॉच पक्ष (स)

प्रश्न–8 अभ्यास का नियम दिया था–

(अ) थार्नडाइक (ब) मोफात

(स) पावलाव (द) डेविस (अ)

प्रश्न–9 प्रश्नोत्तर विधि के जनक है–

(अ)	मॉरीसन	(ब)	सुकरात	
(स)	अरस्तू	(द)	डेविड	(ब)

1. **इतिहास शिक्षण में सामुदायिक स्त्रोतों का उपयोग करने की विधियॉं बताइये।**
Describe the method for use of community resources in history teaching?

उत्तर– अपने वातावरण का ज्ञान बालक स्थानीय समुदाय में रहता हैं। जहॉं वह जीवनयापन का प्रथम पढ़ता हैं। समुदाय का यह चित्र बालक के मस्तिष्क में समय के विकसित होता चला जाता हैं। नागरिकता का ज्ञान इसी विकसित क्षेत्र का अध्ययन करता हें। अपने समुदाय का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् ही बालक उस ज्ञान के आधर पर अन्य समुदाय में व्यवस्थित होना सीखता हैं। जितना अधिक और सुखद बालक को अपने समुदाय का ज्ञान होगा, उतना ही अच्छा ज्ञान उसे अन्य समुदाय का होगा।

सामुदायिक साधन से तात्पर्य समुदायके जीवन से सम्बन्धित सभी तत्वों से हैं वास्तव में ये सभी तत्व पाठ्यक्रम के अन्य पक्षों से भी सम्बन्धित हो सकते हैं, क्योंकि इतिहासको प्रभावित करने वाले वे तत्व हैं, जो मानव सम्बन्धों की व्याख्या करते हैं। ये तत्व भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सॉस्कृतिक आदि होते हैं।

सामुदायिक स्त्रोतों का उपयोग करने की विधियॉं (Methods for use of community resources)– सामुदायिक स्त्रोतों का उपयोग करने की निम्नलिखित दो विधियॉं प्रचलित हैं–

1. **विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाना (Taking the school nearer to the community)–**
2. **समुदाय को विद्यालय के निकट ले जाना (Taking the school nearer to the community)–**

1. **विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाना (Taking the school nearer to the community)–**
अध्यापक विद्यालय को सामुदायिक जीवन का केन्द्र बनाने के लिए तथा विद्यालय को समुदाय के निकट ले जाने के लिए निम्नलिखित प्रयास करता हैं–

i. **समाज सेवा कार्यक्रम (Social Service Programme)**– विद्यालय में अनेक प्रकार की समाज–सेवा क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता हें।

ii. **साक्षात्कार (Interviews)**– प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति के लिए साक्षात्कार आधार का कार्य करते है। बच्चे समुदाय के विभिन्न लोगों के साक्षात्कार करके विभिन्न प्रकार की सूचनाऍं प्रापत कर सकते हैं। साथ ही समुदाय के बहुत लोग उनको प्रकाशित साहित्य, श्रृव्य–दृश्य सामग्री प्रदान करके महत्वपूर्ण सूचनाऍं प्रदान कर सकते हैं।

iii. **क्षेत्र–पर्यटन (Field Trips)**– क्षेत्रीय पर्यटनों के माध्यम से छात्रों को समुदाय में ले जाया जा सकता हैं। पर्यटन का उद्धेश्य मन–बदलाव के लिए कक्षा से बाहर लाना नहीं होना चाहिए, वरन् विषय के स्पष्टीकरण या समस्या का समाधान खोजना होना चाहिए। पर्यटनों के माध्यम से छात्र स्थानीय स्थितियों का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करने में समर्थ होते हैं।

iv. **समुदाय सेवा का आयोजन (Arrangement of Community)**– समुदाय सेवा प्रोजेक्ट्स द्वारा विद्यार्थी समुदाय की सेवा करते समय अनेक नवीन अनुभव प्राप्त करते हैं, तो ये और भी स्थायी

होते हैं। इससे विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास होता हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना जो कि देश के सभी महाविद्यालयों में अपना गई है। सेवा भावना का विकास करने के लिए उत्तम रास्ता हैं। पाठशालाओं में भी इसी प्रकार के कार्य प्रारम्भ किये जा सकते हैं। जैसे–विद्यालय फुलवाड़ी की देखभाल। इसी प्रकार विद्यालय के बाहर भी विद्यार्थी कुछ प्रोजेक्ट्स ले सकते हैं। जिससे एक तो विद्यार्थी को स्कूल की चारदीवारी से बाहर समुदाय के सदस्यों से मिलने का अवसर मिल सकेगा और मनोरंजन के अतिरिक्त वे वास्तविक शिक्षा भी ग्रहण करेंगे। विद्यालय समुदाय में कुछ इस प्रकार के प्रोजेक्ट्स ली सकते हैं। जैसे– वृक्षारोपण करना, प्रौढ़ शिक्षा, कुओं, परिवार कल्याण का प्रचार।

v. **सामाजिक सर्वेक्षण क्लबों का संगठन**– के.जी. सैयद के अनुसार– ''अध्यापक को विद्यालय में सामाजिक सर्वेक्षण क्लब संगठित करने चाहिए, जो अपने आस–पास के सामुदायिक जीवन की कुछ तात्कालिक आवश्यकताओं तथा समस्याओं के बारे मे छानबीन करने का काम करे।

उदाहरणार्थ– सड़कों की दशा, रोग फैलने के कारण।

उपर्युक्त उपायों के माध्यम से विद्यालय समुदाय के पास और समुदाय विद्यालय के निकट आ सकता हैं।

2. **समुदाय को विद्यालय के निकट ले जाना**– इस विधि के अन्तर्गत समुदाय के मानवीय एवं प्राकृतिक स्त्रोतों को कक्षा–कक्ष लाकर विषय वस्तु का स्पष्टीकरण अध्यापक द्वारा किया जाता हैं, इसके अग्रलिखित प्रकार हैं–

i. **मेले एवं पर्व**– मेलों में जाकर बालकों को सामाजिक उत्तरदायित्व के कार्यों के संचालन का महत्व बताया जा सकता हैं और समाज सेवा के व्यावहारिक अनुभव देते हुए अनेक लाभों को प्रकट किया जा सकता हैं। इसी प्रकार सॉस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पर्वों पर अनेक आयोजन स्थलों पर ले जाकर बालकों को तत्सम्बन्धी इतिहास सॅस्कारों, सॅस्कृति, परम्परा आदि की जानकारी दी जा सकती हैं। ये मेले व उत्सव निम्नलिखित प्रकार के होते हैं–

अ. **शैक्षिक समारोह**

ब. **राष्ट्रीय समारोह**

स. **धार्मिक उत्सव**

द. **विद्यालय उत्सव**

ii. **अनुरंजनात्मक सामुदायिक प्रवृत्तियॉ**– कुछ अवसरों पर सामाजिक जीवन में इस प्रकार की सामुदायिक विभिन्न प्रवृत्तियों का आयोजन होता हें, जिनमें शिक्षार्थियों को सम्भागी बनाकर उन्हें सामाजिक व्यवहारिक वृत्तियों को अपनाने की सहज प्रेरणा दी जा सकती हैं। समाज के अधिकांश लोग 'प्रदर्शनी' एवं नाट्य देखने के लिए उत्सुक होते हैं। यदि विद्यालयों में प्रदर्शनी एवं नवाटकों का आयोजन किया जाए तो बालकों का मनोरंजन होगा, उनकी अभिरूचियॉ विकसित होंगी। साथ ही अभिभावकों को विद्यालय को समझने में सहायता मिलेगी।

iii. **पंचायत, नगरपालिका, डाकघर और प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र**– पंचायत नगरपालिका, डाक–घर प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र आदि में ले जाकर कार्य प्रणाली, व्यवस्था एवं सुविधा आदि सम्बन्धित जानकारी स्पष्ट और प्रभावोस्पादक परिस्थितियों में करायी जा सकती हैं।

iv. **विशिष्ट व्यक्तियों की वार्त्ताऍं**– सामुदायिक शिक्षण स्त्रोतों में समाज के विशिष्ट व्यक्तियों की सामाजिक तथ्यों पर आधारित वार्त्ताओं के आयोजन का भी प्रमुख स्थान हैं। विशिष्ट व्यक्तियों को आमन्त्रित कर इतिहासविषय के किसी व्यावहारिक पक्ष पर वार्ताऍं आयोजित कर विद्यार्थियों के अनुभवों को सामुदायिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के बारे में समृद्ध किया जा सकता हैं। छात्रों को सामुदायिक उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार किया जा सकता हैं।

v. **चिड़ियाघर और संग्रहालय**– चिड़ियाघर में ले जाकर विभिन्न औद्योगिक प्रदेशों के पर्यावरण और उसके प्राणियों पर पड़ने वाले प्रभावों का बड़ा रूचिकर परिस्थितियों में ज्ञान कराया जा सकता हैं। संग्रहालय में ले जाकर अपने राज्य की इतिहास समबन्धी बातों एवं लोक–जीवन तथा सॉस्कृतिक जीवन के विभिन्न पक्षों के बारे में बताया जा सकता हैं।

vi. **सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचलनालय**– विद्यालय शिक्षा की दृष्टि से सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालय का सामुदायिक शिक्षण स्त्रोत के रूप में उपयोग किया जाना यथेष्ट हें यथा– सामयिक घटनाओं, एवं पारस्परिक मेल–जोल आदि वृत्तियों का विकास।

vii. **रेडक्रॉस, स्काउट एवं गाइड्स**– स्कूल में रेडक्रॉस स्काउट एवं गाइड्स की व्यवस्था होती हें। यदि ये संगठन समुदाय द्वारा मनाए जाने वाले कार्यक्रम में भाग ली तो समुदाय और विद्यालय के सम्बनध मधुर बनेंगें।

viii. **अभिभावक शिक्षक संघ**– विद्यालयों को सामुदायिक जीवन का केन्द्र बनाने हेतु विद्यालय में अभिभावक शिक्षक संघ स्थापित किए जा सकते हें। यह समुदाय के साधन के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अतः स्पष्ट हें कि विद्यालय एवं समुदाय के आपसी सहयोग से ही समुदाय और विद्यालय का अस्तित्व सुरक्षित हैं, इसके लिए अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

2. इतिहास शिक्षण में सहायक सामग्री का अर्थ एवं इसकी आवश्यकता एवं महत्व को स्पष्ट कीजिये।
Describe the meaning of History Teaching Aid and its need importance.

उत्तर– सहायक सामग्री अनुभव प्रदान करती हैं, साथ ही शब्द एवं वस्तु में सम्बन्ध स्थापित करती हैं। यह छात्र के समय में बचत करती हैं सरल एवं विश्वसनीय सूचना प्रदान करती हैं, सौन्दर्यात्मक ज्ञान का विकास एवं अभिवृद्धि करती हैं, मनमोहक मनवोरंजन प्रदान करती हें। जटिल प्रद्तों को सरल दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, कल्पना को उत्तेजित करती हें। तथा छात्रों की निरीक्षण–शक्ति का विकास करती है।

विनिंग एण्ड विनिंग– ''विभिन्न प्रकार की दृश्य युक्तियॉं अमूर्त को मूर्त बनाने में हैं तथा अध्ययन में रूचि जगाने में प्रयुक्त की जा सकती हैं, जिसके बिना अध्ययन नीरस तथा अवास्तविक होगा।''

सहायक सामग्री की आवश्यकता (Need of Teaching Aids) –

शिक्षण प्रक्रिया में शैक्षिक साधनों की आवश्यकता निम्न कारणों से हैं–

1. इनसे कक्षा समय की बचत होती हैं।
2. इनसे व्यक्तिगत विभिन्नताओं की सन्तुष्टि होती हैं।
3. इसकी सहायता से अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप प्रदान किया जा सकता हैं।
4. छात्रों के सीखने की गति में भी तीव्र रूप से वृद्धि हो जाती हैं।
5. इनकी सहायता से छात्र ज्ञान के सैद्धान्तिक पक्ष से ही नहीं, वरन् व्यावहारिक पक्ष से भी अवगतत हो जाते हैं।
6. सहायक ज्ञान के माध्यम से उत्तम शिक्षण प्रदान किया जा सकता हैं।
7. इनकी सहायता से शैक्षिक क्रियाओं को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता हैं।
8. इनकी सहायता से कक्षा में छात्रों के सीखने में एकरूपता आ जाती हैं।
9. इनकी सहायता से छात्र रूचिपूर्वक एवं उत्साहपूर्वक सीखते हैं।
10. इनसे छात्रों की कल्पना–शक्ति का विकास किया जा सकता हैं।
11. छात्र सीखी हुई बातों को देर तक स्मरण रख सकते हैं।

सहायक सामग्री का महत्व–

सहायक सामग्री के महत्व का विवेचन निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं–

1. सहायक सामग्री के प्रयोग के द्वारा जटिल व अरूचिकर विषय को रोचक सरल व स्पष्ट बनाया जा सकता हैं।
2. इनकी सहायता से शिक्षक एक साथ अनेक छात्रों की समस्याओं का समाधान कर सकता हैं।
3. इनकी सहायता से छात्रों के ध्यान को एक बिन्दु पर केन्द्रित किया जा सकता हैं।
4. इनके द्वारा छोटी आयु के बालकों के ज्ञान को उन्नत बनाया जा सकता हैं।
5. इनके माध्यम से छात्रों की शब्दावली में उन्नति होती हैं।
6. ये छात्रों की जिज्ञासा में वृद्धि करती हैं, जिससे सीखने में प्रोत्साहन मिलता हैं।
7. इनके प्रयोग से छात्रों को विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को करने के अवसर प्राप्त होते हैं, इससे वे कठिन बातों को भी सरलतापूर्वक सीख लेते हैं।
8. इसके द्वारा छात्रों में प्रत्यक्ष अनुभव का प्रतिनिधित्व सम्भव होता है।
9. इनकी सहायता से प्राप्त ज्ञान स्थायी व निश्चित बन जाता हैं।
10. इनकी सहायता से छात्र ज्ञान को स्पष्ट रूप में ग्रहण करते हैं।
11. विशेष रूप से मन्द बुद्धि बालकों को इनके माध्यम से सीखने में बहुत सहायता मिलती हैं।
12. इनके प्रयोग से विषय विशेषज्ञों की कमी भी पूरी हो सकती हैं, जैसे– दूरदर्शन पर सामाजिक अध्ययन व विज्ञान के पाठों का प्रदर्शन आदि।

3. इतिहास शिक्षण में सहायक सामग्री वर्गीकरण बताइये।
Explain the classification teaching Aid of History Teaching.

उत्तर– इतिहासशिक्षण में सहायक सामग्री को चार भागों में बॉटा गया हैं–
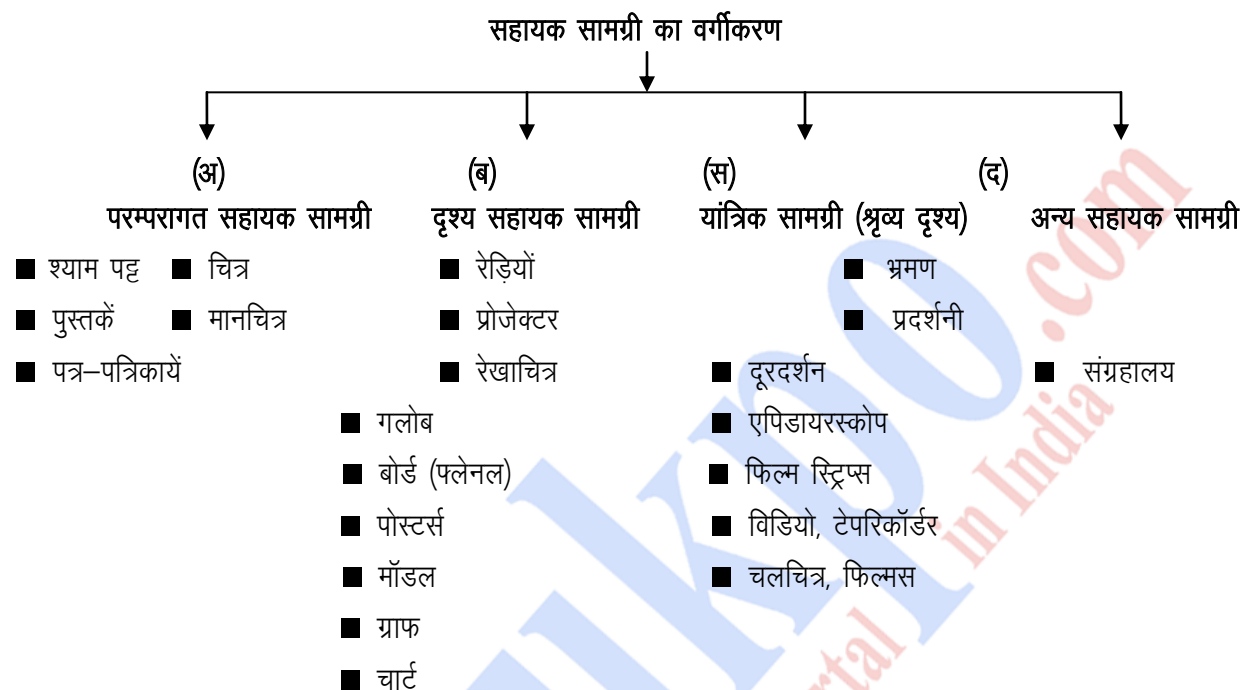
(अ) **परम्परागत सहायक सामग्री–**

श्यामपट्ट– श्यामपट्ट का प्रयोग विषय वस्तु को स्पष्ट सरल एवं स्थायी बनाने में बहुत सहायक होता हैं। बालकों की सुविधा का साधन बनता हैं, ठीक उसी सप्रकार एक शिक्ष की भी सहायता करता हैं।

श्यामट्ट की उपयोगिता–

1. प्रभावी शिक्षण में जितना अधिक ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग किया जाता हैं, ज्ञान उतना ही अधिक सुदृढ़, प्रभावी व स्थायी हो जाता हैं।
2. शिक्षक विशेष मौखिक शिक्षण के दोषों से बच सकता हैं व श्यामपट्ट का प्रयोग करने से शिक्षक प्रभावी शिक्षण कर पाता हैं।
3. विषय सामग्री की व्यवस्थित करने में सहायक होता हैं।
4. अध्यापक प्रक्रिया में सहायक सामग्री चार्ट, चित्र, मॉडल आदि में समय धन एवं श्रम अधिक लगता हैं, जबकि श्यामपट्ट सस्ता माध्यम हैं।
5. गणित, विज्ञान, चित्रकला जैसे विषयों का अभ्यागत श्यामपट्ट पर आसानी से किया जा सकता हैं।

श्यामट्ट का प्रयोग–

1. श्यामपट्ट लेख सुन्दर, आकर्षक, स्पष्ट होना चाहिए।
2. श्यामपट्ट पर शिक्षक को सीधी पॅक्ति में लिखने का प्रयास करना चाहिए।
3. विशिष्ट बिन्दुओं एवंत थ्यों को रेखांकित करना चाहिए।

4. चित्र, रेखाचित्र, मानचित्र स्पष्ट रूप से बनाए जाए।
5. श्यामपट्ट का विकास हमेशा बालकों के सक्रिय सहयोग से किया जाना चाहिए।
6. श्यामपट्ट पर ामग्री व्यवस्थित, क्रमबद्ध होनी चाहिए।
7. श्यामपट्ट साफ समतल होना चाहिए।
8. श्यामपट्ट पर बोलकर लिखे व बीच–बीच में छात्रों पर भी नजर डाले।

पुस्तके– विद्यालय में हम बालक के सर्वांगिण विकास को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करते हैं। किन्तु वास्तव में सर्वांगिण विकास तभी सम्भव हैं, जब बालक का मानसिक विकास उचित प्रकार से हो रहा हैं।

पुस्तकों की उपयोगिता–

- यह छात्रों को अध्ययन की दिशा में सक्रिय एवं प्रेरित करती हैं।
- पुस्तकें ज्ञान का संचय एक स्थान पर करने में सहायक होती हैं।
- पुस्तके बालकों में रचनात्मकता, क्रियात्मकता, सृजनात्मक सोच का विकास करती हैं।

पत्र–पत्रिकायें– इतिहासशिक्षण में पत्र–पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान हैं। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से शिक्षक एवं छात्र तत्कालीन परिवर्तनों से अवगत होकर इतिहासके उद्धेश्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

(ब) **दृश्य सहायक सामग्री/चित्र (Pictures)**– दृश्य सहायक सामग्री का अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष चित्र हैं, चित्र की सहायता से शिक्षक विषय वस्तु को सरल एवं रोचक बनाकर बालकों के सामने प्रस्तुत करता हैं। चित्रों से आकर्षित होकर बालक की विषय वस्तु के प्रति रूचि जागृत करने में भी सुविधा रहती हैं। चित्रों के द्वारा ज्ञान स्थायी एवं प्रभावी होता हैं।

मानचित्र (Maps)– इतिहासशिक्षण में मानचित्र का उपयोग राज्यों की स्थिति, क्षेत्रफल, उपज, जलवायु, जनसंख्या आदि का प्रदर्शन करने के लिए किया जाता हैं। मानचित्र के माध्यम से जटिल सम्प्रत्यय को सरल बनाकर छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने में सुविधा रहती हैं। शिक्षक द्वारा निर्मित मानचित्र बालकों पर ज्यादा प्रभाव डालते हैं। बालकों के दिशा सम्बन्धी ज्ञान को स्पष्ट करने में सहायक होता हैं। स्थानों की दूरी व स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती हैं। मानचित्र की सहायता से भौगोलिक स्थिति, जलवायु का ज्ञान देने में आसानी रहती हैं।

रेखाचित्र (Diagrams)– विषय में किसी भी जटिल विषय–वस्तु को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने हेतु अध्यापक द्वारा शिक्षण के दौरान रेखाओं व शब्द संकेतों केक आधार पर अभिव्यक्ति कीक जाती हैं। उसे रेखाचित्र कहते हैं। पाठ्यक्रम में बिन्दुओं की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता हैं।

ग्लोब (Globe)– शिक्षण में ग्लोब का महत्व विश्व से सम्बन्धित सभी सूचना देने में सहायक होता हैं। इसके द्वारा पृथ्वी पर ज्ञान, पृथ्वी पर के मध्य सम्बन्ध, दिन–रात बनने की प्रक्रिया, सूर्य–ग्रहण से संबद्ध बिन्दुओं को समझाने में सहायता मिलती हैं।

फ्लैनल बोर्ड (Flennal Board)– इतिहासशिक्षण के दौरान अध्यापक को सहायक सामग्री को प्रदर्शित करने में सहायक होता हैं। यह बोर्ड रंगीन फ्लैनल कपड़े पर तैयार किया जाता हैं। इससे समय एवं श्रम की बचत होती हैं।

पोस्टर्स (Posters)– सामान्य चित्र एवं चार्ट की तुलना में पोस्टर्स मनोवैज्ञानिक एवं संवेगात्मक प्रभाव संकेतात्मक एवं अप्रत्यक्ष रूप से विषय वस्तु को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता हैं। जैसे– यातायात के नियमों को पोस्टर्स के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाना आसान होता हैं।

प्रतिमान (Model)– इतिहासशिक्षण में छात्रों को प्रत्येक सामग्री का मूल रूप से अवलोकन करा पाना असंभव होता हैं। ऐसे में शिक्षक प्रतिमान (मॉडल) का उपयोग करता हैं। प्रतिमान से आशय– किसी भी वस्तु का प्रतिरूप। प्रतिरूप के माध्यम से तथ्यों, विचारों एवं भावों को सुगमतापूर्वक प्रदर्शित किया जा सकता हैं।

ग्राफ (Graph)– शिक्षण में संख्यात्मक ऑकड़ों को प्रस्तुत करने के लिए शिक्षक ग्राफों का उपयोग करता हैं। ग्राफ के माध्यम से विकास दर, मृत्यु दर, जनम दर आदि का अध्ययन, तुलना करवाना आसान हो जाता हैं।

चार्ट (Chart)– चार्ट की सहायता से शिक्षक का तथ्यों को स्पष्ट वर्गीकरण व्याख्या करने में सहायक होती हैं।

(स) **यांत्रिक सामग्री (श्रृव्य दृश्य)**– श्रृव्य सामग्री, रेड़ियों, टेप रिकॉर्ड तथा अध्ययन यंत्र।

रेड़ियों– रेड़ियों के माध्यम से देश–विदेश में घटित घटनाओं के बारे में सामान्य जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति नवीन सोच एवं जागरूकता विकसित होती हैं।

टेप रिकॉर्डर– टेप रिकॉर्डर एक ऐसा माध्यम हैं, जिसका उपयोग अपनी आवश्यकतानुसार व सुविधानुसार कक्षा शिक्षण में कर सकता हैं। टेप रिकॉर्ड में रिकॉर्डिंग कर आवश्यकतानुसार उस विषय सामग्री का उपयोग शिक्षण में कर सकता हैं।

अध्ययन यंत्र– इतिहासशिक्षण में अध्यापन यंत्र एक ऐसा यांत्रिक या विद्युत–शक्ति के संचालित यंत्र हैं, जिसका संचालन छात्र के स्वयं के द्वारा किया जाता हैं। इसके लिए उसे विषय सामग्री व्यवस्थत, ताक्रिक क्रम में दी जाती हैं।

दृश्य सामग्री– दृश्य सामग्री से आधय जिसमें सुनने की अपेक्षा केवल देखने के क्रिया ही की जाती हैं। इसमें छात्रों द्वारा ऑखों से विषय–वस्तु देख लेने पर यह सामग्री मानसिक शक्तियों को प्रभावित करती हें। इसमें तीन साधनों का उपयोग करते हैं– **अ**. प्रोजेक्टरए **ब**. एपिडायस्कॉप, **और** **स**. फिल्म स्ट्रिप्स।

दृश्य–श्रृव्य सामग्री– दृश्य–श्रृव्य सामग्री के उपयोग के रूप में कार्य करने से हें। चलचित्रों, दूरदर्शनों, विडियो आदि होते हैं। इसके अन्तर्गत फिल्मस, दूरदर्शन, विडियो सहायक सामग्री पाठ को सरल व मनोरंजक ढ़ंग से बालकों को समक्ष रखने वाली होनी चाहिए। शिक्षण में आवश्यकतानुसार ही इसे प्रयुक्त किया जाना चाहिए। अनावश्यक रूप से सामग्री का प्रदर्शन नहीं किया जाना चाहिए।

4. साक्षात्कार का अर्थ बताते हुए इसके उद्धेश्य बताइये?
Explain the meaning of interview and its objectives?

उत्तर– साक्षात्कार अंग्रेजी शब्द (Interview) का रूपान्तर है। यह शब्द अंग्रेजी के दो शब्दों (Inter) तथा (view) से मिलकर बना हैं, जिनका क्रमशः हिन्दी में अर्थ हैं– 'आन्तरिक' व 'अवलोकन'। इस प्रकार Interview का शाब्दिक तात्पर्य हुआ आन्तरिक अवलोकन करना।

परिभाषाऐं– एम.एन. बसु– ''एक साक्षात्कार जो कुछ विषयों को लेकर व्यक्तियों के आमने–सामने का मिलन कहा जा सकता हैं।''

साक्षात्कार के उ द्धेश्य– साक्षात्कार के प्रमुख्य उद्धेश्य निम्नलिखित हैं–

1. **प्रत्यक्ष सम्पक्र कर सूचना प्राप्त करना**– साक्षात्कार का प्रमुख उद्धेश्य साक्षात्कारकर्त्ता एवं साक्षात्कारदाता का प्रत्यक्ष सम्पक्र स्थापित करना हैं, जिसके आधार पर साक्षात्कारकर्त्ता स्पष्ट एवं खुले रूप में बात करता हैं तथा साक्षात्कारदाता के आन्तरिक भाव, मनोवृतित्तयों, अभिवृत्तियों तथा इच्छाओं की कजानकारी प्राप्त करता हैं।
2. **व्यक्तिगत सूचना प्राप्त करना**– साक्षात्कार द्वारा व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित व्यक्तिगत एवं गुप्त सूचनाओं को एकत्रित किया जा सकता हैं। उदाहरणार्थ– जब हम साक्षात्कार से किसी व्यक्ति के आवेगों, मनोवृत्तियों एवं आदतों की जानकारी प्राप्त करते हें तो हम उसके भावी जीवन की सफलता और विफलता का सरलता से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।
3. **निरीक्षण द्वारा अन्य उपयोगी सूचना प्राप्त करना**– साक्षात्कार से साक्षात्कारदाता के घर, वातावरण, परिस्थिति, पास–पड़ौस, सम्बन्धियों, मित्रों आदि सभी के बारे में जानकारी मिल जाती हैं। इस प्रकार साक्षात्कारकर्त्ता को साक्षात्कारदाता का निरीक्षण एवं साक्षात्कार दोनों करने का अवसर प्राप्त हो जाता हैं।

5. साक्षात्कार के प्रकारों को स्पष्ट कीजिए?
Explain the types of interview?

उत्तर– साक्षात्कार के प्रकारों का वर्गीकरण निम्नांकित प्रकार से किया जा सकता हैं–

1. **कार्यों के आधार पर वर्गीकरण (Classification according to functions)**–
2. **औपचारिकता के आधार पर वर्गीकरण (Classification according to formality)**–
3. **सूचनाओं के आधार पर वर्गीकरण (Classification on the basis of number of informations)**–
4. **अध्ययन पद्धति के आधार पर वर्गीकरण (Classification according to methodology)**–

1. **कार्यों के आधार पर वर्गीकरण**–
   (क) **कारक–परीक्षक साक्षात्कार**– जब साक्षात्कारकर्त्ता को किसी गम्भीर घटना या समस्या के कारणों को खोजना हो, तो उसे कारण परीक्षक कहते हैं।
   (ख) **उपचार साक्षात्कार**– साक्षात्कारकर्त्ता समस्या के कारणों का पता लगाने के बाद उन्हें हल करने के लिए साक्षात्कार का आयोजन करता हैं।
   (ग) **अनुसंधान साक्षात्कार**– गहन तथ्यों का पता लगाने के लिए जो साक्षात्कार आयोजित किए जाते हैं, उन्हें अनुसंधान साक्षात्कार कहते हैं।
2. **औपचारिकता के आधार पर वर्गीकरण (Classification according to formality)**–
   (क) **औपचारिक साक्षात्कार**– इस साक्षात्कार को नियोजित या निर्देशित साक्षात्कार कहा जाता हैं। इससे अनुसूची विधि का प्रयोग किया जाता हैं। इसमें साक्षात्कारकर्त्ता ही प्रश्नों का निर्माण करता हैं, और साक्षात्कार से सउनका उत्तर लिखित शब्दों में अथवा यदि साक्षात्कारदाता मौखिक उत्तर देता हैं, तो साक्षात्कारकर्त्ता उन्हें लिखवा जाता है। इसे नियंत्रित साक्षात्कार भी कहते है।

(ख) **<u>अनौपचारिक साक्षात्कार</u>**– इसे अनियन्त्रित साक्षात्कार भी कहते हैं। इसमें साक्षात्कार कोई प्रश्नावली तैयारी नहीं करता है, बल्कि विक्रय से सम्बन्धित एक प्रश्न के बाद एक जुड़ते चले जाते है। इनमें दोनों को स्वतंत्रता रहती हैं।

3. **<u>सूचनादाताओं की संख्या के आधार पर वर्गीकरण</u>**–

(क) **<u>व्यक्तिगत साक्षात्कार</u>**– इस साक्षात्कार में एक समय में एक समय एक ही व्यक्ति से साक्षात्कार किया जाता हैं। साक्षात्कारकर्त्ता प्रश्न करता हैं, साक्षात्कारदाता उसे सप्रश्न का उत्तर देता हैं, दूसरे शब्दों में साक्षात्कार वार्तालाप के रूप में आमने–सामने होता हैं।

(ख) **<u>सामूहिक साक्षात्कार</u>**– इस साक्षात्कार में एक समय में एक से अधिक व्यक्तियों से साक्षात्कार किया जाता हैं। साक्षात्कारकर्त्ता बिना क्रम के भी प्रश्न पूछ सकता हैं, समूह के समस्त सदस्यों अथवा किसी व्यक्ति विशेष से भी साक्षात्कारकर्त्ता प्रश्न पूछने में स्वतंत्र होता हैं। इस प्रकार एक समय में एक अधिक व्यक्तियों से किए जाने वाले साक्षात्कार को सामूहिक साक्षात्कार कहते हैं।

4. **<u>अध्ययन पद्धति के आधार पर वर्गीकरण</u>**–

(क) **<u>अनिर्देशित साक्षात्कार</u>**– इस साक्षात्कार को अव्यवस्थित अथवा असंचालित साक्षात्कार भी कहते हैं। इसमें साक्षात्कारकर्त्ता गम्भीर समस्या रखता हैं, जिसका उत्तर सयाक्षात्कारदाता कहानी अथवा लम्बे विवरण रूप में देता हैं।

(ख) **<u>केन्द्रीय साक्षात्कार</u>**– इस साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्त्ता अपना ध्यान इन बात पर केन्द्रीत रखता हैं कि साक्षात्कारदाता पर प्रश्न, परिस्थिति एवं घटना का क्या प्रभाव पड़ा? साक्षात्कारकर्त्ता उसके प्रभाव का अध्ययन करता हैं।

(ग) **<u>पुनरावृत्ति साक्षात्कार</u>**– इसका प्रयोग समाज में परिवर्तनों के प्रभावों के अध्ययन हेतु किया जाता हैं। अतः यह बार–बार दोहराया जाता हैं।

6. **इतिहासशिक्षण में मूल्यांकन का अर्थ बताते हुए उसकी विशेषताएॅ एवं प्रमुख प्रविधियों को स्पष्ट कीजिए। Define the meaning of Evaluation its charectristics and explain in history teaching.**

उत्तर– शिक्षण प्रक्रिया में मूल्यांकन का एक विशिष्ट स्थान हैं। परम्परागत परीक्षा के रूप में आरम्भ में ही शिक्षण प्रक्रिया पर एकाधिकार बना रहा हैं, विद्यार्थियों की सफलता शिक्षकों के शिक्षण स्तर तथा अभिभावकों एवं जनसाधरण को विद्यार्थियों की प्रगति का एकमात्र मापदण्ड परीक्षा ही रही हैं, मूल्यांकन अब शिक्षण प्रक्रिया अभिन्न अंग बनकर अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बन गया हैं।

<u>मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)</u>– मूल्यांकन वह पद्धति हैं, जिसके द्वारा पूर्व–निर्धारित उद्धेश्यों, ध्येयों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा का निर्धारण करते हैं। मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया हें, जिसके द्वारा शिक्षण के मूल्यों तथा निर्दिष्ट उद्धेश्यों के मध्य तुलना की जाती हें। मूल्यांकन यह पद्धति हैं। जिसके द्वारा अर्जित मूल्यों की जॉच पूर्व निर्धारित उद्धेश्यों के प्रकाश में आती हैं।

<u>मूल्यांकन की परिभाषाएॅ (Definitions of Evaluation)</u>–

टार्गेसन एवं एडमस– " मूल्यांकन से अभिप्राय है किसी वस्तु या प्रक्रिया का मूल्य निर्धारित करना तथा मूल्यांकन का अभिप्राय हैं, किसी शिक्षण प्रक्रिया या अधिगम अनुभवों की उपयोगिता के सम्बन्ध्य में मूल्य प्रदाना।"

Targesson TT and Adoms- To evaluate is to ascertain the values of some process or thing. Thus Educational evaluation is the passing of judgement on the degree of worth whitener of some teaching process or learning experience."

ब्रेकफील्ड तथा मारडाक– "मूल्यांकन किसी सामाजिक सॉस्कृतिक अथवा वैज्ञानिक मानदण्ड के सन्दर्भ में किसी घटना को प्रतीक आवंटित करना हैं, जिससे उस घटना का महत्व अथवा मूल्य ज्ञात किया जा सके।"

Breakfield and Mardock- Evaluation is the assignment of symbol to a phenomenon in order to characteristics the worth or value of the pnenomenon with reference to some social, cultureal or scientific standard.

मूल्यांकन की विशेषताएँ (Characteristics of Evaluation)–

1. **विद्यार्थी केन्द्रीत (Student Centrered)**– उद्धेश्य विद्यार्थियों के व्यवहारगत् विशिष्ट परिवर्तनों के रूप में निर्धारित किए जाते हैं। जिनकी उपलब्धि की जॉच मूल्यांकन से की जाती हैं। अतः मूल्यांकन अन्ततः विद्यार्थी केन्द्रित हैं।

2. **विश्लेषणात्मक संश्लेषणात्मक (Analistical and Synthetical)**– मूल्यांकन में पहले निर्धारित उद्धेश्यों का विश्लेषण कर विशिष्टयों में विभाजित किया जाता हैं। विशिष्टियों के अनुकूल परिस्थितियों का उपकरणों से चुनाव कर उनकी जॉच की जाती हैं। जॉच के बाद एकत्रित साक्ष्यों का सारांशीकरण (संश्लेषण) किया जताा हैं। अतः मूल्यांकन विश्लेषणात्मक तथा संश्लेषणात्मक प्रक्रिया हैं।

3. **शिक्षण–प्रक्रिया का अभिन्न अंग (Main part at teaching process)**– शिक्षण–उद्धेश्य एवं शिक्षण–अधिगम स्थितियों से अंतः सम्बन्धित हो, शिक्षण–प्रक्रिया को प्रभावी बनवाता हैं।

4. **व्यापकता (Broadness)**–केवल ज्ञानात्मक ही नहीं वरन् अवबोध, ज्ञानोपयोग, अभिरूचि, अभिवृत्ति एवं कौशल सम्बन्धी समस्त उद्धेश्यों की वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों के रूप में होने वाली उपलब्ध्यिों की परख करने के कारण मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक हैं।

5. **मापन एवं मूल्य निर्धारण प्रक्रिया (Manorment and valuing process)**– मापन द्वारा विद्यार्थियों की ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक उपलब्धि की मात्रा अथवा स्तर, संख्या अथवा अंको में निर्धारित किया जाता हैं। तथा भावात्मक (जैसे अभिरूचि एवं अभिवृत्ति) पक्ष का गुणात्मक मूल्य निर्धारण किया जाता हैं।

6. **अनवरत प्रक्रिया (Continue process)**– मूल्यांकन का क्षेत्र व्यापक होने व शिक्षण प्रक्रिया का अंग होने के कारण यह शिक्षण के साथ अनवरत चलने वाली प्रक्रिया हैं।

6. **उद्धेश्य केन्द्रीत (Objective centrered)**– मूल्यांकन निर्धारित उद्धेश्यों की उपलब्धि की सीमा ज्ञात करने के लिए किया जाता हैं। अतः ये उद्धेश्य केन्द्रीत हैं।

7. **निदानात्मक (Diagnostic)**– मूल्यांकन द्वारा विद्यार्थियों के दुर्बल पक्षों का ज्ञान अर्थात् निदान होता हैं। जिसके आधार पर उन्हें दूर करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण आयोजित किया जाता हैं।

नवीन संकल्पना के के अनुसार– मूलयांकन शिक्षण–प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग तथा सतत् प्रक्रिया होने के कारण इतिहासशिक्षण में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इतिहासविषय की प्रकृति एवं इसके शिक्षण उद्धेश्यों के

भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष प्रमुख होने के कारण इस विषय के लिए मूल्यांकन का महत्व और भी अधिक हो जाता हैं।

मूल्यांकन के उपकरण एवं प्रविधियॉ (Teachniques of Evaluation)– मूल्यांकन की प्रमुख प्रविधियॉ निम्न प्रकार की हैं–

(अ) भावात्मक पक्ष का मूलयांकन– नागरिक शास्त्र–शिक्षण में विद्यार्थियों के भावात्मक सपक्ष के वांछित व्यवहारगत परिवर्तनों सम्बन्धी उद्धेश्यों का मूल्यांकन महत्वपूर्ण हैं। इसके लिए निम्नांकित प्रविधियॉ एवं उपकरण उपयुक्त रहते हैं।
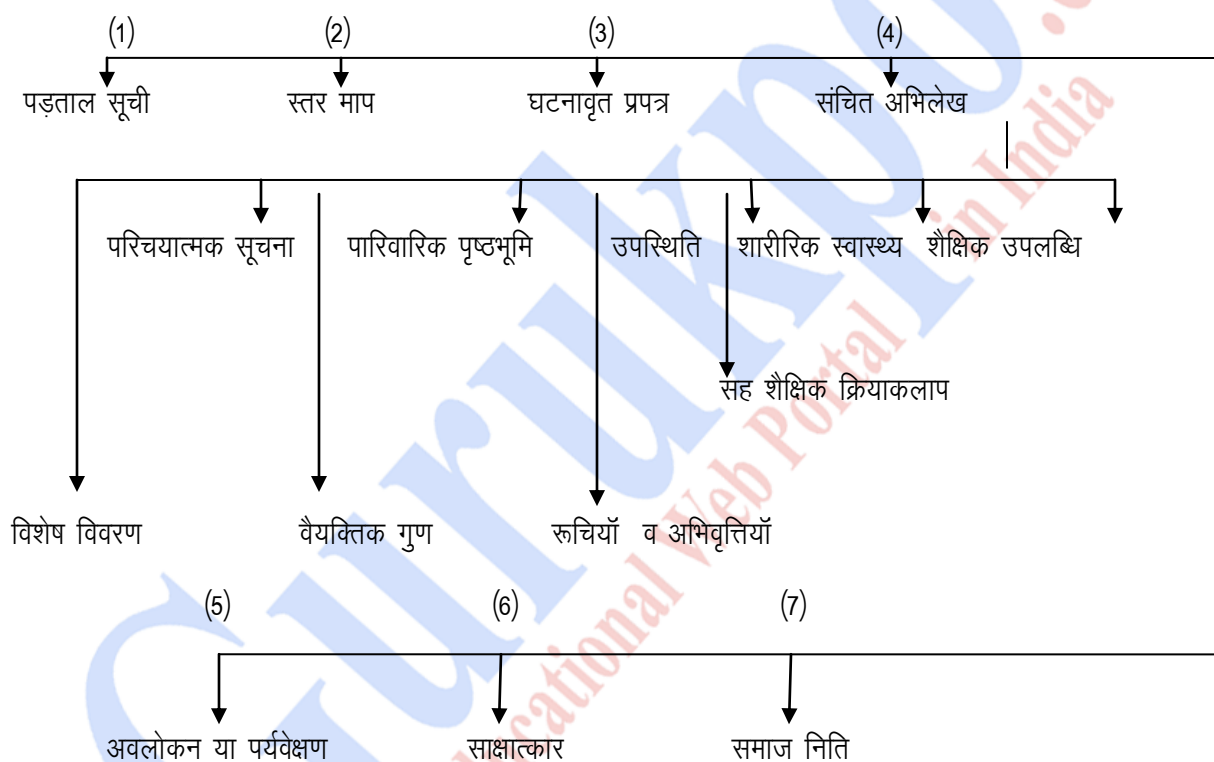
(ब) मौखिक परीक्षा (Oral Test)– यह परम्परागत परीक्षा प्रणाली की मौखिक विधि हैं। छोटी कक्षा में जहॉ विद्यार्थियों की भाषागत योग्यता अविकसित होती हैं। यह विधि उपयुक्त होती हैं, इस विधि का प्रयोग मौखिक प्रश्नोत्तरों को वस्तुनिष्ठ बनाकर करना उपयुक्त रहता हैं। इतिहासमें कक्षा 1 से 3 तक के विद्यार्थियों में शिष्टाचार एवं अन्य सामान्य नागरिक ज्ञान की मौखिक जॉच पड़ताल सूची या स्तर मान की सहायता से की जानी चाहिए।

(स) प्रायोगिक परीक्षा (Practical Test)– इनका प्रयोग बहुधा कौशल की जॉच करने हेतु किया जाता हें। इतिहासमें मानचित्र, रेखाचित्र, ग्राफ आदि उपकरणों के निर्माण एवं उनके अध्ययन का कौशल,

विचार–विमर्श के समय चिन्तन तक्र तथा निर्णय करने के कौशल आदि की जॉच सम्बन्धित प्रयोगिक कार्य देकर की जा सकती हैं।

(द) **<u>लिखित परीक्षा (Writen Test)</u>**– इनमें विद्यार्थियों को लिखित रूप में प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। ये प्रश्न शिक्षक द्वारा बनाए जाते हैं, जो अग्रांकित प्रकार के होते हैं–
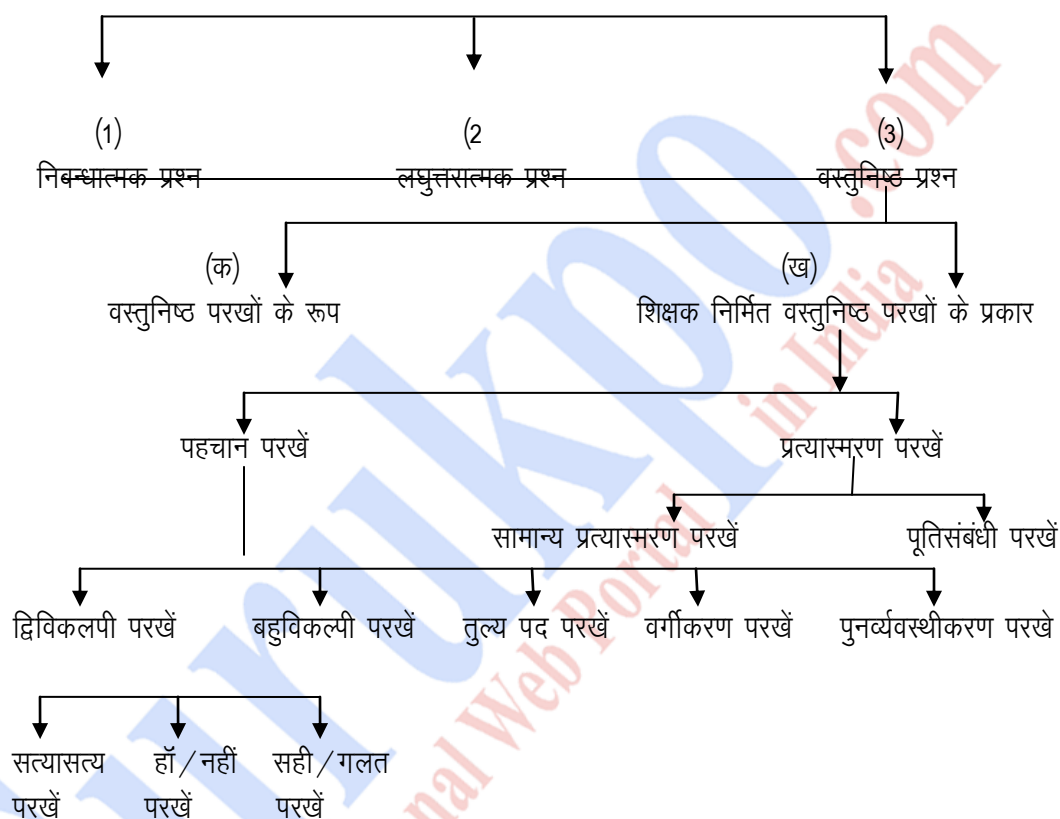
7. एक अच्छे मूल्यांकन की क्या विशेषताऍ हैं?
What is characteristic of a good test and evaluation?

उत्तर– इतिहासमें प्रचलित मूल्यांकन विद्या के रूप में परीक्षाओं की सीमाओं की समीक्षा करने के उपरान्त जाने कि एक अच्छे परीक्षण प्रश्न पत्र में मापक की दृष्टि से निम्न विशेषताऍ होनी चाहिए–

1. **<u>वस्तुनिष्ठता (Objectivity)</u>**– यदि अंकन कार्य में व्यक्तिगत पसन्द रूझानों या वैषधिकताओं का प्रभाव पड़ता हैं तो परिणाम सहीं नहीं हो सकते, अतः परीक्षण ऐसा हो कि एक से अधिक परीक्षक उत्तर–पुस्तिका की जॉच करे तो भी परिणाम लगभग समान ही रहे।
2. **<u>विश्वसनीयता (Reliability)</u>**– यदि किसी परीक्षण के आधार पर किसी छात्र या समान समूह की परीक्षा एक से अधिक बार ली जाती हें और परिणाम समानान्तर या लगभग एक से रहते हैं तो परीक्षण विश्वसनीय कहलाता हैं। अच्छे परीक्षण विश्सवनीय होते हैं।

3. **<u>वैधता (Validity)</u>**– वैधता से अभिप्राय हैं– परीक्षा जिस उद्धेश्य को लेकर जिस विषयवस्तु की जॉच करने हेतु बनाई गई हैं, उसकी जॉच करना भी हैं या नहीं। एक अच्छा परीक्षण वह हैं, जो विषय की उपलब्धि या उन्हीं योग्यताओं वैद्य जॉच करने में सक्षम हो, जिनके लिए उनका निर्माण किया जाता हैं।
4. **<u>व्यावहारिकता (Practicability)</u>**–परीक्षण ऐसे हो जिन्हें शिक्षक और छात्र उपयोग में ला सकें जिनका निर्माण सफलता से किया जा सके जो अधिक जटिल परिस्थितियॉ उत्पन्न नहीं करते हो, जिन्हें आसानी से प्रशासित किया जा सके, ॲकन की दृष्टि से जो सरल हो लचीले हो।
5. **<u>मितव्ययता (Economical)</u>**– परीक्षण अधिक खर्चीले न हो। इनके निर्माण प्रशासन, अंकन, परिणाम–विश्लेषण का कार्य मितव्ययता पूर्ण हो। इनमें प्रयोग आने वाली सामग्री ऐसी हो जो सहज ही उपलब्ध हो सके और सस्ती भी हो।
6. **<u>व्यापकता एवं पर्याप्तता (Broad based and appropriate)</u>**–– परीक्षण समस्तम पाठ्यक्रम का प्रतिनिधित्व करने वाला। इसमें पदों की पर्याप्त संख्या हैं। यह सभी शैक्षिक और शिक्षण और शिक्षण प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करने वाला हो।
7. **<u>विभेदकता (Differentiation and clalssification)</u>**– परीक्षण के परिणाम छात्रों का उनकी योग्यता के आधार पर अन्तर करने एवं वर्गीकरण करने में सक्षम हो।

उक्त विशेषताओं के साथ–साथ यह भी आवश्यक हैं कि मूल्यांकन हेतु कार्य के प्रति नीतिगत निर्णय लेते हुए नवाचारों को बढ़ावा दिया जाए।

8. **नील पत्र का अर्थ बताते हुए नील पत्र निर्माण के चरण तथा इतिहासप्रश्न पत्र निर्माण प्रक्रिया का वर्णन कीजिए?**
Define Blue Print. Write down steps of preparing Blue Print and procedure of preparing history question paper?

उत्तर– जिस प्रकार किसी भवन के निर्माण से पूर्व उसे भवन का मानचित्र बनाकर ब्लू–प्रिंट में उतारा जाता हैं। उसी प्रकार परीक्षण प्रश्न पत्र बनाते समय प्रश्न पत्र का नील पत्र बनाया जाता हें। वस्तुतः यह प्रश्न पत्र निर्माण की योजना या उसका आधार पत्र होता हें, जिसमें निम्न पक्ष एक साथ दर्शाए जाते हैं।

1. परीक्षित किए जाने वाले उद्धेश्य संकेत (objectives)
2. परीक्षित की जाने वाली इकाइयॉ या उप इकाइयॉ (Content)
3. परीक्षण हेतु निर्मित प्रश्न या पद (questions or items)

इसे दिशा सूचक चार्ट भी कहते हैं क्योंकि उक्त तीनों पक्षों को 'ब्लू–प्रिंट तीन दिशाओं में दर्शाते हुए प्रश्न–पत्र निर्माण की योजना दर्शाता हैं।

नील पत्र निर्माण के चरण
(Steps of preparing Blue Print)

1. **प्रथम चरण–**

विषय वस्तु के आधार पर अंक भार

क्रमांक	विषय वस्तु	ॲक	प्रतिशत
1.	मुगल वंश	4	16%

2.	बाबर	5	20%
3.	हुमायूँ	7	28%
4.	अकबर	4	16%
5.	जहाँगीर	5	20%
	योग	**25**	**100%**

2. **प्रथम चरण–**

(1) उद्धेश्यों के आधार पर अंक भार

क्रमांक	उद्धेश्य	अंक	प्रतिशत
1.	ज्ञानात्मक	10	40%
2.	अवबोधात्मक	8	32%
3.	ज्ञानोप्रयोग	5	20%
4.	कौशलात्मक	2	8%
	योग	**25**	**100%**

1. परीक्षण की जाने वाली इकाइयों (या विषय वस्तु को) को भारत प्रपत्र करना (To provide weightage to the units to be tasted) इस सस्तर पर परीक्षण के लिए निर्धारित पूर्णांकों को विषय वस्तु की महत्ता के आधार शिक्षक अपने विवेक से चयनित इकाइयों/उप इकाइयों में वितरित कर देता हैं।
2. उद्धेश्यों को अंक भार प्रदत्त करना– द्वितीय स्तर पर परीक्षण के लिए निर्धारित उद्धेश्यों में पूर्णांक के अंको को ऑवटित करके उसका प्रतिशत ज्ञात करते हें। ॲको और प्रतिशत को उद्धेश्यानुसार अंक भार आवंटित करने की प्रक्रिया ही उद्धेश्यानुसार भार प्रदत्त करना कहलाती हैं।
3. प्रश्नों या परीक्षण पदो के आधार पर भार प्रदत्त करना– इस सतर पर प्रश्नों के प्रकारों के आधार पर उन पदों का चयन करना होता हैं, जो परीक्षक, अवधि अंक, जो विषय–वस्तु और उद्धेश्यों के बीच में न हो।

प्रश्नों के आधार पर अंक भार

क्रमांक	प्रश्नों के प्रकार	प्रश्नों की सारणी	अंक	प्रतिशत
1.	निबन्धात्मक प्रश्न	1	4	16%
2.	लघुत्तरात्मक प्रश्न	4	8	32%
3.	अति लघुत्तरात्मक प्रश्न	4	4	16%
4	वस्तुनिष्ठ	9	9	36%

	योग	18	25	100%

नील पत्र का प्रारूप
परीक्षण–कक्षा 9 (माध्यमिक)
विषय– इतिहास
नील पत्र (Blue Print)

समय – 40 मिनट पूर्णांक – 25
इकाई – मुगल वंश

क्र. सं	विषयवस्तु उद्धेश्य प्रश्नों के प्रकार	ज्ञानात्मक				अवबोधात्मक				ज्ञानोप्रयोग				कौशलात्मक				योग	%
		नि.	लघू	अति लघू	वस्तु	नि.	लघू	अति लघू	वस्तु	नि.	लघू	अति लघू	वस्तु	नि.	लघू	अति लघू	वस्तु		
1.	मुगल वंश				1(1)								1 (1)					4 (3)	16%
2.	बाबर				1(1)			2(2)	1 (1)				1 (1)					5 (5)	20%
3.	हुमायूॅ	4(1)			1(1)				1 (1)				1 (1)					7 (4)	28%
4.	अकबर		2(1)				2(1)											4 (2)	16%
5.	जहॉगीर				1(1)		2(1)				2(1)					2 (2)		5 (4)	20%
	अंकों का भार एवं प्रश्नों का योग	4(1)	2(1)	.	4(4)		4(2)	2(2)	2 (2)		2(1)		3(3)						
		10(6)				8(6)				5(4)				2 (2)				25(18)	
	प्रतिशत	40%				32:%				20%				8%					100%

नोट– (कोष्ठक के अन्दर प्रश्नों की संख्या और कोष्ठक के बाहर अंकों का भार निश्चित किया गया हैं।)

<u>चतुर्थ पद हैं नील पत्र का निर्माण</u>– इस स्तर पर विषय वस्तु प्रश्नों के प्रकार एवं उद्धेश्यों को दिए गये ॲक भार का समायोजन इस प्रकार से किया जाता हैं कि उक्त तीनों का योग उन्हें ऑवटित ॲकों से अधिक न हो नील पत्र प्रारूप को त्रिदिशा सूचक चित्र भी कहा जाता हैं क्योंकि इसमें उद्धेश्यों विषय–वस्तु और प्रश्नों को तीन दिशाओं में दर्शाया जाता हैं और इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता हैं कि उक्त तीनों का योग पृथक–पृथक तो आवंटितम अंक भार के समान हो ही, पूर्णांक भी दोनों ओर से समान रहे और प्रतिशत भी दोनों ओर से 100ः की समान संख्या आये।

Key Terms		
1.	सामाजिक अध्ययन **Social Studies**	सामाजिक अध्ययन में समाज से सम्बन्धित सभी विषयों, क्रियाओं, मनुष्य को भौतिक एवं सामाजिक तथा विश्व की सम्पूर्ण मानव जाति का अध्ययन किया जाता है।
2.	लक्ष्य एवं उद्देश्य **Aim & Objective**	लक्ष्य पूर्व निर्धारित साध्य होते है। उद्देश्य विद्यालय द्वारा पथ–प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।
3.	सह–सम्बन्ध **Correlation**	स्ह–सम्बन्ध का अर्थ है विभिन्न विषयों का इस प्रकार से शिक्षण करना कि उनसे प्राप्त ज्ञान में सम्बन्ध हो।
4.	पाठ्यक्रम **Curriculum**	पाठ्यक्रम का अर्थ है– दौड़ का मैदान, जिसकी सीमाओं में दौड़कर छात्र शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करता है।
5.	पाठ वस्तु **Syllabus**	पाठ्यवस्तु पूर्ण शैक्षिक सत्र में विभिन्न विषयों में शिक्षक द्वारा छात्रों को दिए जाने वाले ज्ञान की मात्रा के विषय में निश्चित जानकारी प्रस्तुत करता है।
6.	पाठ योजना **Lesson Plan**	पाठ योजना का अर्थ है– पाठ को आयोजित करना।
7.	इकाई योजना **Unit Plan**	इकाई शब्द को शिक्षा जगत में लाने का श्रेय हरबर्ट को है। इकाई योजना का अर्थ है– इकाई किसी समस्या या खोजना से समबन्धित सीखने वाली क्रियाओं की समानता या एकता में बताती है।
8.	शिक्षण सूत्र **Teaching Maxims**	शिक्षण की प्रक्रिया में व्याप्त जटिलताओं को दूर करने के लिए शिक्षा–शास्त्रियों ने समय–समय पर अनेक उक्तियों, तथ्यों को खोजा जिनसे शिक्षण कार्य अधिक सरल तथा रोचक बन जाता है।
9.	शिक्षण विधि **Teaching Method**	शिक्षक द्वारा निर्देशित ऐसी क्रियाएँ जिनके परिणामस्वरूप छात्र कुछ सीखते है इस प्रकार शिक्षण विधि अनेक क्रियाओं का पुंज है।
10.	व्याख्यान विधि **Lecture Method**	व्याख्यान शिक्षण शास्त्रीय विधि है जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है।
11.	अभिक्रमित अनुदेशन **Programmed Instruction**	अभिक्रमित का तात्पर्य है सुनियोजित करना, अर्थात् एक सुनियोजित पाठ्य–वस्तु को प्रस्तुत करके बालकों को अध्ययन कार्य में संलग्न करके, अध्यापक उनका निरीक्षण और अनुदेशन करता है।
12.	प्रयोजना विधि **Project Method**	इनके जन्मदाता डब्ल्यू. एच. किलपैट्रिक है, इनके अनुसार– ''योजना वह सहृय सप्रयोजन कार्य है, जो सम्पूर्ण शक्ति के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाये''।
13.	कहानी विधि	कहानी विधि में विषय से सम्बन्धित कहानी छात्रों को सुनाई जाती है। यह विधि

	Story Method	उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त है।
14.	समाजीकृत विधि Sociomatrio Method	इस विधि के द्वारा बालक के समाजीकरण की नींव रखी जाती है। अर्थात् बालक में सामाजिक क्षमताओं का विकास करना है।
15.	नील पत्र Blue Print	जिस प्रकार किसी भवन के निर्माण से पूर्व भवन का मानचित्र बनाकर ब्ल्यू–प्रिण्ट में उतारा जाता है, उसी प्रकार परीक्षण प्रश्न पत्र बनवाते समय प्रश्न पत्र का नील पत्र बनाया जाता है।
16.	मूल्यांकन Evaluation	मूल्यांकन वह पद्धति है। जिसके द्वारा पूर्व निर्धारित उद्धेश्यों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की मात्रा का निर्धारण किया जाता है।
17.	सामुदायिक स्त्रोत Community Resources	सामुदायिक साधनों से तात्पर्य सामुदायिक जीवन से सम्बन्धित सभी तत्वों से है। ये तत्व भौगोलिक, ऐतिहासिक सांस्कृतिक आर्थिक आदि है।
18.	मुद्रित साधन Blue Print	मुद्रित साधन वे साधन होते है, जिनको मुद्रित किया जाता है। जैसे– पाठ्य पुस्तकें आदि।
19.	अमुद्रित साधन Non-Blue Print	अमुद्रित साधन वे है, जिनको किसी मुद्रणालय से मुद्रित नहीं कराया जाता, वरन् हाथ से तैयार करवाया जाता है।

Bibliography

- के.डी., घोष : इतिहास ओयूपी 1951 की रचनात्मक शिक्षण
- हिल, सी.पी. : इतिहास के अध्यापन पर सुझाव
- एनसीईआरटी: इतिहास के शिक्षकों की पुस्तिका
- चौधरी, के पी: भारत में इतिहास का प्रभावी शिक्षण, एनसीईआरटी.
- बी.डी. घाटे: इतिहास शिक्षण, हरियाणा ग्रंथ Akadami, चंडीगढ़.